श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर की

वार्षिक स्मारिका

मणिभद्र

44वाँ पुष्प, वि. सं. 2059, सन् 2002

❖ दि. 07-09-2002 ❖ भादवा बद अमावस शनिवार ❖ महावीर जन्म वांचना दिवस

सम्पादक मण्डल

सम्पादन

मोतीलाल भडकतिया

सदस्य

❖ राजेन्द्र कुमार लूनावत ❖ राकेश मोहनोत ❖ महेन्द्र कुमार दोसी

प्रकाशक :

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302 003

फोन : 563260/569494

मुद्रक :

खुशबु ऑफसेट प्रिन्टर्स

41, एकता मार्ग, घाटगेट रोड, आदर्श नगर, जयपुर

फोन : 609038 मोबाईल : 98290 54038

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर की

वार्षिक स्मारिका

मणिभद्र

44वाँ पुष्प, वि. सं. 2059, सन् 2002

दि. 07-09-2002 भादवा वद अमावस शनिवार महावीर जन्म वांचना दिवस

सम्पादक मण्डल

सम्पादन

मोतीलाल भडकतिया

सदस्य

राजेन्द्र कुमार लूनावत   राकेश मोहनोत   महेन्द्र कुमार दोसी

प्रकाशक :

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302 003

फोन : 563260/569494

मुद्रक :

खुशबु ऑफसेट प्रिन्टर्स

41, एकता मार्ग, घाटगेट रोड, आदर्श नगर, जयपुर

फोन : 609038 मोबाईल : 98290 54038

सम्पादकीय

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण गतिविधि वार्षिक स्मारिका "माणिभद्र" का प्रकाशन है। संघ के लिए यह आत्मसंतोष का विषय है कि पिछले 43 वर्षो से निरन्तर स्मारिका का प्रकाशन हो रहा है और इसी के अन्तर्गत इस वर्ष के 44वें अंक वर्ष 2002 की प्रति श्रीसंघ की सेवा में प्रस्तुत है।

यह वर्ष संघ के लिए हर्ष एवं विशाद दोनों ही तरह का रहा है। विगत वर्ष में यहां पर गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय रत्नाकरसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा, आचार्य श्रीमद् विजय सुशीलसूरीश्वर जी म.सा., आ. श्री जिनोत्तमसूरीश्वरजी म.सा. महान सन्त मुनिवर्य श्री जम्बू विजय जी म.सा., अचलगच्छ आमनायवर्ती मुनिवर्य श्री कमलप्रभसागरजी आदि ठाणा का शुभागमन बरखेडा तीर्थ एवं जयपुर संघ में हुआ।

वहीं दूसरी ओर इस वर्ष जयपुर श्रीसंघ पर आशीर्वाद प्रदाता, यहीं पर चिर-स्मरणीय चातुर्मास करने वाले दो महान आचार्य, शासन शिरोमणि गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा. एवं कच्छ बागड देशोद्धारक, अध्यात्म योगी परमात्म भक्ति रसिक आचार्य श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. अरिहंत शरणम् को प्राप्त हुए। दोनों का ही संघ पर पूर्ण वरद हस्त था और जब भी किसी भी कार्य के लिए उनकी सेवा में उपस्थित हुए उन्होंने संघ को आशीर्वाद, मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान की। इसी प्रकार आ. श्री. रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर आचार्य श्रीमद्विजय महोदयसागर सूरीश्वर जी म.सा. एवं साध्वी श्री सुवर्णप्रभाश्री जी म.सा. (बा महाराज) (आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. की सांसारिक धर्मपत्नी) भी काल धर्म को प्राप्त हुए। माणिभद्र स्मारिका का यह अंक इन्हीं महान आत्माओं के श्री चरणों में समर्पित करते हुए शत्-शत् वन्दन एवं हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित है।

आचार्य श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के प्रथम पट्टपर आचार्य श्रीमद्विजय कलाप्रभसूरीश्वर जी म.सा. के गच्छनायक का गुरुतर दायित्व सम्भालने पर हार्दिक बहुमान एवं बधाई।

सभी गुरु भगवन्तों के छाया चित्र इस अंक में प्रकाशित किए गए हैं।

पूर्ववत् लेखकों के विचार अपने हैं एवं सत्यासत्य का निर्णय पाठकों को ही करना है। स्पष्टीकरण के लिए उनके पतों पर पत्र व्यवहार किया जा सकता है।

पूरी सावधानी रखने पर भी प्रूफ शोधन में अशुद्धियां रह जाना स्वाभाविक है जिसके लिए सम्पादक मण्डल अग्रिम रूप से क्षमा प्रार्थी है।

आशा है कि यह अंक भी पूर्ववत् पठनीय, संग्रहणीय एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

सम्पादक मण्डल

सम्पादकीय

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर की गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण गतिविधि वार्षिक स्मारिका "माणिभद्र" का प्रकाशन है। संघ के लिए यह आत्मसंतोष का विषय है कि पिछले 43 वर्षों से निरन्तर स्मारिका का प्रकाशन हो रहा है और इसी के अन्तर्गत इस वर्ष के 44वें अंक वर्ष 2002 की प्रति श्रीसंघ की सेवा में प्रस्तुत है।

यह वर्ष संघ के लिए हर्ष एवं विशाद दोनों ही तरह का रहा है। विगत वर्ष में यहां पर गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय रत्नाकरसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा, आचार्य श्रीमद् विजय सुशीलसूरीश्वर जी म.सा., आ. श्री जिनोत्तमसूरीश्वरजी म.सा. महान सन्त मुनिवर्य श्री जम्बू विजय जी म.सा., अचलगच्छ आमनायवर्ती मुनिवर्य श्री कमलप्रभसागरजी आदि ठाणा का शुभागमन बरखेडा तीर्थ एवं जयपुर संघ में हुआ।

वहीं दूसरी ओर इस वर्ष जयपुर श्रीसंघ पर आशीर्वाद प्रदाता, यहीं पर चिर-स्मरणीय चातुर्मास करने वाले दो महान आचार्य, शासन शिरोमणि गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा. एवं कच्छ बागड देशोद्धारक, अध्यात्म योगी परमात्म भक्ति रसिक आचार्य श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. अरिहंत शरणम् को प्राप्त हुए। दोनों का ही संघ पर पूर्ण वरद हस्त था और जब भी किसी भी कार्य के लिए उनकी सेवा में उपस्थित हुए उन्होंने संघ को आशीर्वाद, मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान की। इसी प्रकार आ. श्री. रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर आचार्य श्रीमद्विजय महोदयसागर सूरीश्वर जी म.सा. एवं साध्वी श्री सुवर्णप्रभाश्री जी म.सा. (बा महाराज) (आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. की सांसारिक धर्मपत्नी) भी काल धर्म को प्राप्त हुए। माणिभद्र स्मारिका का यह अंक इन्हीं महान आत्माओं के श्री चरणों में समर्पित करते हुए शत्-शत् वन्दन एवं हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित है।

आचार्य श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के प्रथम पट्टपर आचार्य श्रीमद्विजय कलाप्रभसूरीश्वर जी म.सा. के गच्छनायक का गुरुतर दायित्व सम्भालने पर हार्दिक बहुमान एवं बधाई।

सभी गुरु भगवन्तों के छाया चित्र इस अंक में प्रकाशित किए गए हैं।

पूर्ववत् लेखकों के विचार अपने हैं एवं सत्यासत्य का निर्णय पाठकों को ही करना है। स्पष्टीकरण के लिए उनके पतों पर पत्र व्यवहार किया जा सकता है।

पूरी सावधानी रखने पर भी प्रूफ शोधन में अशुद्धियां रह जाना स्वाभाविक है जिसके लिए सम्पादक मण्डल अग्रिम रूप से क्षमा प्रार्थी है।

आशा है कि यह अंक भी पूर्ववत् पठनीय, संग्रहणीय एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

सम्पादक मण्डल

15. धर्म	मुनिवर्य श्री मणिरत्नसागर जी म.	43
16. मूर्ति : श्रेष्ठ आलंबन...	गणिवर्य श्री पूर्णचन्द्रविजय जी म.	45
17. श्वासों का क्या ठिकाना?	महत्तरा सा. सुमंगला श्री जी म.	52
18. निद्रापंचक	सा. दिनमणि श्री जी म.	54
19. आचार विचार : नारी का	सा. प्रफुल्लप्रभा श्री जी म.	63
20. शास्त्र पोथी बेचन चले	सा. दिव्यप्रतिमा श्री जी म.	64
21. प्रथम माता-पिता के पूजक बनें	सा. श्री दिव्यचेतना श्री जी म.	67
22. कर्म की विचित्रता विषमता और विविधता	सा. दिव्यरेखा श्री जी म.	72
23. जब से जागो तभी से सवेरा	सा. दिव्यरत्ना श्री जी म.	74
24. है कौन? (कविता)	श्रीमती शांति देवी लोढा	75
25. आलोचना (क्षमापना)	श्री राजमल सिंघी	76
26. अनुमोदना	श्री धनरूपमल नागौरी	82
27. श्री सुमतिनाथ जिनालय में वर्ष भर अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री भेंटकर्ताओं की नामावली		86
28. जैन धर्म और डाक टिकिट	श्री महेन्द्र कुमार दोसी	87
29. जैन तीर्थ नांदिया	श्रीमती रानी भंडारी	91
30. डा. भागचन्दजी छाजेड को श्रद्धांजलि	सम्पादक मंडल	92
31. श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ	श्रीमती चेतना शाह	93
32. जैन धर्म में तीर्थंकर मान्यता	श्रीमती प्रमिला देवी भाडियां	97
33. श्री महावीर जी तीर्थ	तीर्थ रक्षा समिति	99
34. श्री आत्मानन्द जैन सेवक मंडल (वा. प्रतिवेदन)	श्री ललित दुगड, महामंत्री	101
35. श्री सुमति जिन श्राविका संघ (वा. प्रतिवेदन)	श्रीमती मीना कटारिया, महामंत्री	103
36. स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर	सुश्री सरोज कोचर, शिविर संयोजिका	105
37. चित्रावली		108
38. शोकाभिव्यक्ति	श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ	114
39. श्री वर्द्धमान आयंबिलशाला की स्थायी मितियां	श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ	115
40. महासमिति के सदस्यगण	श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ	116
41. श्री जैन श्वे. तपा. संघ का वार्षिक प्रतिवेदन	श्री मोतीलाल भड़कतिया, संघ मंत्री	117
42. आय-व्यय विवरण एवं चिट्ठा 2001-2002		130
43. अंकेक्षक का प्रमाण पत्र		136
44. विज्ञापन		

15. धर्म	मुनिवर्य श्री मणिरत्नसागर जी म.	43
16. मूर्ति : श्रेष्ठ आलंबन...	गणिवर्य श्री पूर्णचन्द्रविजय जी म.	45
17. श्वासों का क्या ठिकाना?	महत्तरा सा. सुमंगला श्री जी म.	52
18. निद्रापंचक	सा. दिनमणि श्री जी म.	54
19. आचार विचार : नारी का	सा. प्रफुल्लप्रभा श्री जी म.	63
20. शास्त्र पोथी बेचन चले	सा. दिव्यप्रतिमा श्री जी म.	64
21. प्रथम माता-पिता के पूजक बनें	सा. श्री दिव्यचेतना श्री जी म.	67
22. कर्म की विचित्रता विषमता और विविधता	सा. दिव्यरेखा श्री जी म.	72
23. जब से जागो तभी से सवेरा	सा. दिव्यरत्ना श्री जी म.	74
24. है कौन? (कविता)	श्रीमती शांति देवी लोढा	75
25. आलोचना (क्षमापना)	श्री राजमल सिंघी	76
26. अनुमोदना	श्री धनरूपमल नागौरी	82
27. श्री सुमतिनाथ जिनालय में वर्ष भर अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री भेंटकर्ताओं की नामावली		86
28. जैन धर्म और डाक टिकिट	श्री महेन्द्र कुमार दोसी	87
29. जैन तीर्थ नांदिया	श्रीमती रानी भंडारी	91
30. डा. भागचन्दजी छाजेड को श्रद्धांजलि	सम्पादक मंडल	92
31. श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ	श्रीमती चेतना शाह	93
32. जैन धर्म में तीर्थंकर मान्यता	श्रीमती प्रमिला देवी भाडियां	97
33. श्री महावीर जी तीर्थ	तीर्थ रक्षा समिति	99
34. श्री आत्मानन्द जैन सेवक मंडल (वा. प्रतिवेदन)	श्री ललित दुगड, महामंत्री	101
35. श्री सुमति जिन श्राविका संघ (वा. प्रतिवेदन)	श्रीमती मीना कटारिया, महामंत्री	103
36. स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर	सुश्री सरोज कोचर, शिविर संयोजिका	105
37. चित्रावली		108
38. शोकाभिव्यक्ति	श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ	114
39. श्री वर्द्धमान आयंबिलशाला की स्थायी मितियां	श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ	115
40. महासमिति के सदस्यगण	श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ	116
41. श्री जैन श्वे. तपा. संघ का वार्षिक प्रतिवेदन	श्री मोतीलाल भड़कतिया, संघ मंत्री	117
42. आय-व्यय विवरण एवं चिट्ठा 2001-2002		130
43. अंकेक्षक का प्रमाण पत्र		136
44. विज्ञापन		

श्री ऋषभदेव भगवान का प्राचीन तीर्थ

ग्राम बरखेड़ा (जिला जयपुर-राजस्थान) की यात्रार्थ पधारिये

इस श्रीसंघ द्वारा संचालित श्री ऋषभदेव भगवान का प्राचीन तीर्थ जयपुर से 30 कि.मी.दूर टोंक रोड़ पर (श्री पद्मप्रभुजी से 7 कि.मी. एवं शिवदासपुरा से 2 कि.मी.) स्थित है। भूगर्भ से निकली हुई लगभग सात सौ वर्षीय मूलनायक भगवान की भव्य मनोरम प्राचीन प्रतिमाजी विराजित हैं। किंवदन्ती के अनुसार लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व जिनालय का निर्माण हुआ था।

सुरम्य सरोवर के किनारे स्थित जिनालय का पुनः आमूलचूल निर्माण कराकर विशाल शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण कार्य दिसम्बर 1995 में प्रारम्भ हुआ और लगभग कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है। एक ईट का नकरा 3100/- रु. है। दानदाताओं के नाम शिलालेख पर अंकित किये जाते हैं।

यहां पर लघु पालीताणा के समकक्ष तीर्थ रूप देने हेतु तलेटी एवं रायल पगल्या के चरण भी स्थापित हो गए हैं। अक्षय तृतीया पर वर्षीतप के पारणे भी यहां प्रारम्भ हो गए हैं।

यहाँ पर आवास, कायमी भोजनशाला आदि सभी प्रकार की उत्तम सुविधाएं उपलब्ध हैं। भोजनशाला में एक समय की कायमी मिति का नकरा 2100/- रु. तथा एक फोटो का नकरा 5100/- रु. निर्धारित है। दानदाताओं के नाम बोर्ड पर अंकित किये जाते हैं।

वर्तमान में जीर्णोद्धार में एक मुश्त योगदान, एक ईंट का नकरा 3100/- रु. भोजनशाला में एक फोटू 5100/- रु. एक समय की कायमी मिति 2100/- रु. तथा आयंबिल शाला में 1100/- रु. योगदान की योजनाएं ही प्रभावी हैं। उपरोक्त के अतिरिक्त और कोई योजना नहीं है। इन योजनाओं में जयपुर अथवा बरखेडा पेढी पर रुपया जमाकर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। रसीद के आधार पर ही शिलालेख/बोर्ड पर नाम लिखे जाते हैं।

अतः सभी धर्मप्रेमी बन्धुओं से सादर निवेदन है कि ऐसे भव्य एवं प्राचीन तीर्थ की यात्रार्थ अवश्य पधारिये।

बरखेड़ा तीर्थोद्धारिका
सा. सुमंगला श्री जी म.

वहीवट, संचालन एवं सम्पर्क सूत्र :

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालों का रास्ता,
जोहरी बाजार, जयपुर-302003 फोन : 563260/569494
ग्राम बरखेडा-303903, पो. शिवदासपुरा, जिला-जयपुर.
फोन : 95-1429-7407, 01429-7407

श्री ऋषभदेव भगवान का प्राचीन तीर्थ

ग्राम बरखेड़ा (जिला जयपुर-राजस्थान) की यात्रार्थ पधारिये

इस श्रीसंघ द्वारा संचालित श्री ऋषभदेव भगवान का प्राचीन तीर्थ जयपुर से 30 कि.मी. दूर टोंक रोड़ पर (श्री पद्मप्रभुजी से 7 कि.मी. एवं शिवदासपुरा से 2 कि.मी.) स्थित है। भूगर्भ से निकली हुई लगभग सात सौ वर्षीय मूलनायक भगवान की भव्य मनोरम प्राचीन प्रतिमाजी विराजित हैं। किंवदन्ती के अनुसार लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व जिनालय का निर्माण हुआ था।

सुरम्य सरोवर के किनारे स्थित जिनालय का पुनः आमूलचूल निर्माण कराकर विशाल शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण कार्य दिसम्बर 1995 में प्रारम्भ हुआ और लगभग कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है। एक ईट का नकरा 3100/- रु. है। दानदाताओं के नाम शिलालेख पर अंकित किये जाते हैं।

यहां पर लघु पालीताणा के समकक्ष तीर्थ रूप देने हेतु तलेटी एवं रायल पगल्या के चरण भी स्थापित हो गए हैं। अक्षय तृतीया पर वर्षीतप के पारणे भी यहां प्रारम्भ हो गए हैं।

यहॉ पर आवास, कायमी भोजनशाला आदि सभी प्रकार की उत्तम सुविधाएं उपलब्ध हैं। भोजनशाला में एक समय की कायमी मिति का नकरा 2100/- रु. तथा एक फोटो का नकरा 5100/- रु. निर्धारित है। दानदाताओं के नाम बोर्ड पर अंकित किये जाते हैं।

वर्तमान में जीर्णोद्धार में एक मुश्त योगदान, एक ईंट का नकरा 3100/- रु. भोजनशाला में एक फोटू 5100/- रु. एक समय की कायमी मिति 2100/- रु. तथा आयंबिल शाला में 1100/- रु. योगदान की योजनाएं ही प्रभावी हैं। उपरोक्त के अतिरिक्त और कोई योजना नहीं है। इन योजनाओं में जयपुर अथवा बरखेडा पेढी पर रुपया जमाकर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। रसीद के आधार पर ही शिलालेख/बोर्ड पर नाम लिखे जाते हैं।

अतः सभी धर्मप्रेमी बन्धुओं से सादर निवेदन है कि ऐसे भव्य एवं प्राचीन तीर्थ की यात्रार्थ अवश्य पधारिये।

वहीवट, संचालन एवं सम्पर्क सूत्र :

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालों का रास्ता,
जोहरी बाजार, जयपुर-302003 फोन : 563260/569494
ग्राम बरखेडा-303903, पो. शिवदासपुरा, जिला-जयपुर.
फोन : 95-1429-7407, 01429-7407

बरखेड़ा तीर्थोद्धारिका
सा. सुमंगला श्री जी म.

श्री आदिनाथाय नमः

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर के उप नगर सोडाला की रत्नापुरी में स्थित श्री जैन श्वे. जिनालय में बिराजित
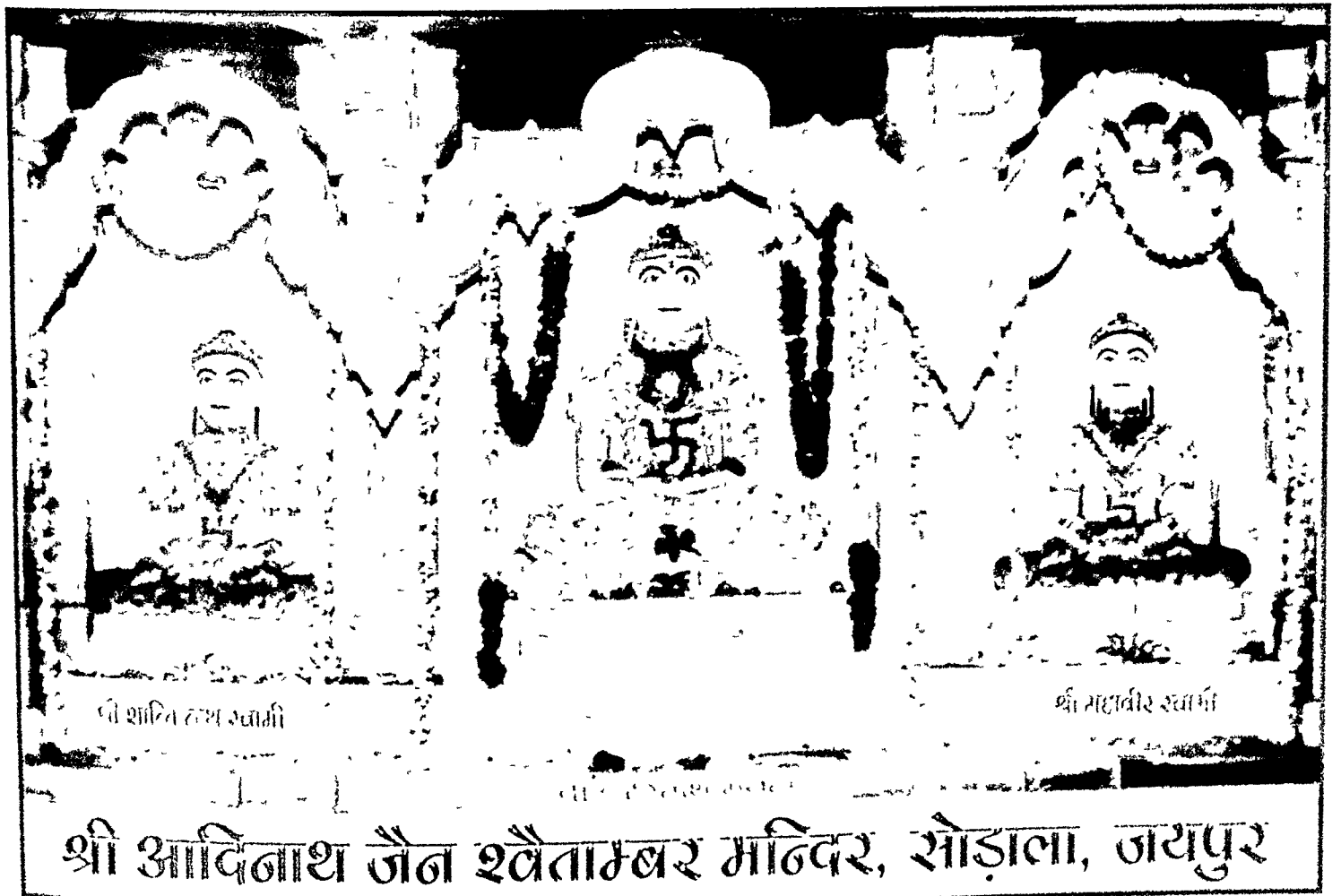
श्री आदिनाथ जैन श्वैताम्बर मन्दिर, सोड़ाला, जयपुर

भगवान शांतिनाथ | भगवान आदिनाथ | भगवान महावीर

श्री आदिनाथाय नमः

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर के उप नगर सोडाला की रत्नापुरी में स्थित श्री जैन श्वे. जिनालय में बिराजित

श्री आदिनाथ जैन श्वैताम्बर मन्दिर, सोड़ाला, जयपुर
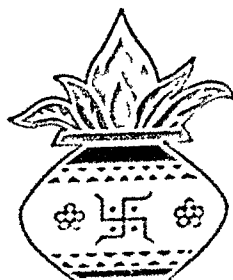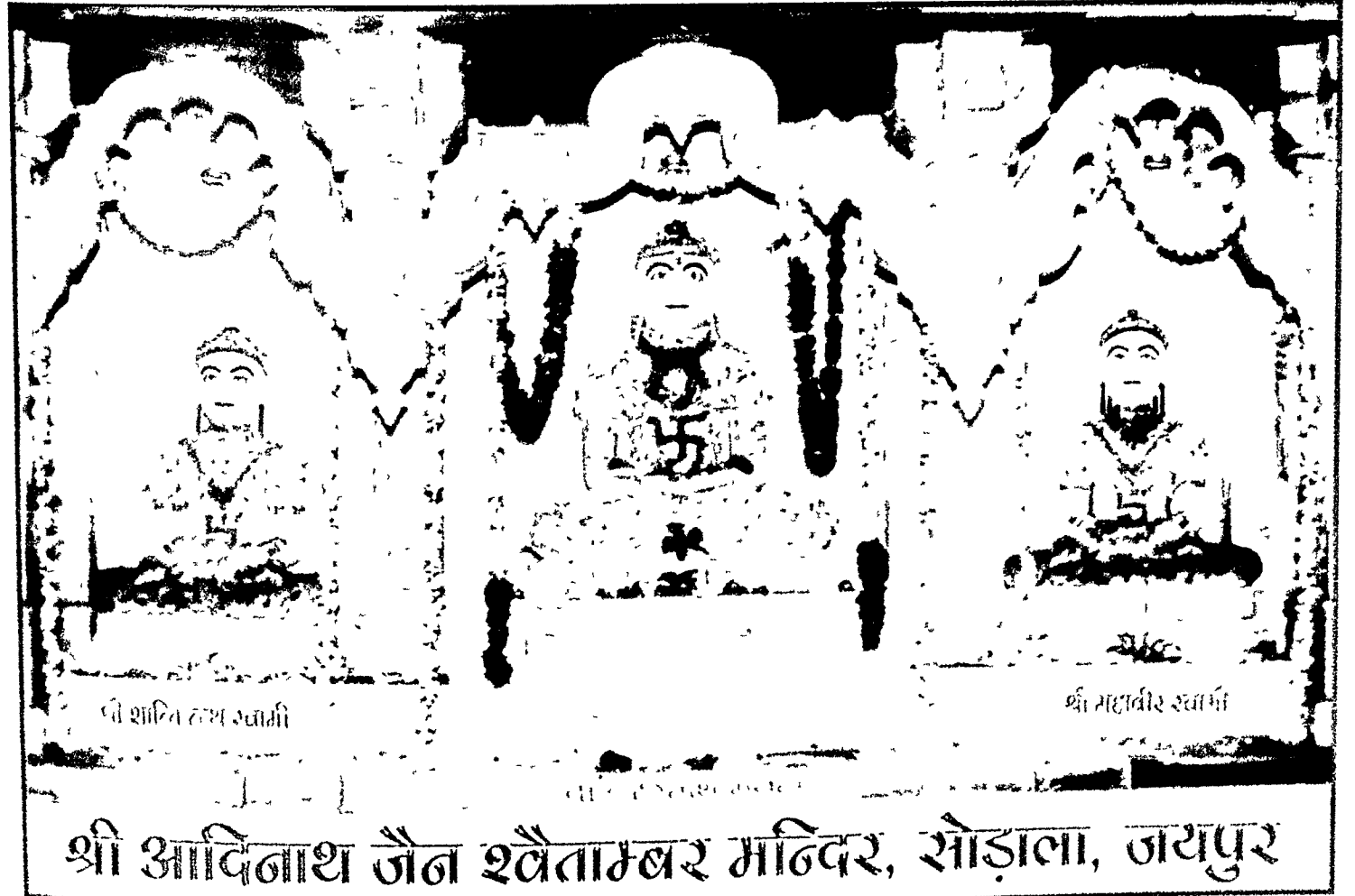
भगवान शांतिनाथ भगवान आदिनाथ भगवान महावीर
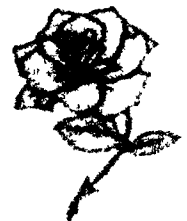
परमार क्षत्रियोद्धारक, चारित्र चूड़ामणि आचार्य देवेश
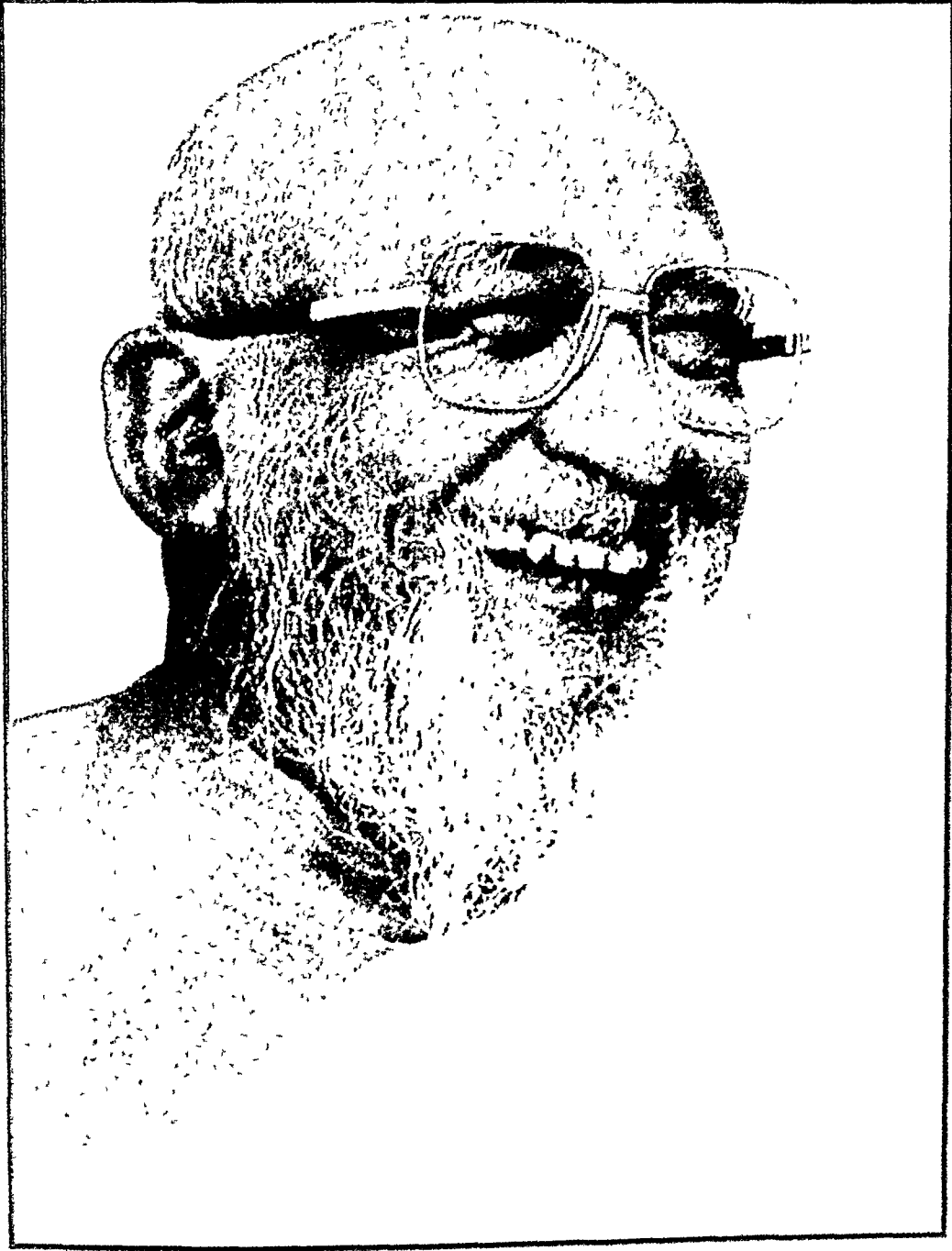
गच्छाधिपति श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा.

जन्म : सालपुरा, कार्तिक कृष्णा 9 सं. 1980। दीक्षा : फाल्गुन शुक्ला 5, सं. 1998

आचार्य पदवी : सं. 2027, वरली।

स्वर्गारोहण : 4 जनवरी, 2002, अम्बाला

श्रीमती सीता देवी ध. प. श्री देसराज जी जैन पुत्र श्री देवेन्द्र, सुरेन्द्र, यतेन्द्र, वीरेन्द्र (ओसवाल सोप ग्रुप) की ओर से शतःशतः वंदन एवं हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित

परमार क्षत्रियोद्धारक, चारित्र चूड़ामणि आचार्य देवेश

गच्छाधिपति श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा.

जन्म : सालपुरा, कार्तिक कृष्णा 9 सं. 1980। दीक्षा : फाल्गुन शुक्ला 5, सं. 1998
आचार्य पदवी : सं. 2027, वरली।

स्वर्गारोहण : 4 जनवरी, 2002, अम्बाला

श्रीमती सीता देवी ध. प. श्री देसराज जी जैन पुत्र श्री देवेन्द्र, सुरेन्द्र, यतेन्द्र, वीरेन्द्र (ओसवाल सोप ग्रुप) की ओर से शतःशतः वंदन एवं हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित

कच्छवागड देशोद्धारक, अध्यात्मयोगी

आ. दे. श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा.

जन्म : बैसाख सुद 2 संवत् 1980, फलोदी। दीक्षा : बैसाख सुद 10, सं. 2010, फलोदी

आचार्य पदवी : माघ सुद 3, सं. 2029, भद्रेश्वर

स्वर्गारोहण : 16 फरवरी, 2002

श्रीमती गुणसुन्दरबाई राजबहादुर सिंह जी, पुत्र नरेन्द्र-दवील भंडारी की ओर से शतःशतः वंदन एवं हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित

कच्छवागड देशोद्धारक, अध्यात्मयोगी

आ. दे. श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा.

जन्म : बैसाख सुद 2 संवत् 1980, फलोदी। दीक्षा : बैसाख सुद 10, सं. 2010, फलोदी

आचार्य पदवी : माघ सुद 3, सं. 2029, भद्रेश्वर

स्वर्गारोहण : 16 फरवरी, 2002

श्रीमती गुणसुन्दरबाई राजबहादुर सिंह जी, पुत्र नरेन्द्र-दवील भंडारी की ओर से शतःशतः वंदन एवं हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित

आ. श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. के पट्टधर
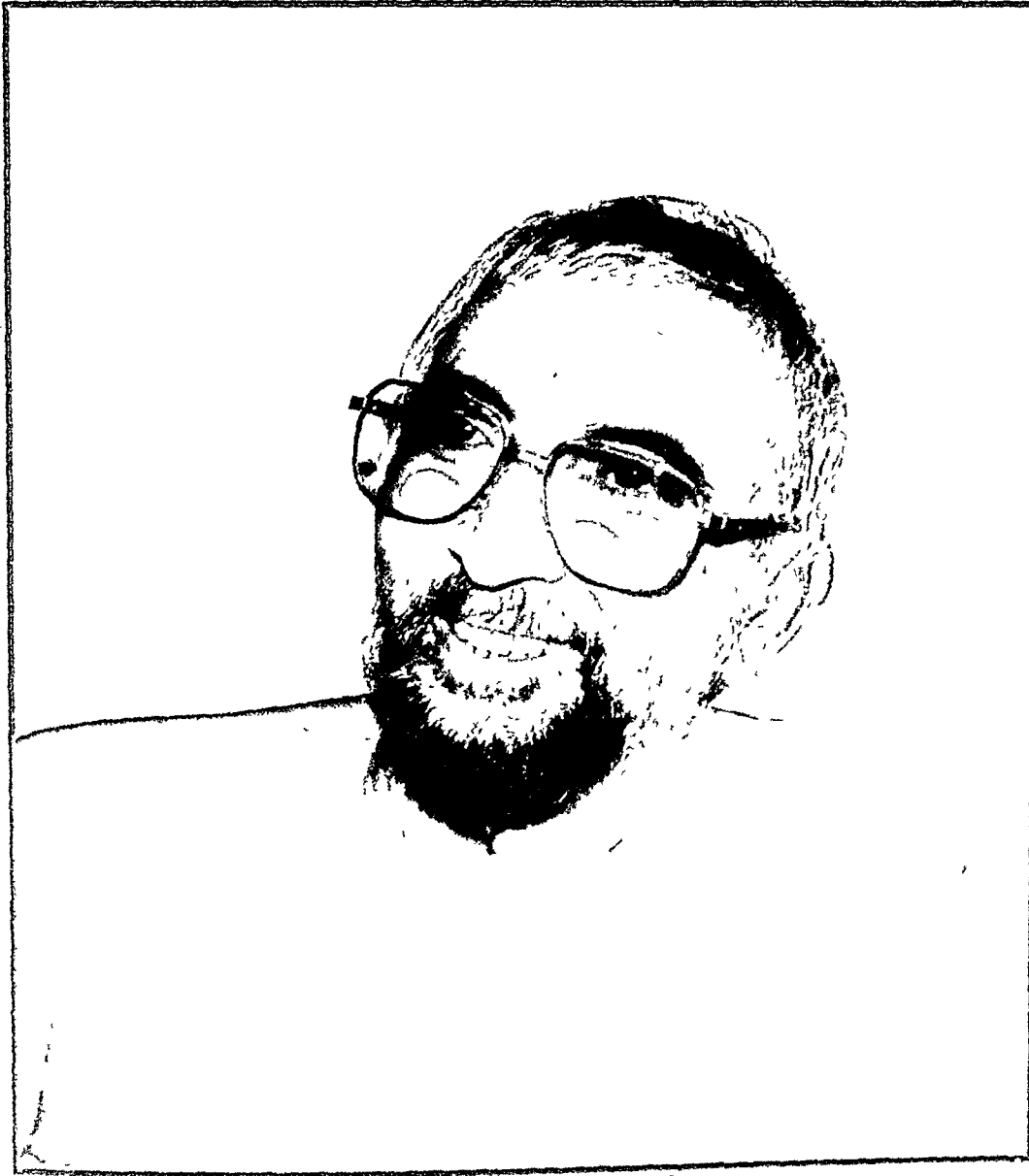
गच्छनायक श्रीमद् विजय कलाप्रभ सूरीश्वर जी म.सा.

जन्म : कार्तिक सुद 5, वि.सं. 2000, फलोदी। दीक्षा : वै. सुद 10, वि.सं. 2010

आचार्य पदवी : माघ सुद 6, सं. 2056

गच्छनायक : 16 फरवरी, 2002

श्री नवीन चन्द शाह, प्रभा बेन शाह, समीर शाह, वीनल शाह, श्रेय शाह, सेरल शाह का हार्दिक बहुमान पूर्वक शतः शतः वन्दन-अभिनन्दन।

आ. श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. के पट्टधर
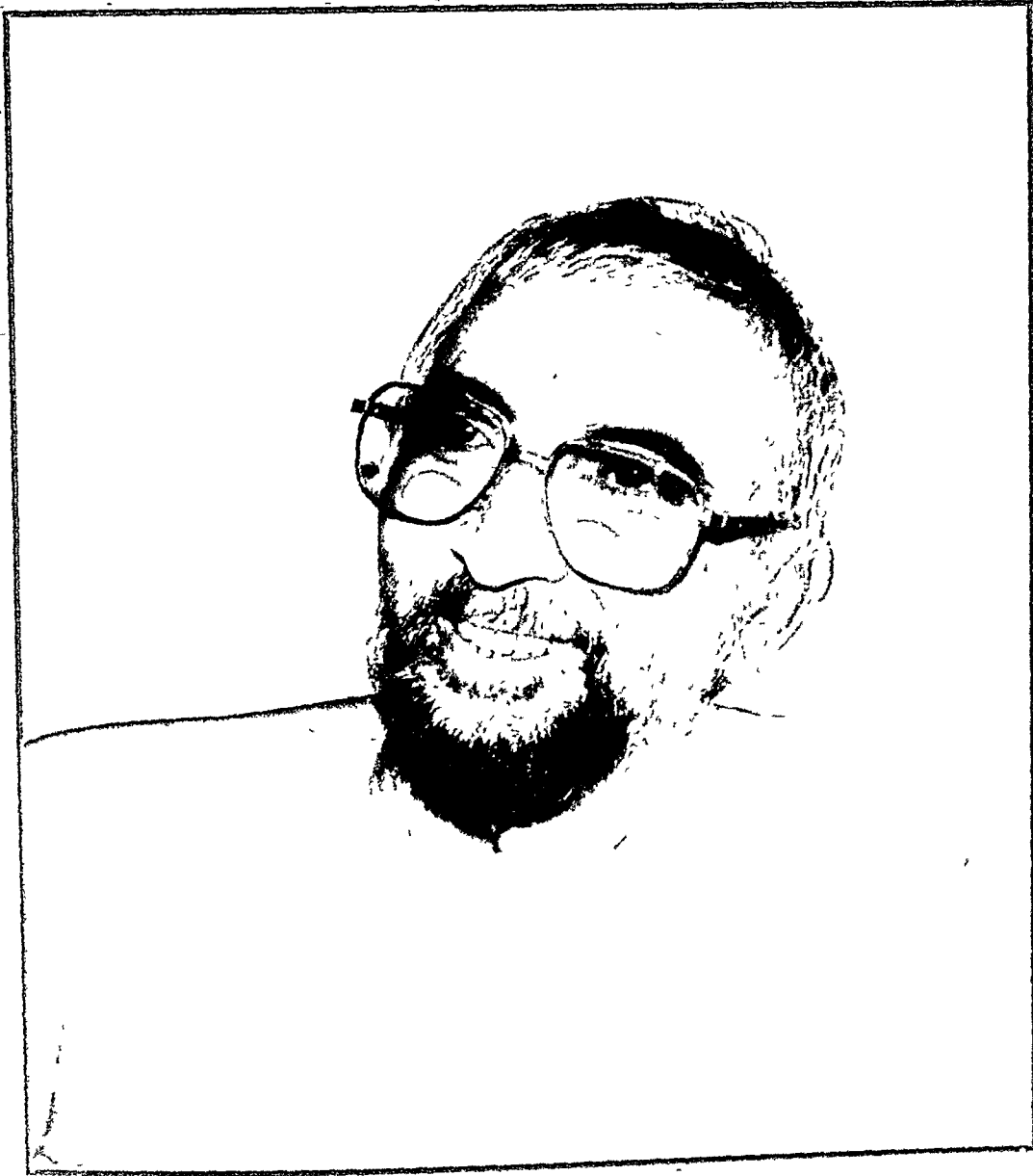
गच्छनायक श्रीमद् विजय कलाप्रभ सूरीश्वर जी म.सा.

जन्म : कार्तिक सुद 5, वि.सं. 2000, फलोदी। दीक्षा : वै. सुद 10, वि.सं. 2010

आचार्य पदवी : माघ सुद 6, सं. 2056

गच्छनायक : 16 फरवरी, 2002

श्री नवीन चन्द शाह, प्रभा बेन शाह, समीर शाह, वीनल शाह, श्रेय शाह, सेरल शाह का हार्दिक बहुमान पूर्वक शतःशतः वन्दन-अभिनन्दन।

श्री सुमतिनाथाय नमः

आ. कलापूर्णसूरी जी म.सा. के समुदायवर्ती
आ. श्री कलाप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी

सा. श्री दिनमणिश्री जी म.सा. आदि ठाणा - 5

(पीछे की पंक्ति में) सा. श्री दिव्यरत्ना श्री जी म., सा. श्री दिव्य चेतना श्री जी म.,
(बैठे हुए) सा. श्री दिव्य रेखा श्री म., सा. श्री दिनमणि जी म., सा. दिव्य प्रतिमा श्री जी म.

जिनकी पावन निश्रा में जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर में वर्ष 2002
संवत् 2059 का चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है।

श्री सुमतिनाथाय नमः

आ. कलापूर्णसूरी जी म.सा. के समुदायवर्ती
आ. श्री कलाप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी

सा. श्री दिनमणिश्री जी म.सा. आदि ठाणा - 5

(पीछे की पंक्ति में) सा. श्री दिव्यरत्ना श्री जी म., सा. श्री दिव्य चेतना श्री जी म.,
(बैठे हुए) सा. श्री दिव्य रेखा श्री म., सा. श्री दिनमणि जी म., सा. दिव्य प्रतिमा श्री जी म.

जिनकी पावन निश्रा में जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर में वर्ष 2002
संवत् 2059 का चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है।

साध्वीवर्यों का अभिनन्दन

कामली बोहरा कर सा. श्री दिनमणि श्री जी म.सा. का अभिनन्दन

खरतरगच्छ आमनाय की साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा. को कामली बोहरा कर अभिनन्दन

सा. श्री दिव्यचेतना श्री जी म.सा. के 700वें आयम्बिल की पूर्णता पर पारणा-सामग्री बोहराते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार जी छजलानी परिवार।

साध्वीवर्यों का अभिनन्दन

कामली बोहरा कर सा. श्री दिनमणि श्री जी म.सा. का अभिनन्दन

खरतरगच्छ आमनाय की साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा. को कामली बोहरा कर अभिनन्दन

सा. श्री दिव्यचेतना श्री जी म.सा. के 700वें आयम्बिल की पूर्णता पर पारणा-सामग्री वोहराते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार जी छजलानी परिवार।

आ. श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वर जी म.सा. एवं आ. श्री जिनोत्तमसूरीश्वर जी म.सा. का जयपुर में दि. 26 मार्च, 02 को शुभागमन
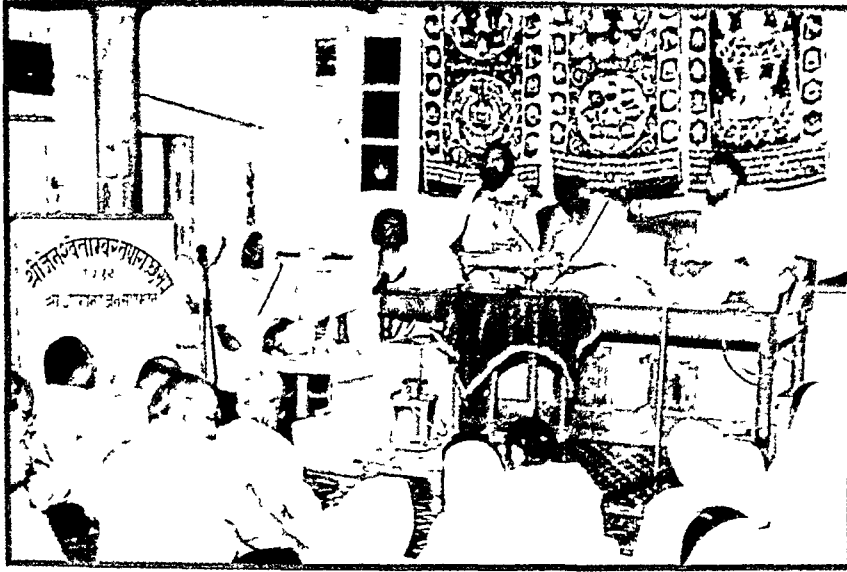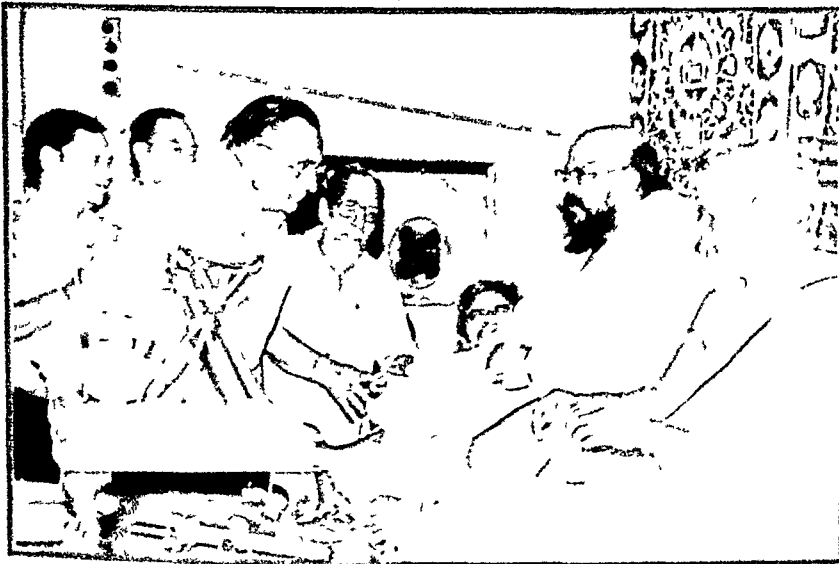
धर्म सभा का
विहंगम दृश्य।

संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई
चौधरी आचार्य श्री को
कामली बोहरा कर
अभिनन्दन करते हुए।

जुलूस का
विहंगम दृश्य।

आ. श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वर जी म.सा. एवं आ. श्री जिनोत्तमसूरीश्वर जी म.सा. का जयपुर में दि. 26 मार्च, 02 को शुभागमन
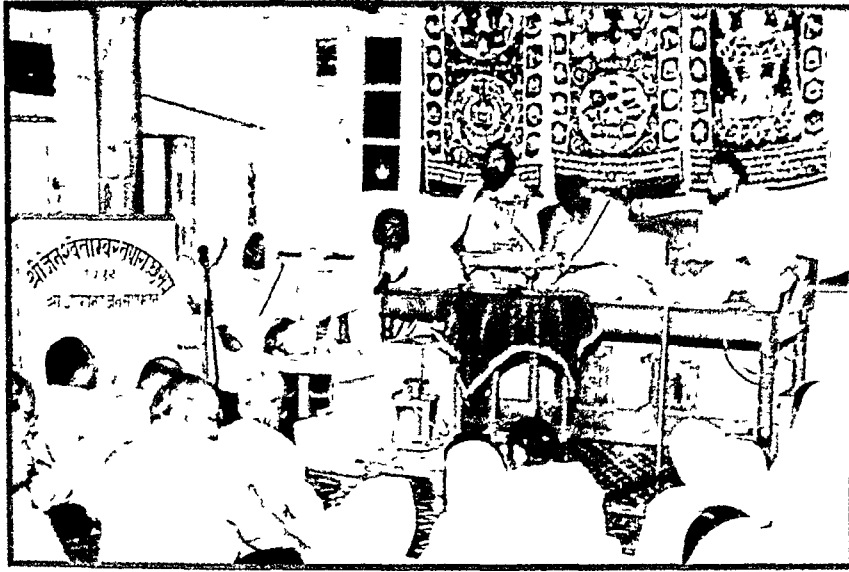
धर्म सभा का विहंगम दृश्य।
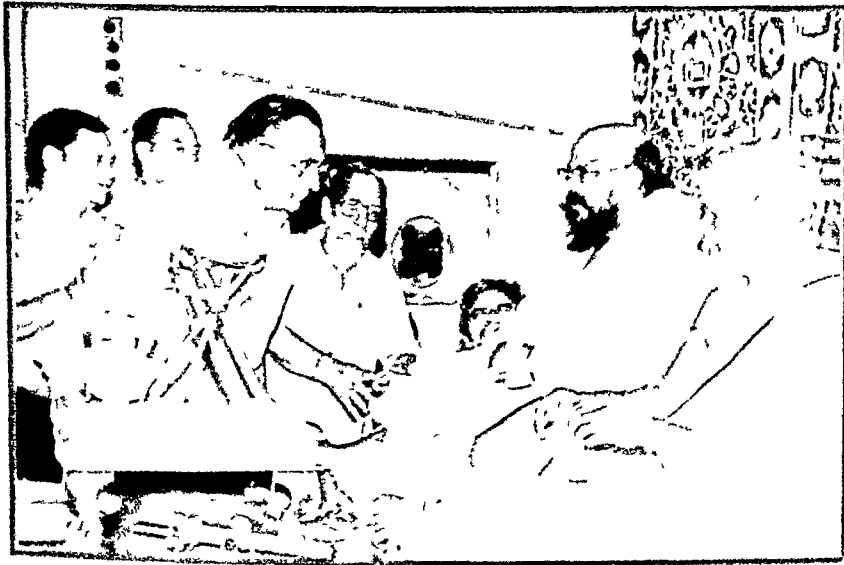
संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी आचार्य श्री को कामली बोहरा कर अभिनन्दन करते हुए।

जुलूस का विहंगम दृश्य।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

गुरु भगवन्त

परमार क्षत्रियोद्धारक, भारत गौरव जैन धँर्म दिवाकर, शासन शिरोमणि आचार्य देवेश श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा.

कच्छ बागड देशोद्धारक अध्यात्म योगी, परमात्म भक्ति रसिक आचार्य देवेश श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा.

जिनशासन के शिरमोर व्याख्यान वाचस्पति गच्छाधिपति आ. श्री विजय रामचन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. के समुदायवर्ती वर्तमान गच्छाधिपति परम वात्सल्यसिंधु प.पू. आ. श्रीमद् विजय महोदयसूरीश्वर जी म.सा.

साध्वी श्री सुवर्णप्रभा श्री जी म.सा. (आ. श्री कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. की सांसारिक धर्मपत्नी) बा मां महाराज सा.

के काल धर्म को प्राप्त होने से जैन जगत को जो अपार क्षति हुई है उसका वर्णन शब्दों में करने का प्रयास सूर्य को दीपक दिखाने के समान है सभी गुरु भगवंतों के जयपुर श्रीसंघ पर भी महान उपकार रहे हैं।

जयपुर में आ. श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा. के वर्ष 1991 के यशस्वी चातुर्मास की स्मृतियां आज भी सजग है।

आ. श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. वर्ष 1985 का चातुर्मास चिर स्मरणीय है। आपकी ही पावन निश्रा में संघ के नव निर्मित श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय, जनता कॉलोनी, जयपुर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार में भी आपकी प्रेरणा, शुभाशीर्वाद एवं मार्गदर्शन रहे जिनका ही परिणाम है कि पांच वर्ष की अल्प अवधि में ही विशाल जिनालय का निर्माण पूरा होकर प्रतिष्ठा सम्पन्न हो गई।

ऐसी महान आत्माओं के प्रति मैं अपनी ओर से तथा समस्त श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूँ।

हीराभाई चोधरी, अध्यक्ष

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

गुरु भगवन्त

परमार क्षत्रियोद्धारक, भारत गौरव जैन धँर्म दिवाकर, शासन शिरोमणि आचार्य देवेश श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा.

कच्छ बागड देशोद्धारक अध्यात्म योगी, परमात्म भक्ति रसिक आचार्य देवेश श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा.

जिनशासन के शिरमोर व्याख्यान वाचस्पति गच्छाधिपति आ. श्री विजय रामचन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. के समुदायवर्ती वर्तमान गच्छाधिपति परम वात्सल्यसिंधु प.पू. आ. श्रीमद् विजय महोदयसूरीश्वर जी म.सा.

साध्वी श्री सुवर्णप्रभा श्री जी म.सा. (आ. श्री कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. की सांसारिक धर्मपत्नी) बा मां महाराज सा.

के काल धर्म को प्राप्त होने से जैन जगत को जो अपार क्षति हुई है उसका वर्णन शब्दों में करने का प्रयास सूर्य को दीपक दिखाने के समान है सभी गुरु भगवंतों के जयपुर श्रीसंघ पर भी महान उपकार रहे हैं।

जयपुर में आ. श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा. के वर्ष 1991 के यशस्वी चातुर्मास की स्मृतियां आज भी सजग है।

आ. श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. वर्ष 1985 का चातुर्मास चिर स्मरणीय है। आपकी ही पावन निश्रा में संघ के नव निर्मित श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय, जनता कॉलोनी, जयपुर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार में भी आपकी प्रेरणा, शुभाशीर्वाद एवं मार्गदर्शन रहे जिनका ही परिणाम है कि पांच वर्ष की अल्प अवधि में ही विशाल जिनालय का निर्माण पूरा होकर प्रतिष्ठा सम्पन्न हो गई।

ऐसी महान आत्माओं के प्रति मैं अपनी ओर से तथा समस्त श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूँ।

हीराभाई चोधरी, अध्यक्ष

पू. साध्वी श्री सुवर्णप्रभा श्री जी म.सा. (बा महाराज)

(आचार्य श्री कलापूर्णसूरि जी म.सा. की सांसारिक धर्मपत्नी) का महाप्रयाण

-पन्यास श्री कल्पतरु विजय जी म.सा.

राजस्थान की सांस्कृतिक एवं धार्मिक भूमि फलौदी नगर के महान संत अध्यात्म सम्राट, शासन के महान प्रभावक, भारतवर्ष के अलंकार समान आचार्य देव श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. जब संसारी जीवन में अक्षयराज थे, तब उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनबेन ने भी वि.सं. 2010 वै. सु. 10 के शुभ दिन पूरे परिवार के साथ भागवती दीक्षा स्वीकृत की एवं साध्वी श्री सुनन्दा श्री जी. म.सा. की शिष्या के रूप में साध्वीजी श्री सुवर्णप्रभा श्री जी के नाम से प्रसिद्ध हुई। इससे भी ज्यादा जैन समाज में आपकी प्रसिद्धि बा महाराज या मां महाराज के हुलामणे नाम से हुई।

आप आचार्य श्री कलाप्रभसूरी (वर्तमान में बागड समुदाय के गच्छाग्रणी) एवं पन्यास श्री कल्पतरु विजय जी के संसारी माता के रूप में थी एवं उन दोनों पुत्रों को संयम जीवन के स्वीकारने हेतु मरत्ती प्रेरणा एवं वात्सल्य भाव प्रदान करके वास्तव में आपने अपने मातृत्व को भी सफल किया था। आपके साथ आपके पिताजी एवं भाई ने भी दीक्षा ग्रहण की थी जो क्रमशः मुनिश्री कमलविजय जी म. एवं मुनिश्री कमलहंस

पू. साध्वी श्री सुवर्णप्रभा श्री जी म.सा. (बा महाराज)

(आचार्य श्री कलापूर्णसूरि जी म.सा. की सांसारिक धर्मपत्नी) का महाप्रयाण

-पन्यास श्री कल्पतरु विजय जी म.सा.

राजस्थान की सांस्कृतिक एवं धार्मिक भूमि फलौदी नगर के महान संत अध्यात्म सम्राट, शासन के महान प्रभावक, भारतवर्ष के अलंकार समान आचार्य देव श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. जब संसारी जीवन में अक्षयराज थे, तब उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनबेन ने भी वि.सं. 2010 वै. सु. 10 के शुभ दिन पूरे परिवार के साथ भागवती दीक्षा स्वीकृत की एवं साध्वी श्री सुनन्दा श्री जी. म.सा. की शिष्या के रूप में साध्वीजी श्री सुवर्णप्रभा श्री जी के नाम से प्रसिद्ध हुई। इससे भी ज्यादा जैन समाज में आपकी प्रसिद्धि बा महाराज या मां महाराज के हुलामणे नाम से हुई।
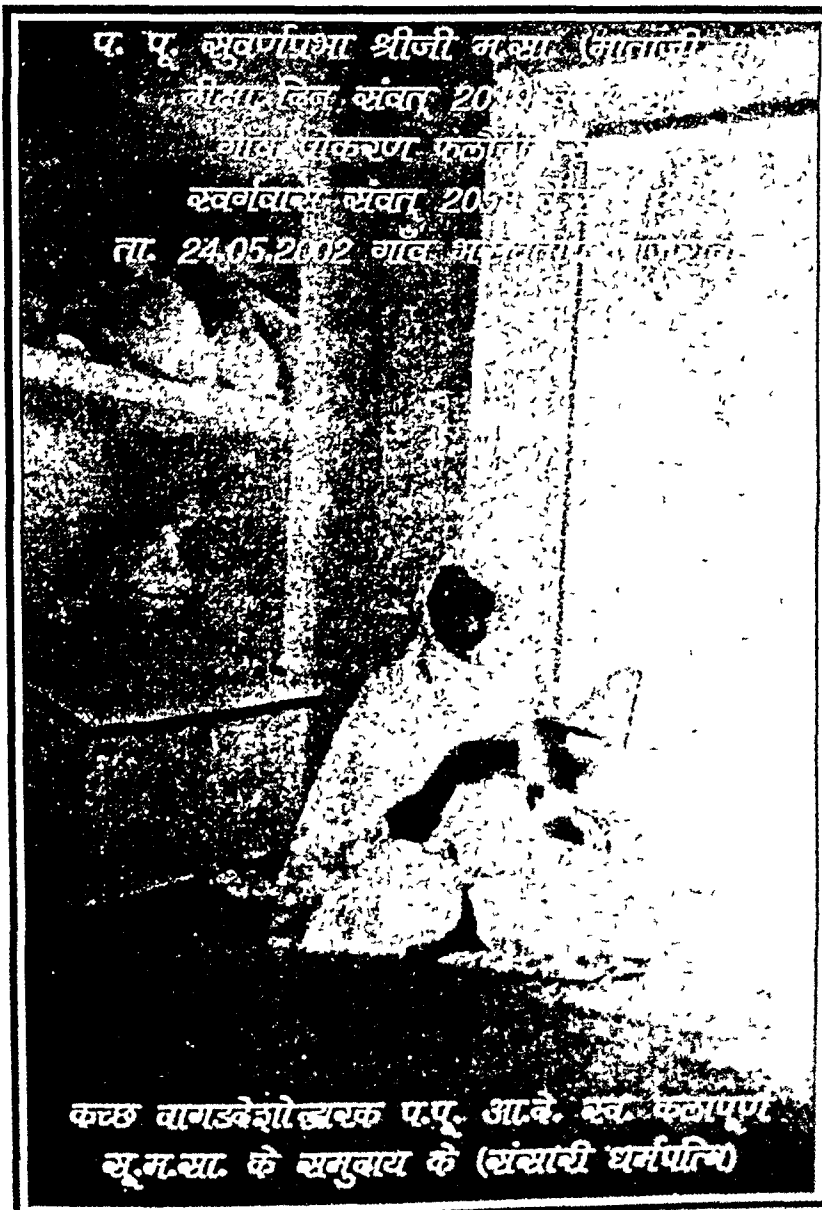
आप आचार्य श्री कलाप्रभसूरी (वर्तमान में बागड समुदाय के गच्छाग्रणी) एवं पन्यास श्री कल्पतरु विजय जी के संसारी माता के रूप में थी एवं उन दोनों पुत्रों को संयम जीवन के स्वीकारने हेतु मस्ती प्रेरणा एवं वात्सल्य भाव प्रदान करके वास्तव में आपने अपने मातृत्व को भी सफल किया था। आपके साथ आपके पिताजी एवं भाई ने भी दीक्षा ग्रहण की थी जो क्रमशः मुनिश्री कमलविजय जी म. एवं मुनिश्री कमलहंस

मरुधर के चांद

-मुनिवर्य श्री मुनिचन्द्र विजय जी म.सा.

किसी ने कहा है :

गंगा पाय शशी ताप दैन्य कल्पतरुस्तथा ।
पाप ताप च दैव्यं च हरेत् साधुसमागमः ॥

पाप दूर करना हो तो गंगा है। ताप दूर करना है तो चन्द्र है । दीनता दूर करनी है तो कल्पतरु है, लेकिन अगर पाप-ताप व संताप तीनों को दूर करना है तो संतों का समागम है।

अध्यायोगी पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. ऐसे ही विरल संत थे, जो आज जैन जगत में प्रथम पंक्ति के विशिष्ट साधक संत माने जाते हैं, जो सबके श्रद्धा व आदर के पात्र, जो सहज एवं सरल जीवन के स्वामी, व साक्षात् भक्ति की गंगा स्वरूप जो उसमें डूबकी लगाए उनके सारे पाप चले जायें, वे मैत्री की चांदनी चारों ओर फैलाने वाले सोलह कलाओं से पूर्ण चन्द्र थे । उनकी मैत्री-चांदनी का स्पर्श आपके भीतर तक होते ही आपका सारा उद्वेग-संताप चला जायेगा । उनके हृदय-नंदन में प्रभु रूपी कल्पतरु शोभायमान था । ज्योंहि आप कल्पतरु की छाया में जायें त्योंहि आपकी सारी दीनता चली जाय।

भक्ति की गंगा, मैत्री की जमना एवं समता की सरस्वती- इन तीनों का त्रिवेणी संगम मतलब कि पूज्य कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. रूप जंगम तीर्थ जहां आकर अनेक भावुक लोग परम कृतार्थता का अनुभव करते थे। सचमुच पूज्य श्री के जहां कदम पडते थे वहां तीर्थ का माहौल बन जाता था। वहां जंगल में भी मंगल हो जाता था, वहां रेगिस्तान भी वृंदावन में बदल जाता था । पूज्य श्री के भक्तिजन्य विशुद्ध पुण्य से जैन-शासन के अनेकविध कार्य सहज रूप से हो जाते थे, पूज्य श्री की उपस्थिति मात्र से लोगों के हृदय में धर्म-भावना के पूर उमडने लगते थे। दूर-दूर से लोग आकृष्ट होकर आने लगते थे; मानो किसी अदृश्य शक्ति ने खींचा हो ।

पूज्य श्री का ऐसा पुण्य प्रभाव तो अनुभव करने वाले ही जान पाते। पूज्य श्री के सान्निध्य मात्र से क्रोधी का क्रोध शांत हो जाता था, नास्तिक भी आस्तिक हो जाता था, पूज्य श्री के चेहरे पर अध्यात्म-रस-मस्तक की अपूर्व चमक देखकर नास्तिक को भी मानना पडता कि इस दुनिया में कहीं ईश्वर जरूर है। देखने वालों को लगता था कि सचमुच भक्ति से स्वच्छ निर्मल वने हुए इस वदन पर ईश्वर का प्रतिबिंब पड रहा हो। पूज्य श्री के शरीर की चमकती हुई त्वचा पूज्य श्री की योगसिद्धि की परिचायिका थी । कलिकाल स्तवन में श्री हेमचन्द्रसूरिजी ने लिखा है कि योगसिद्ध पुरुष

मरुधर के चांद

-मुनिवर्य श्री मुनिचन्द्र विजय जी म.सा.

किसी ने कहा है :

गंगा पाय शशी ताप दैन्य कल्पतरुस्तथा ।
पाप ताप च दैव्यं च हरेत् साधुसमागमः ॥

पाप दूर करना हो तो गंगा है। ताप दूर करना है तो चन्द्र है। दीनता दूर करनी है तो कल्पतरु है, लेकिन अगर पाप-ताप व संताप तीनों को दूर करना है तो संतों का समागम है।

अध्यायोगी पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. ऐसे ही विरल संत थे, जो आज जैन जगत में प्रथम पंक्ति के विशिष्ट साधक संत माने जाते हैं, जो सबके श्रद्धा व आदर के पात्र, जो सहज एवं सरल जीवन के स्वामी, व साक्षात् भक्ति की गंगा स्वरूप जो उसमें डूबकी लगाए उनके सारे पाप चले जायें, वे मैत्री की चांदनी चारों ओर फैलाने वाले सोलह कलाओं से पूर्ण चन्द्र थे। उनकी मैत्री-चांदनी का स्पर्श आपके भीतर तक होते ही आपका सारा उद्वेग-संताप चला जायेगा। उनके हृदय-नंदन में प्रभु रूपी कल्पतरु शोभायमान था। ज्योंहि आप कल्पतरु की छाया में जायें त्योंहि आपकी सारी दीनता चली जाय।

भक्ति की गंगा, मैत्री की जमना एवं समता की सरस्वती- इन तीनों का त्रिवेणी संगम मतलब कि पूज्य कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. रूप जंगम तीर्थ जहां आकर अनेक भावुक लोग परम कृतार्थता का अनुभव करते थे। सचमुच पूज्य श्री के जहां कदम पडते थे वहां तीर्थ का माहौल बन जाता था। वहां जंगल में भी मंगल हो जाता था, वहां रेगिस्तान भी वृंदावन में बदल जाता था। पूज्य श्री के भक्तिजन्य विशुद्ध पुण्य से जैन-शासन के अनेकविध कार्य सहज रूप से हो जाते थे, पूज्य श्री की उपस्थिति मात्र से लोगों के हृदय में धर्म-भावना के पूर उमडने लगते थे। दूर-दूर से लोग आकृष्ट होकर आने लगते थे; मानो किसी अदृश्य शक्ति ने खींचा हो।

पूज्य श्री का ऐसा पुण्य प्रभाव तो अनुभव करने वाले ही जान पाते। पूज्य श्री के सान्निध्य मात्र से क्रोधी का क्रोध शांत हो जाता था, नास्तिक भी आस्तिक हो जाता था, पूज्य श्री के चेहरे पर अध्यात्म-रस-मस्तक की अपूर्व चमक देखकर नास्तिक को भी मानना पडता कि इस दुनिया में कहीं ईश्वर जरूर है। देखने वालों को लगता था कि सचमुच भक्ति से स्वच्छ निर्मल वने हुए इस वदन पर ईश्वर का प्रतिबिंब पड रहा हो। पूज्य श्री के शरीर की चमकती हुई त्वचा पूज्य श्री की योगसिद्धि की परिचायिका थी। कलिकाल स्तवन में श्री हेमचन्द्रसूरिजी ने लिखा है कि योगसिद्ध पुरुष

संयोग से जुडने पर भी संसार की मोह माया से, परिवारजनों के स्नेह-शग् से हमेशा कमलवत् निर्लेप रहते हुए दिन-प्रतिदिन वैराग्य-भाव की धारा ऐसी बढती चली कि-एकदिन संयम की खडगधार पर चलने का निर्णय न केवल स्वयं ने किया पर अपने सारे परिवार को भी वैराग्य के रंग से वासित बना दिया और सद्‌गुरु की खोज में सत्संग, समागम करते हुए कविकुल किरीट प.पू. आचार्य भगवंत लब्धि सूरीश्वरजी म.सा. के शुभ सत्संग और प्रेरणा से कच्छवागड देशोद्धारक परमोपकारी प.पू. आ. भ. कनक सूरीश्वर जी म.सा. का सद्‌समागम पाकर संवत् 2010 वैशाख सुद दूज की सुनहरी प्रभात में सारे परिवार के साथ इस संसार की जहरीली विषय वासना को वमनकर, मोहमाया के बंधन को तोडकर केसरी सिंह के समान संयम के वस्त्र पहन लिये और अक्षयराज जी में से बन गये प.पू. गुरुदेव श्री कंचनविजयजी म.सा. के नंदन 'कलापूर्ण विजय'।

संयम के प्रथम दिन से ही संयम के एक एक योग अनुष्ठान में कुशल ! अपने गुरुदेव की असीम कृपा दृष्टि को प्राप्त कर लिया। अक्षयगुण के भंडार तो थे ही, अब संयम के हर एक अनुष्ठान में परम विनय और समर्पण भाव के साथ पूर्ण बनते चले।

बाल्यवय से अंतरमुख रहने वाले गुरुवर ने अपने संयम जीवन को ऐसा अंतरमुख बनाया कि, जिससे दर्शन विशुद्धि को, आगम अनुप्रेक्षा करते हुए ज्ञानवल को, और जैसा भीतर में जाना, जैसा आगम-ज्ञान को समझा उसे रोम-रोम और घट-घट में उतार कर चारित्रवल को बढाया और इसके अंतरथल में दर्शन-ज्ञान-चारित्र का सागर लहराने के साथ खासतौर से प्रियंकारी प्रभु भक्ति और अध्यात्म की महफिल में मस्त रहते थे।

—परमात्म-भक्ति रसिक गुरुदेव ! आपकी कितनी भव्य भगवद् भक्ति जिसे जानना, समझना किसी भी संकीर्ण घेरे में कतई संभव नहीं। किस कलम की स्याही से, किस शब्द पुष्प से अलंकृत करुं। ऐसा परमात्मा का अचिंत्य प्रभाव छाया हुआ था कि जब कभी भी स्वयं भक्ति में एकतान बन जाते तब तब मानो एक छोटा सा बालक अपनी माता की गोद में निश्चिंत बन खेल कूद कर रहा हो वैसे एक बालक स्वरूप बन जाते थे। ऐसी प्रीतलडी प्रभु से बांधी थी।

—चाहे प्रभु के शासन और समुदाय के कार्य में कितने ही व्यस्त क्युं न हो, चाहे कितना ही उग्र विहारादि का परिश्रम क्युं न कि हो, पर भक्ति का समय हुआ नहिं कि अपने आप कदम परमात्मा के मंदिर की ओर चल पडते थे। स्वयं भक्ति रसिक तो थे ही साथ में आने वाले सबको रसिक बनाने के लिये, बार-बार कहते थे कि- मैं जब कभी भी परम तारक परमात्मा के दरबार में जाता हूँ तब मेरी सारी थकान, भूख, तृषा मिट जाती है। प्रभु पूजा की भक्ति में ही मुझे अनमोल संयम की देन मिली है।

—आज के कलियुग में ऐसे आचार्य सूरीदेव ! गुरुदेव आप ऐसे थे कि- हर कोई गच्छ, समुदाय और आम जनता आपकी भक्ति की तारीफ करते हुए हरदम आपके दर्शन के आतुर चातक बने रहते थे।

—इस भक्ति के कारण ही दीप्तीमान गौरवर्ण के साथ दार्शनिक मुखमंडल पर चमकती-दमकती हुई निर्मल प्रसन्नता की लकीर से युक्त

संयोग से जुडने पर भी संसार की मोह माया से, परिवारजनों के स्नेह-शग् से हमेशा कमलवत् निर्लेप रहते हुए दिन-प्रतिदिन वैराग्य-भाव की धारा ऐसी बढती चली कि-एकदिन संयम की खडगधार पर चलने का निर्णय न केवल स्वयं ने किया पर अपने सारे परिवार को भी वैराग्य के रंग से वासित बना दिया और सद्गुरु की खोज में सत्संग, समागम करते हुए कविकुल किरीट प.पू. आचार्य भगवंत लब्धि सूरीश्वरजी म.सा. के शुभ सत्संग और प्रेरणा से कच्छवागड देशोद्धारक परमोपकारी प.पू. आ. भ. कनक सूरीश्वर जी म.सा. का सद्समागम पाकर संवत् 2010 वैशाख सुद दूज की सुनहरी प्रभात में सारे परिवार के साथ इस संसार की जहरीली विषय वासना को वमनकर, मोहमाया के बंधन को तोडकर केसरी सिंह के समान संयम के वस्त्र पहन लिये और अक्षयराज जी में से बन गये प.पू. गुरुदेव श्री कंचनविजयजी म.सा. के नंदन 'कलापूर्ण विजय'।

संयम के प्रथम दिन से ही संयम के एक एक योग अनुष्ठान में कुशल ! अपने गुरुदेव की असीम कृपा दृष्टि को प्राप्त कर लिया। अक्षयगुण के भंडार तो थे ही, अब संयम के हर एक अनुष्ठान में परम विनय और समर्पण भाव के साथ पूर्ण बनते चले।

बाल्यवय से अंतरमुख रहने वाले गुरुवर ने अपने संयम जीवन को ऐसा अंतरमुख बनाया कि, जिससे दर्शन विशुद्धि को, आगम अनुप्रेक्षा करते हुए ज्ञानबल को, और जैसा भीतर में जाना, जैसा आगम-ज्ञान को समझा उसे रोम-रोम और घट-घट में उतार कर चारित्रबल को बढाया और इनके अंतरथल में दर्शन-ज्ञान-चारित्र का सागर लहराने के साथ खासतौर से प्रियंकारी प्रभु भक्ति और अध्यात्म की महफिल में मस्त रहते थे।

—परमात्म-भक्ति रसिक गुरुदेव ! आपकी कितनी भव्य भगवद् भक्ति जिसे जानना, समझना किसी भी संकीर्ण घेरे में कतई संभव नहीं। किस कलम की स्याही से, किस शब्द पुष्प से अलंकृत करुं। ऐसा परमात्मा का अचिंत्य प्रभाव छाया हुआ था कि जब कभी भी स्वयं भक्ति में एकतान बन जाते तब तब मानो एक छोटा सा बालक अपनी माता की गोद में निश्चिंत बन खेल कूद कर रहा हो वैसे एक बालक स्वरूप बन जाते थे। ऐसी प्रीतलडी प्रभु से बांधी थी।

—चाहे प्रभु के शासन और समुदाय के कार्य में कितने ही व्यस्त क्युं न हो, चाहे कितना ही उग्र विहारादि का परिश्रम क्युं न कि हो, पर भक्ति का समय हुआ नहिं कि अपने आप कदम परमात्मा के मंदिर की ओर चल पडते थे। स्वयं भक्ति रसिक तो थे ही साथ में आने वाले सबको रसिक बनाने के लिये, बार-बार कहते थे कि- मैं जब कभी भी परम तारक परमात्मा के दरबार में जाता हूँ तब मेरी सारी थकान, भूख, तृषा मिट जाती है। प्रभु पूजा की भक्ति में ही मुझे अनमोल संयम की देन मिली है।

—आज के कलियुग में ऐसे आचार्य सूरीदेव ! गुरुदेव आप ऐसे थे कि- हर कोई गच्छ, समुदाय और आम जनता आपकी भक्ति की तारीफ करते हुए हरदम आपके दर्शन के आतुर चातक बने रहते थे।

—इस भक्ति के कारण ही दीप्तीमान गौरवर्ण के साथ दार्शनिक मुखमंडल पर चमकती-दमकती हुई निर्मल प्रसन्नता की लकीर से युक्त

जैन जगत की शान थे संत मनीषी

-महत्तरा सा. श्री सुमंगलाश्री जी म.सा.

ए मौत आखिर
तुझसे नादानी हुई
फूल वो चुने जिससे गुलशन की वीरानी हुई ।

यूं तो उद्यान मे "अनेकों फूल" खिलते है और मुरझाते हैं । लेकिन गुलाब के फूल की महत्ता कुछ निराली ही होती है । यूं तो खान में कई तरह के हीरे, माणक, पन्ने, नीलम आदि होते है लेकिन कोहिनूर हीरे की चमक-दमक कुछ ओर ही होती है ।

वैसे ही यूं तो इस पृथ्वी पर प्रतिदिन अनेकों मानव जन्म लेते हैं और मरते है लेकिन कथनी-करनी को समान बनाकर त्यागमय जीवन जीने वाले संत तो निराले ही होते हैं ।

ऐसे ही त्याग तप और साधना की प्रतिमूर्त संत मनीषी अध्यात्मयोगी आचार्य प्रवर श्रीमद् कलापूर्णसूरी जी महाराज थे जिन्होंने सचमुच में अपने त्यागमय संयम जीवन को साधना की कण से पूर्ण करने का ही प्रयास किया ।

उनकी पावन सान्निध्यता मे राजस्थान का सुप्रसिद्ध 68 तीर्थ का सार प्रकट प्रभावी फलवृद्धि पार्श्वनाथ तीर्थ धाम मेडता मे परमार क्षत्रियोद्धारक कलिकाल चिन्तामणि शासन प्रभावक पू. गुरुदेव श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरिजी म.सा. ने तीर्थ कमेटी की विनती को स्वीकार कर बहनों की उपधानतप की क्रिया करवाने के लिए आज्ञा प्रदान की थी ।

मुझे ठाणा-16 से आपश्री की पावन निश्रा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । आपके साधनामय जीवन से प्रभुभक्ति की सरिता बहती थी उसमें अद्भुत परमात्म मिल का आनद आता था ।

हमे अत्यन्त दुःख होता है कि जिन शासन के साधनामय उपवन से दो सुमन सन् 2002 के प्रारम्भ मे एक ही महीने के अन्तराल मे मुर्झा गये । परमारक्षत्रियोद्धारक गुरुदेव श्री का जीवन शुद्ध सयमी, तपनिष्ठ, जागरूक एवं सरल था । तीन वर्ष तक अस्वस्थ रहे परन्तु अपनी क्रिया मे पूर्ण सजग थे । दीपावली के दिन तेले की तपस्या के साथ सूरिमंत्र का तीन दिन तक जाप कर वासक्षेप मंत्रित किया ।

अंतिम सांस भी समाधि की अवस्था में जाप करते-करते पूर्ण की । जयपुर तपागच्छ संघ बहुत ही पुण्यशाली है जिसने ऐसे महान मनीषी संतों को चातुर्मास करवाने का लाभ प्राप्त किया ।

इन्हीं भावों से श्रद्धा सुमन समर्पित करती हुई उनके चरणों में भाव भरा वन्दन-वन्दन-वन्दन ।

चातुर्मास - जैन नगर, [illegible]

जैन जगत की शान थे संत मनीषी

-महत्तरा सा. श्री सुमंगलाश्री जी म.सा.

ए मौत आखिर तुझसे नादानी हुई
फूल वो चुने जिससे गुलशन की वीरानी हुई ।

यूं तो उद्यान मे "अनेकों फूल" खिलते है और मुरझाते हैं । लेकिन गुलाब के फूल की महत्ता कुछ निराली ही होती है । यूं तो खान में कई तरह के हीरे, माणक, पन्ने, नीलम आदि होते है लेकिन कोहिनूर हीरे की चमक-दमक कुछ ओर ही होती है ।

वैसे ही यूं तो इस पृथ्वी पर प्रतिदिन अनेकों मानव जन्म लेते हैं और मरते है लेकिन कथनी-करनी को समान बनाकर त्यागमय जीवन जीने वाले संत तो निराले ही होते हैं ।

ऐसे ही त्याग तप और साधना की प्रतिमूर्त संत मनीषी अध्यात्मयोगी आचार्य प्रवर श्रीमद् कलापूर्णसूरी जी महाराज थे जिन्होंने सचमुच में अपने त्यागमय संयम जीवन को साधना की कण से पूर्ण करने का ही प्रयास किया ।

उनकी पावन सान्निध्यता मे राजस्थान का सुप्रसिद्ध 68 तीर्थ का सार प्रकट प्रभावी फलवृद्धि पार्श्वनाथ तीर्थ धाम मेड़ता मे परमार क्षत्रियोद्धारक कलिकाल चिन्तामणि शासन प्रभावक पू. गुरुदेव श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरिजी म.सा. ने तीर्थ कमेटी की विनती को स्वीकार कर बहनों की उपधानतप की क्रिया करवाने के लिए आज्ञा प्रदान की थी ।

मुझे ठाणा-16 से आपश्री की पावन निश्रा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । आपके साधनामय जीवन से प्रभुभक्ति की सरिता बहती थी उसमें अद्‌भुत परमात्म मिल का आनद आता था ।

हमे अत्यन्त दुःख होता है कि जिन शासन के साधनामय उपवन से दो सुमन सन् 2002 के प्रारम्भ मे एक ही महीने के अन्तराल मे मुर्झा गये । परमारक्षत्रियोद्धारक गुरुदेव श्री का जीवन शुद्ध सयमी, तपनिष्ठ, जागरूक एवं सरल था । तीन वर्ष तक अस्वस्थ रहे परन्तु अपनी क्रिया मे पूर्ण सजग थे । दीपावली के दिन तेले की तपस्या के साथ सूरिमंत्र का तीन दिन तक जाप कर वासक्षेप मंत्रित किया ।

अंतिम सांस भी समाधि की अवस्था में जाप करते-करते पूर्ण की । जयपुर तपागच्छ संघ बहुत ही पुण्यशाली है जिसने ऐसे महान मनीषी संतों को चातुर्मास करवाने का लाभ प्राप्त किया ।

इन्ही भावों से श्रद्धा सुमन समर्पित करती हुई उनके चरणों में भाव भरा वन्दन-वन्दन-वन्दन ।

चातुर्मास - जैन नगर, [illegible]

तकलीफ और मजबूरी अपने से ज्यादा समझते थे ।

एक बार जयपुर से मेडता विहार के दौरान अजमेर पधारे । मैंने देखा आप बहुत पीले दिख रहे थे । खून की कमी थी, मस्सों से खून बह रहा था । मैंने आपरेशन की सलाह दी । आपने फरमाया शरीर तो प्रभु को समर्पित है । मेडता में उपधान तप पर पहुंचना जरूरी है । तुम वहां आकर आपरेशन करना । मैंने वहीं जाकर आपरेशन किया । आप आपरेशन के तुरन्द बाद व्याख्यान में बैठ गये । मुझे कहा चिन्ता मत करो कुछ नहीं होगा ।

अजमेर मंदिर की प्रतिष्ठा के लिये परम पूज्य, जिनभक्ति रस के अजोड प्रणेता, आध्यात्ममूर्ति, आचार्यभगवन्त श्रीकलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. विहार में पाली थे । गर्मी वहुत थी फलोदी चातुर्मास तय था । सिर्फ 200 किलोमीटर पर चाहते तो सभी साधु भगवन्त एवं साध्वीजी भगवन्त सीधे फलोदी पहुंच सकते थे । मैंने कहा आचार्यश्री गर्मी वहुत है पूरा समुदाय लम्बा विहार कर रहा है। आप ठीक समझें तो चातुर्मास के बाद किसी अन्य शुभमुहूर्त्त पर अजमेर मंदिर की प्रतिष्ठा करवायें । आपने कहा नहीं, प्रतिष्ठा चातुर्मास के पहले ही होगी, तुम चिन्ता मत करो सब कुछ ठीक होगा । उन्हें अपना समय नजदीक है, मालूम था । इसलिये 500 किलोमीटर का फलोदी रास्ता अजमेर होकर तय किया, इस भयंकर उष्णकाल में धूमधाम से अजमेर मंदिर की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई । अजमेर संघ आपका हमेशा ऋणी रहेगा । आपका उपकार सदैव चिर स्मरणीय रहेगा ।

केशवणा (जालौर-राज.) में जब आपकी तबीयत ज्यादा खराब हो गई, तो 14 फरवरी, 2002 को मुझे आने का आदेश मिला। मैं तुरन्त रवाना होकर 4 बजे केशवणा पहुंचा । मैंने आपकी पूरी जांच की तथा उपस्थित सभी सन्तों से नम्र निवेदन किया कि मैं आचार्यश्री से अकेले में बात करना चाहता हूँ । फिर बन्द कमरे में मैंने कहा आचार्यश्री 6-7 रोज से आपकी तवियत बिल्कुल ठीक नहीं है आप माण्डवला संघ में नहीं जायेंगे । उन्होंने मेरी तरफ देखकर कहा तुम तो मद्रास में भी यही कह रहे थे । फिर मैं ठीक हुआ कि नहीं । संघ के कार्य में बाधा बिल्कुल नहीं आनी चाहिये । तुम दवाई शुरू करो । मैं उनके चेहरे के तेज को देखकर स्तब्ध रह गया । मैंने कहा आपने शंखेश्वर दादा से पूछ लिया है, उन्होंने कहा हां, भगवान जो भी करेगा ठीक ही करेगा । संघ निकलना जरूरी है, तुम दवाई शुरू करो मैं ठीक हूँ। फिर आपका इलाज शुरू हुआ, कुछ आहार भी लिया । एक घंटे वाद तवियत कुछ ठीक हुई, जैसे लौ बुझने के पहले तेज हो जाती है । आपने फरमाया अव मैं ठीक हूँ, दवाई लूंगा तुम जाओ । आपने वासक्षेप दिया तथा मांगलिक सुनाया । तुम्हें समय-समय

तकलीफ और मजबूरी अपने से ज्यादा समझते थे।

एक बार जयपुर से मेडता विहार के दौरान अजमेर पधारे। मैंने देखा आप बहुत पीले दिख रहे थे। खून की कमी थी, मस्सों से खून बह रहा था। मैंने आपरेशन की सलाह दी। आपने फरमाया शरीर तो प्रभु को समर्पित है। मेडता में उपधान तप पर पहुंचना जरूरी है। तुम वहां आकर आपरेशन करना। मैंने वहीं जाकर आपरेशन किया। आप आपरेशन के तुरन्द बाद व्याख्यान में बैठ गये। मुझे कहा चिन्ता मत करो कुछ नहीं होगा।

अजमेर मंदिर की प्रतिष्ठा के लिये परम पूज्य, जिनभक्ति रस के अजोड प्रणेता, आध्यात्ममूर्ति, आचार्यभगवन्त श्रीकलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. विहार में पाली थे। गर्मी वहुत थी फलोदी चातुर्मास तय था। सिर्फ 200 किलोमीटर पर चाहते तो सभी साधु भगवन्त एवं साध्वीजी भगवन्त सीधे फलोदी पहुंच सकते थे। मैंने कहा आचार्यश्री गर्मी वहुत है पूरा समुदाय लम्बा विहार कर रहा है। आप ठीक समझें तो चातुर्मास के बाद किसी अन्य शुभमुहूर्त्त पर अजमेर मंदिर की प्रतिष्ठा करवायें। आपने कहा नहीं, प्रतिष्ठा चातुर्मास के पहले ही होगी, तुम चिन्ता मत करो सब कुछ ठीक होगा। उन्हें अपना समय नजदीक है, मालूम था। इसलिये 500 किलोमीटर का फलोदी रास्ता अजमेर होकर तय किया, इस भयंकर उष्णकाल में धूमधाम से अजमेर मंदिर की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। अजमेर संघ आपका हमेशा ऋणी रहेगा। आपका उपकार सदैव चिर स्मरणीय रहेगा।

केशवणा (जालौर-राज.) में जब आपकी तबीयत ज्यादा खराब हो गई, तो 14 फरवरी, 2002 को मुझे आने का आदेश मिला। मैं तुरन्त रवाना होकर 4 बजे केशवणा पहुंचा। मैंने आपकी पूरी जांच की तथा उपस्थित सभी सन्तों से नम्र निवेदन किया कि मैं आचार्यश्री से अकेले में बात करना चाहता हूँ। फिर बन्द कमरे में मैंने कहा आचार्यश्री 6-7 रोज से आपकी तवियत बिल्कुल ठीक नहीं है आप माण्डवला संघ में नहीं जायेंगे। उन्होंने मेरी तरफ देखकर कहा तुम तो मद्रास में भी यही कह रहे थे। फिर मैं ठीक हुआ कि नहीं। संघ के कार्य में बाधा बिल्कुल नहीं आनी चाहिये। तुम दवाई शुरू करो। मैं उनके चेहरे के तेज को देखकर स्तब्ध रह गया। मैंने कहा आपने शंखेश्वर दादा से पूछ लिया है, उन्होंने कहा हां, भगवान जो भी करेगा ठीक ही करेगा। संघ निकलना जरूरी है, तुम दवाई शुरू करो मैं ठीक हूँ। फिर आपका इलाज शुरू हुआ, कुछ आहार भी लिया। एक घंटे वाद तवियत कुछ ठीक हुई, जैसे लौ बुझने के पहले तेज हो जाती है। आपने फरमाया अब मैं ठीक हूं, दवाई लूंगा तुम जाओ। आपने वासक्षेप दिया तथा मांगलिक सुनाया। तुम्हें समय-समय

देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा, विनय एवं समर्पण भाव :

-श्रीमती सुशीला छजलानी

आज के इस भौतिक युग में भी धर्म जो टिका हुआ है उसके पीछे मात्र एक कारण है और वह है-देव, गुरु और धर्म के प्रति श्रद्धा व समर्पण भाव । आज जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन को तीर्थंकर परमात्मा द्वारा बताये हुए मार्ग पर समर्पित किया है एवं अपनी इच्छाओं और इन्द्रियों का दमन किया है तब जाकर उन महापुरुषों का नाम स्वर्णमयी अक्षरों से शास्त्रों में अंकित हुआ है । यदि हम प्रभु महावीर का जीवन ग्रहण ना भी कर सकें तो कम से कम उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलने का तो प्रयत्न करें ताकि हमारा जीवन भी त्यागमय बन सके । वैसे भी जैन धर्म का मूल मंत्र है-त्यागे सो आगे । देव गुरु और धर्म की असीम और महती कृपा के आधार पर ही हम कोई भी बडे से बडा कार्य भी सफलतापूर्वक पूरा कर पाते हैं और दूसरी ओर श्रद्धा व गुरुजनों के प्रति समर्पण भाव एवं विनय से हम विद्या और विद्या से विवेक प्राप्त कर पाते हैं विनय, विद्या-विवेक इन तीनों 'वि' में घनिष्ठ संबंध है । विनय अर्थात् गुरुजनों के प्रति समर्पण भाव । विद्यार्थी अपने जीवन में विद्या धन रूपी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपनी श्रद्धा का समर्पण श्री गुरुचरणों में करता है । देव गुरु पर श्रद्धा और बहुमान के बिना हमारा जीवन अधूरा है । गुरु द्रोणाचार्य के प्रति भक्ति भाव तथा गुरुत्व का भाव रखने के कारण ही भील पुत्र एकलव्य धनुर्विद्या में इतना निपुण हुआ था । गुरु समर्पण से प्राप्त विद्यावन्तों के अनेक दृष्टान्त हमें अपने प्राचीन इतिहास के अवलोकन से मिल सकते हैं । इस बात को सिद्ध करने हेतु हम एक दृष्टान्त का अवलोकन कर रहे हैं । एक बार देवदत्त, सोमदत्त व प्रेमदत्त नाम के तीन विद्यार्थी विद्याभ्यास हेतु गुरुकुल में गये । अपनी प्रखर बुद्धि से तीनों विद्यार्थी कुछ ही समय में अनेक विद्याओं में निपुण हो गये । तब तीनों ने गुरु से घर जाने की आज्ञा मांगी । अब गुरुजी ने घर जाने से पहले उनकी परीक्षा लेनी चाही । इस हेतु गुरुजी ने उनके मार्ग में कांटे बिछा दिये और उन्हें उस मार्ग पर चलने की आज्ञा दी । तीनों उस मार्ग पर चलने लगे । देवदत्त शरीर से बलवान व हृष्ट-पुष्ट था

देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा, विनय एवं समर्पण भाव :

-श्रीमती सुशीला छजलानी

आज के इस भौतिक युग में भी धर्म जो टिका हुआ है उसके पीछे मात्र एक कारण है और वह है-देव, गुरु और धर्म के प्रति श्रद्धा व समर्पण भाव । आज जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन को तीर्थंकर परमात्मा द्वारा बताये हुए मार्ग पर समर्पित किया है एवं अपनी इच्छाओं और इन्द्रियों का दमन किया है तब जाकर उन महापुरुषों का नाम स्वर्णमयी अक्षरों से शास्त्रों में अंकित हुआ है । यदि हम प्रभु महावीर का जीवन ग्रहण ना भी कर सकें तो कम से कम उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलने का तो प्रयत्न करें ताकि हमारा जीवन भी त्यागमय बन सके । वैसे भी जैन धर्म का मूल मंत्र है-त्यागे सो आगे । देव गुरु और धर्म की असीम और महती कृपा के आधार पर ही हम कोई भी बडे से बडा कार्य भी सफलतापूर्वक पूरा कर पाते हैं और दूसरी ओर श्रद्धा व गुरुजनों के प्रति समर्पण भाव एवं विनय से हम विद्या और विद्या से विवेक प्राप्त कर पाते हैं विनय, विद्या-विवेक इन तीनों 'वि' में घनिष्ठ संबंध है । विनय अर्थात् गुरुजनों के प्रति समर्पण भाव । विद्यार्थी अपने जीवन में विद्या धन रूपी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपनी श्रद्धा का समर्पण श्री गुरुचरणों में करता है । देव गुरु पर श्रद्धा और बहुमान के विना हमारा जीवन अधूरा है । गुरु द्रोणाचार्य के प्रति भक्ति भाव तथा गुरुत्व का भाव रखने के कारण ही भील पुत्र एकलव्य धनुर्विद्या में इतना निपुण हुआ था । गुरु समर्पण से प्राप्त विद्यावन्तों के अनेक दृष्टान्त हमें अपने प्राचीन इतिहास के अवलोकन से मिल सकते हैं । इस बात को सिद्ध करने हेतु हम एक दृष्टान्त का अवलोकन कर रहे हैं । एक बार देवदत्त, सोमदत्त व प्रेमदत्त नाम के तीन विद्यार्थी विद्याभ्यास हेतु गुरुकुल में गये । अपनी प्रखर बुद्धि से तीनों विद्यार्थी कुछ ही समय में अनेक विद्याओं में निपुण हो गये । तब तीनों ने गुरु से घर जाने की आज्ञा मांगी । अब गुरुजी ने घर जाने से पहले उनकी परीक्षा लेनी चाही । इस हेतु गुरुजी ने उनके मार्ग में कांटे बिछा दिये और उन्हें उस मार्ग पर चलने की आज्ञा दी । तीनों उस मार्ग पर चलने लगे । [illegible] शरीर से [illegible] व हृष्ट-पुष्ट था

पैदल भ्रमण कर वहां की भूमि को पावन किया और प्रभु भक्ति व जीव मैत्री की पताका फहराते हुए अपने जीवन को उज्जवल बनाया। आप श्री की अमृतमयी वाणी का रसपान करके व सूर्य के समान तेजस्वी मुखमण्डल का दर्शन करके दर्शनार्थी अपने जीवन को धन्य-धन्य बनाते थे। आप श्री ने अपने संयमकाल में कई मंदिरों व तीर्थों के जीर्णोद्धार, प्रभु प्रतिमाओं की अंजनशलाका व प्रतिष्ठा महोत्सव आदि ऐतिहासिक रूप से सम्पन्न करवाए और साथ ही कई सांसारिक जीवों को संसार रूपी सागर से पार उतरने के लिये संयम रूपी नौका में सवार किया। अभी 2 वर्ष पूर्व ही आपने अपने सुशिष्य (ज्येष्ठ सांसारिक पुत्र भी) पू. श्री कलाप्रभविजय जी म.सा. को वांकी तीर्थ में आचार्य पद से सुशोभित कर संघ का सारा कार्यभार उन्हें सौंप दिया।

आप श्री का अंतिम चातुर्मास सन् 2001 में आपकी जन्मभूमि फलौदी नगर में ही सम्पन्न हुआ। चातुर्मास पूर्ण होने के पश्चात् आप श्री की निश्रा में मांडवला से पालीताणा का छःरी पालित पैदल यात्री संघ निकलने वाला था जिसके लगभग 4 दिन पूर्व क्रूर काल की ऐसी घडी आई जिसने हमारे पू. गुरुदेव को हमसे छीन लिया। 16-02-2002 की प्रातः 7.10 बजे प्रतिक्रमण व प्रभु-भक्ति करते-करते केशवणा गांव में समाधिमय अवस्था में आप श्री ने इस नश्वर देह का त्याग किया और हम सभी को रोता-बिलखता छोड गये।

शासन देव से यही प्रार्थना है कि पू. गुरुदेव की आत्मा को चिर शांति प्राप्त हो और आपके पट्टधारी पू. आ. श्री कलाप्रभसूरिश्वर जी म.सा. शासन प्रभावना के कार्य करते हुए आप के नाम को दिन दूना और रात चौगुना करें और लगभग 750 साध्वियों व 30 गुरु भगवन्तों के विशाल समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हुए जिन शासन को चमकायें।

आप गुरुओं की आज्ञानुसार इस वर्ष जयपुर श्री संघ को पू.सा. श्री दिनमणि श्री जी आदि ठाणा-5 का अनूठा चातुर्मास करवाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इस महान उपकार के लिये समस्त जयपुर श्री संघ आपका हार्दिक आभारी है। जब गुरु शासन को चमकाते हैं तो शिष्याएं पीछे क्यों?

आप सभी गुरु भगवन्तों का असीम व मंगल आशीर्वाद हम सभी को सतत् मिलता रहे, आपकी करुणामयी दृष्टि श्रीसंघ पर सदा बनी रहे और श्रीसंघ भी देव गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा विनय व समर्पण भाव में उत्तरोत्तर वृद्धि करता रहे, इसी मंगल भावना के साथ मैं पूज्य गुरुदेव के चरणों में शतः शतः वंदन करते हुए श्रद्धा सुमन समर्पित करती हूँ।

141, जय जवान कॉलोनी-II, जयपुर-18

पैदल भ्रमण कर वहां की भूमि को पावन किया और प्रभु भक्ति व जीव मैत्री की पताका फहराते हुए अपने जीवन को उज्जवल बनाया। आप श्री की अमृतमयी वाणी का रसपान करके व सूर्य के समान तेजस्वी मुखमण्डल का दर्शन करके दर्शनार्थी अपने जीवन को धन्य-धन्य बनाते थे। आप श्री ने अपने संयमकाल में कई मंदिरों व तीर्थों के जीर्णोद्धार, प्रभु प्रतिमाओं की अंजनशलाका व प्रतिष्ठा महोत्सव आदि ऐतिहासिक रूप से सम्पन्न करवाए और साथ ही कई सांसारिक जीवों को संसार रूपी सागर से पार उतरने के लिये संयम रूपी नौका में सवार किया। अभी 2 वर्ष पूर्व ही आपने अपने सुशिष्य (ज्येष्ठ सांसारिक पुत्र भी) पू. श्री कलाप्रभविजय जी म.सा. को वांकी तीर्थ में आचार्य पद से सुशोभित कर संघ का सारा कार्यभार उन्हें सौंप दिया।

आप श्री का अंतिम चातुर्मास सन् 2001 में आपकी जन्मभूमि फलौदी नगर में ही सम्पन्न हुआ। चातुर्मास पूर्ण होने के पश्चात् आप श्री की निश्रा में मांडवला से पालीताणा का छःरी पालित पैदल यात्री संघ निकलने वाला था जिसके लगभग 4 दिन पूर्व क्रूर काल की ऐसी घडी आई जिसने हमारे पू. गुरुदेव को हमसे छीन लिया। 16-02-2002 की प्रातः 7.10 बजे प्रतिक्रमण व प्रभु-भक्ति करते-करते केशवणा गांव में समाधिमय अवस्था में आप श्री ने इस नश्वर देह का त्याग किया और हम सभी को रोता-बिलखता छोड गये।

शासन देव से यही प्रार्थना है कि पू. गुरुदेव की आत्मा को चिर शांति प्राप्त हो और आपके पट्टधारी पू. आ. श्री कलाप्रभसूरिश्वर जी म.सा. शासन प्रभावना के कार्य करते हुए आप के नाम को दिन दूना और रात चौगुना करें और लगभग 750 साध्वियों व 30 गुरु भगवन्तों के विशाल समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हुए जिन शासन को चमकायें।

आप गुरुओं की आज्ञानुसार इस वर्ष जयपुर श्री संघ को पू.सा. श्री दिनमणि श्री जी आदि ठाणा-5 का अनूठा चातुर्मास करवाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इस महान उपकार के लिये समस्त जयपुर श्री संघ आपका हार्दिक आभारी है। जब गुरु शासन को चमकाते हैं तो शिष्याएं पीछे क्यों?

आप सभी गुरु भगवन्तों का असीम व मंगल आशीर्वाद हम सभी को सतत् मिलता रहे, आपकी करुणामयी दृष्टि श्रीसंघ पर सदा बनी रहे और श्रीसंघ भी देव गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा विनय व समर्पण भाव में उत्तरोत्तर वृद्धि करता रहे, इसी मंगल भावना के साथ मैं पूज्य गुरुदेव के चरणों में शतः शतः वंदन करते हुए श्रद्धा सुमन समर्पित करती हूँ।

141, जय जवान कॉलोनी-II, जयपुर-18

गुरुदेव की अमूल्य श्रद्धा, विनय एवं भक्ति का परिचय वि.सं. 2028 के चातुर्मास में हमको देखने को मिला । प.पू. देवेन्द्र सूरिश्वर जी म.सा. वृद्धावस्था और पांव में फैक्चर से स्थिरवास रहे । लाकडीया गांव में चातुर्मास में रसिकभाई बापूलाल जी की ओर से छःरी पालित संघ का आयोजन हुआ । संघ के अग्रणियों ने पन्यास श्री कलापूर्ण सूरिजी को आचार्य पदवी प्रदान करने की भावना प्रगट की । उत्तर में आचार्य भगवंत ने कहा-"मैं तो कितनी बार कहता हूँ लेकिन पन्यास जी मेरा कहना मानते नहीं हैं । यह शब्द सुनते ही पूज्य पन्यास जी का हृदय अंदर से तडपने लगा । सरल स्वभावी गुरु के मुख से मेरे लिये ऐसे वचन? अग्रणी श्रावकों की विनती और गुरुदेव की आज्ञा शिरोमान्य कर, पू. श्री को कच्छ में आचार्य पदवी प्रदान की गई ।

वि.सं. 2039 के अहमदाबाद के शांति नगर में चातुर्मास में व्याख्यान वाचस्पति आचार्यदेव श्रीमद्‌विजय रामचन्द सूरि जी म.सा. के उद्‌गार थे प्रभु भक्ति, अध्यात्म भावना चाहिये तो आचार्य कलापूर्ण सूरि के पास जाओ । पूज्य श्री ने नम्र बनकर जहां से मिले ग्रहण करने का प्रयत्न किया ।

आचार्य श्री पहले तो कच्छ, गुजरात, राजस्थान में प्रसिद्ध थे । अंतिम छः साल में मद्रास, बेंगलोर, कोयम्बतुर, सोलापुर, राजनांद गांव में चातुर्मास करके अद्वितीय शासन प्रभावना की । मद्रास के उपनगरों में अनेकों अंजनशलाका, प्रतिष्ठाएं करवाई । मद्रास में चंदा प्रभु जिनालय की अतिभव्य अंजनशलाका, प्रतिष्ठा महोत्सव देश-विदेश में विख्यात है ।

पूज्य आचार्य श्री के दर्शन के लोग दिवाने थे । सर्वत्र आचार्य श्री भगवान की तरह छा गये थे ।

पूज्य आचार्य देव आदि साधुवृंद फलौदी नगर से चातुर्मास पूर्ण कर छःरी पालित संघ के साथ नाकोडा पहुंचे । वहां बस एक ही रट "प्रभु तुं...ही...तुंही...बस एक तुं ही, प्रभु भक्ति में अपने आपको भी भूल जाते थे । नरसिंह मेहता, मीरां की प्रभु भक्ति की याद ताजा हो जाती थी ।

नाकोडाजी से विहार कर छोटे-छोटे गांवों को लाभान्वित करते-करते केशवणा की धरती को पावन करने गुरुदेव पधारे । लेकिन भवितव्यता कुछ और हो थी । केशवणा में गुरुदेव अस्वस्थ हो गये और सिद्ध भगवंत का स्मरण करते करते मोक्ष के अनन्त सुख की ओर प्रयाण कर गये ।

ऐसे भव्य जीवन से स्व पर कल्याण के शिखर को प्राप्त करने वाले अध्यात्मयोगी पू. आचार्य भगवंत के चरणों में कोटि-कोटि वंदना...भावभीनी श्रद्धांजलि...

सोंथली वालो का रास्ता, जयपुर

गुरुदेव की अमूल्य श्रद्धा, विनय एवं भक्ति का परिचय वि.सं. 2028 के चातुर्मास में हमको देखने को मिला । प.पू. देवेन्द्र सूरिश्वर जी म.सा. वृद्धावस्था और पांव में फैक्चर से स्थिरवास रहे । लाकडीया गांव में चातुर्मास में रसिकभाई बापूलाल जी की ओर से छःरी पालित संघ का आयोजन हुआ । संघ के अग्रणियों ने पन्यास श्री कलापूर्ण सूरिजी को आचार्य पदवी प्रदान करने की भावना प्रगट की । उत्तर में आचार्य भगवंत ने कहा-''मैं तो कितनी बार कहता हूॅ लेकिन पन्यास जी मेरा कहना मानते नहीं हैं । यह शब्द सुनते ही पूज्य पन्यास जी का हृदय अंदर से तडपने लगा । सरल स्वभावी गुरु के मुख से मेरे लिये ऐसे वचन? अग्रणी श्रावकों की विनती और गुरुदेव की आज्ञा शिरोमान्य कर, पू. श्री को कच्छ में आचार्य पदवी प्रदान की गई ।

वि.सं. 2039 के अहमदाबाद के शांति नगर में चातुर्मास में व्याख्यान वाचस्पति आचार्यदेव श्रीमद्विजय रामचन्द सूरि जी म.सा. के उद्‌गार थे प्रभु भक्ति, अध्यात्म भावना चाहिये तो आचार्य कलापूर्ण सूरि के पास जाओ । पूज्य श्री ने नम्र बनकर जहां से मिले ग्रहण करने का प्रयत्न किया ।

आचार्य श्री पहले तो कच्छ, गुजरात, राजस्थान में प्रसिद्ध थे । अंतिम छः साल में मद्रास, बेंगलोर, कोयम्बतुर, सोलापुर, राजनांद गांव में चातुर्मास करके अद्वितीय शासन प्रभावना की । मद्रास के उपनगरों में अनेकों अंजनशलाका, प्रतिष्ठाएं करवाई । मद्रास में चंदा प्रभु जिनालय की अतिभव्य अंजनशलाका, प्रतिष्ठा महोत्सव देश-विदेश में विख्यात है ।

पूज्य आचार्य श्री के दर्शन के लोग दिवाने थे । सर्वत्र आचार्य श्री भगवान की तरह छा गये थे ।

पूज्य आचार्य देव आदि साधुवृंद फलौदी नगर से चातुर्मास पूर्ण कर छःरी पालित संघ के साथ नाकोडा पहुंचे । वहां बस एक ही रट ''प्रभु तुं...ही...तुंही...बस एक तुं ही, प्रभु भक्ति में अपने आपको भी भूल जाते थे । नरसिंह मेहता, मीरां की प्रभु भक्ति की याद ताजा हो जाती थी ।

नाकोडाजी से विहार कर छोटे-छोटे गांवों को लाभान्वित करते-करते केशवणा की धरती को पावन करने गुरुदेव पधारे । लेकिन भवितव्यता कुछ और हो थी । केशवणा में गुरुदेव अस्वस्थ हो गये और सिद्ध भगवंत का स्मरण करते करते मोक्ष के अनन्त सुख की ओर प्रयाण कर गये ।

ऐसे भव्य जीवन से स्व पर कल्याण के शिखर को प्राप्त करने वाले अध्यात्मयोगी पू. आचार्य भग्वंत के चरणों में कोटि-कोटि वंदना...भावभीनी श्रद्धांजलि...

सोंथली वालो का रास्ता, जयपुर

जितनी आसानी से भोजन पचता है रात को खाया हुआ उतनी आसानी से नहीं पचता। आजकल के वैज्ञानिक डाक्टर तो यहां तक कहते हैं, शाम को 7 बजे के बाद दूध भी नहीं पीना चाहिए, क्योंकि उसे भी रात के समय हजम होने में देर लगती है तो भोजन की तो बात ही क्या? परन्तु आधुनिक सभ्यता के दीवाने निशाचर सभ्यता के प्रतीक बन गये हैं। दिन में दो बार भोजन करना आजकल के युवकों को पसन्द कहां है ? रात को 10-11-12 बजे भोजन करके सोते हैं। जब रात को इतनी देर से खाना खायेंगे तो कब पानी पीयेंगे ? खाये हुए भोजन को पचाने में पानी बहुत जरूरी होता है। इस प्रकार रात को खाने से पाचन शक्ति बिगडती है। बदहजमी होती है और उससे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। सब रोगों की जड है कब्ज या बदहजमी। रात को भोजन करने से ये दोनों बीमारियां जड पकडती हैं। इसलिए यह आयुर्वेद का सिद्धान्त विज्ञान सम्मत है कि रात को खाने से हाजमा बिगडता है और रोग बढते हैं। आरोग्य का नाश होता है।

2. दूसरी बात - जो वैज्ञानिक कहते हैं - रात के समय में अनेक प्रकार के सूक्ष्म कीटाणु वैक्टीरिया पैदा होते हैं। जो साधारण आँखों से दिखाई भी नहीं देते। वैक्टीरिया हमारे खाद्य पदार्थों पर भी आक्रमण करते हैं, कुछ वैक्टीरिया तो इतने धीठ हैं, जो साधारणतया अग्नि पर पकाये जाने पर भी नष्ट नहीं होते। वे केवल सूर्य के प्रकाश से ही नष्ट होते हैं। वे विषाणु वैक्टीरिया आपके मूल्यवान - स्वादिष्ट भोजन को भी जहरीला बना देते हैं और यह ऐसा जहरीला भोजन पेट में जाकर शक्ति - बल बढाने के स्थान पर आपकी शक्ति को खाता जायेगा। रोगों की वृद्धि करेगा। इस प्रकार विज्ञान और आयुर्वेद की दृष्टि से रात्रि भोजन स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं।

3. प्राकृतिक दृष्टि से भी रात्रि भोजन त्याज्य है। आप देखते हैं सामान्य रूप में पशु-पक्षी सन्ध्या होने के साथ ही अपने-अपने घौसलो मे, नीडों में या दडवों में चले जाते हैं। रात भर वे न तो कुछ खाते हैं, और न ही जल पीते हैं। प्रातः सूर्योदय होने पर ही वे चार-पानी दाना चुगने निकलते हैं। इससे पता चलता है कि दिन में भोजन और रात में विश्राम यही प्रकृति का सहज क्रम है। रात को या तो हिंसक पशु अपना शिकार ढूंढने निकलते है या फिर आधुनिक वातावरण में रहने वाले शहरी पशु ही रात को खाते है। मनुष्य के लिए प्राकृतिक एवं स्वाभाविक नियम यही है कि वह रात में विश्राम करे, भजन-भक्ति ध्यान आदि में लीन रहे और दिन में श्रम करें।

पुराणों में अलंकारिक भाषा में बताया है - देवैस्तु भुक्तं पुर्वान्हे, मध्यान्हे ऋषिभिस्तथा।... दिन के बारह बजे तक

जितनी आसानी से भोजन पचता है रात को खाया हुआ उतनी आसानी से नहीं पचता। आजकल के वैज्ञानिक डाक्टर तो यहां तक कहते हैं, शाम को 7 बजे के बाद दूध भी नहीं पीना चाहिए, क्योंकि उसे भी रात के समय हजम होने में देर लगती है तो भोजन की तो बात ही क्या? परन्तु आधुनिक सभ्यता के दीवाने निशाचर सभ्यता के प्रतीक बन गये हैं। दिन में दो बार भोजन करना आजकल के युवकों को पसन्द कहां है ? रात को 10-11-12 बजे भोजन करके सोते हैं। जब रात को इतनी देर से खाना खायेंगे तो कब पानी पीयेंगे ? खाये हुए भोजन को पचाने में पानी बहुत जरूरी होता है। इस प्रकार रात को खाने से पाचन शक्ति बिगडती है। बदहजमी होती है और उससे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। सब रोगों की जड है कब्ज या बदहजमी। रात को भोजन करने से ये दोनों बीमारियां जड पकडती हैं। इसलिए यह आयुर्वेद का सिद्धान्त विज्ञान सम्मत है कि रात को खाने से हाजमा बिगडता है और रोग बढते हैं। आरोग्य का नाश होता है।

2. दूसरी बात - जो वैज्ञानिक कहते हैं - रात के समय में अनेक प्रकार के सूक्ष्म कीटाणु वैक्टीरिया पैदा होते हैं। जो साधारण आँखों से दिखाई भी नहीं देते। वैक्टीरिया हमारे खाद्य पदार्थों पर भी आक्रमण करते हैं, कुछ वैक्टीरिया तो इतने धीठ हैं, जो साधारणतया अग्नि पर पकाये जाने पर भी नष्ट नहीं होते। वे केवल सूर्य के प्रकाश से ही नष्ट होते हैं। वे विषाणु वैक्टीरिया आपके मूल्यवान - स्वादिष्ट भोजन को भी जहरीला बना देते हैं और यह ऐसा जहरीला भोजन पेट में जाकर शक्ति - बल बढाने के स्थान पर आपकी शक्ति को खाता जायेगा। रोगों की वृद्धि करेगा। इस प्रकार विज्ञान और आयुर्वेद की दृष्टि से रात्रि भोजन स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं।

3. प्राकृतिक दृष्टि से भी रात्रि भोजन त्याज्य है। आप देखते हैं सामान्य रूप में पशु-पक्षी सन्ध्या होने के साथ ही अपने-अपने घौसलो मे, नीडों में या दडवों में चले जाते हैं। रात भर वे न तो कुछ खाते हैं, और न ही जल पीते हैं। प्रातः सूर्योदय होने पर ही वे चार-पानी दाना चुगने निकलते हैं। इससे पता चलता है कि दिन में भोजन और रात में विश्राम यही प्रकृति का सहज क्रम है। रात को या तो हिंसक पशु अपना शिकार ढूंढने निकलते है या फिर आधुनिक वातावरण में रहने वाले शहरी पशु ही रात को खाते है। मनुष्य के लिए प्राकृतिक एवं स्वाभाविक नियम यही है कि वह रात में विश्राम करे, भजन-भक्ति ध्यान आदि में लीन रहे और दिन में श्रम करें।

पुराणों में अलंकारिक भाषा में बताया है - देवैस्तु भुक्तं पुर्वान्हे, मध्यान्हे ऋषिभिस्तथा।... दिन के बारह बजे तक

भोजन में इस प्रकार जीव जन्तु चले जाने से अनेक महारोग उत्पन्न हो जाते हैं । इस प्रकार जीव हिंसा भी होती है और अनेक दुःसाध्य रोगों की उत्पत्ति होती है। इन सभी दोषों के कारण जैन परम्परा में रात को भोजन करने का पूर्ण निषेध है। प्राचीन समय में जैनों की पहचान थी कि जैन कौन ? जो रात को भोजन नहीं करते । वैदिक धर्म के ग्रन्थों में भी रात्रि भोजन को राक्षसी भोजन कहा है। मानव मात्र के लिए रात को खाना पाप और रोग उत्पत्ति का कारण माना गया है।

6. अध्यात्म दृष्टि से रात्रि भोजन त्यागना बहुत बडा तप का लाभ माना गया है। आचार्यो ने कहा है-

ये रात्रौ सर्वदाहार वर्जयन्ति सुमेधसः।
तेषां पक्षोपवासस्य फलं मासेन जायते ।

जो व्यक्ति एक महीने रात्रि भोजन का त्याग करता है, उसे महीने में पंद्रह दिन के तप का लाभ मिलता है। कितना बडा तप है यह ? और इतना सहज । बिना किसी कष्ट के सहज रूप में रात्रि भोजन त्यागने से आप 15 दिन की तपस्या का फल भी पा सकते हैं। वैदिक ग्रंथों में कहा है-

एक भक्ताशनान्नित्य अग्नि होत्र फलं भवेत् ।
अनस्तभोजनो नित्यं तीर्थयात्रा फलं लभेत् ।

जो व्यक्ति दोपहर में एक समय ही भोजन करता है, वह अग्निहोत्र यज्ञ का फल प्राप्त करता है, और जो रात्रि में भोजन नहीं करता वह घर बैठे ही तीर्थयात्रा का पुण्य-फल पा लेता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन धर्म में रात्रि भोजन का जो निषेध है उसके पीछे आरोग्य की दृष्टि भी है, अहिंसा की दृष्टि भी है और तप की दृष्टि भी है । तीनों ही दृष्टियों से रात्रि भोजन त्याज्य है । रात्रि भोजन को नरक का कारण भी माना है । कहा गया है- जो रात्रि भोजन करता है, राक्षस उसका भोजन करते हैं । वह नरक में जाता है और घोर कष्ट व पीडा भोगता है ।

उपसंहार

आहार शुद्धि के विषय में जैन आचार्यो ने अनेक दृष्टियों से विचार किया है। उसमें हिताहार-मिताहार का भी विशेष महत्त्व है । जो खाये वह हितकारी एवं स्वास्थ्य लाभ देने वाला हो । इसी के साथ अल्पमात्रा में खायें । भूख से कम, पेट की शक्ति से कम खायें । सामान्यतः पेट के चार भाग जल के लिए और एक भाग वायु संचरण के लिए रखना चाहिए। जो आदमी भूख से आधे पेट भोजन करता है वह कभी बीमार नहीं पडता।

डाक्टरों के अनुसार हल्का और अल्पमात्रा में भोजन करने से पचाने के लिए पेट को और रक्त संचार के लिए हृदय को भी कम श्रम करना पडता है इसलिए उस आदमी का हृदय अधिक दिन तक कार्य क्षम रहता है और स्वस्थ भी रहता है ।

तैत्तिरीय उपनिषद् में एक मंत्र है-

भोजन में इस प्रकार जीव जन्तु चले जाने से अनेक महारोग उत्पन्न हो जाते हैं । इस प्रकार जीव हिंसा भी होती है और अनेक दुःसाध्य रोगों की उत्पत्ति होती है । इन सभी दोषों के कारण जैन परम्परा में रात को भोजन करने का पूर्ण निषेध है । प्राचीन समय में जैनों की पहचान थी कि जैन कौन ? जो रात को भोजन नहीं करते । वैदिक धर्म के ग्रन्थों में भी रात्रि भोजन को राक्षसी भोजन कहा है । मानव मात्र के लिए रात को खाना पाप और रोग उत्पत्ति का कारण माना गया है।

6. अध्यात्म दृष्टि से रात्रि भोजन त्यागना बहुत बडा तप का लाभ माना गया है। आचार्यो ने कहा है-

ये रात्रौ सर्वदाहार वर्जयन्ति सुमेधसः।
तेषां पक्षोपवासस्य फलं मासेन जायते ।

जो व्यक्ति एक महीने रात्रि भोजन का त्याग करता है, उसे महीने में पंद्रह दिन के तप का लाभ मिलता है । कितना बडा तप है यह ? और इतना सहज । बिना किसी कष्ट के सहज रूप में रात्रि भोजन त्यागने से आप 15 दिन की तपस्या का फल भी पा सकते हैं। वैदिक ग्रंथों में कहा है-

एक भक्ताशनान्नित्य अग्नि होत्र फलं भवेत् ।
अनस्तभोजनो नित्यं तीर्थयात्रा फलं लभेत् ।

जो व्यक्ति दोपहर में एक समय ही भोजन करता है, वह अग्निहोत्र यज्ञ का फल प्राप्त करता है, और जो रात्रि में भोजन नहीं करता वह घर बैठे ही तीर्थयात्रा का पुण्य-फल पा लेता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन धर्म में रात्रि भोजन का जो निषेध है उसके पीछे आरोग्य की दृष्टि भी है, अहिंसा की दृष्टि भी है और तप की दृष्टि भी है । तीनों ही दृष्टियों से रात्रि भोजन त्याज्य है । रात्रि भोजन को नरक का कारण भी माना है । कहा गया है-जो रात्रि भोजन करता है, राक्षस उसका भोजन करते हैं । वह नरक में जाता है और घोर कष्ट व पीडा भोगता है ।

उपसंहार

आहार शुद्धि के विषय में जैन आचार्यो ने अनेक दृष्टियों से विचार किया है। उसमें हिताहार-मिताहार का भी विशेष महत्त्व है । जो खाये वह हितकारी एवं स्वास्थ्य लाभ देने वाला हो । इसी के साथ अल्पमात्रा में खायें । भूख से कम, पेट की शक्ति से कम खायें । सामान्यतः पेट के चार भाग जल के लिए और एक भाग वायु संचरण के लिए रखना चाहिए । जो आदमी भूख से आधे पेट भोजन करता है वह कभी बीमार नहीं पडता।

डाक्टरों के अनुसार हल्का और अल्पमात्रा में भोजन करने से पचाने के लिए पेट को और रक्त संचार के लिए हृदय को भी कम श्रम करना पडता है इसलिए उस आदमी का हृदय अधिक दिन तक कार्य क्षम रहता है और स्वस्थ भी रहता है ।

तैत्तिरीय उपनिषद् में एक मंत्र है-

आत्म-शुद्धि में बाधक-राग-द्वेष

-प.पू. आ. देव श्रीमद्विजय जिनोत्तमसूरीश्वर जी म.सा.

धर्मप्रेमी महानुभावों !

आत्म-साधना के मार्ग में ही नहीं अपितु सामाजिक जीवन में भी अशांति का कारण राग-द्वेष ही है। मानव-मन के अनुकूल जब विषयों की प्राप्ति होती है तो 'राग' की उत्पत्ति होती है तथा जब मानव-मन के प्रतिकूल विषयों एवं अवस्थाओं की प्राप्ति होती है तो द्वेष भावना का उदय होता है जब एक व्यक्ति या वस्तु के प्रति राग होता है तो साथ ही किसी न किसी व्यक्ति या वस्तु के साथ द्वेष-भावना भी अवश्य होती है। ये राग-द्वेष की जोडी, मनुष्य के जीवन में जहर घोलती है। जीवन में अशांति एवं अव्यवस्था फैलाती है, जिससे कि सामान्य जन जीवन दूषित हो जाता है फिर अध्यात्म जगत की तो बात ही क्या है ?

भारतीय साधना-पद्धति में राग-द्वेष दोनों को ही दूषित तत्त्व बताया गया है। ये दोनों तत्त्व हमें अपने नैतिक पथ से भ्रष्ट कर देते हैं। जब तक हमारी आँखों पर राग या द्वेष का चश्मा लगा रहता है, तब तक हम तत्वार्थ निर्णय नहीं कर सकते। वस्तु के स्वरूप को नही पहचान सकते, क्योंकि तत्वार्थ निर्णय के लिए निष्पक्ष धारणा आवश्यक है। यदि रागात्मक या द्वेषात्मक धारणा पहले से ही बनी हुई है तो फिर तत्त्वार्थ-निर्णय कैसे हो सकता है ?

अध्यात्म के प्रसंग में इनके विद्यमान रहते आत्म-साधना सफल नही हो सकती। राग से कामनाओं, इच्छाओं की उत्पत्ति होती है तथा द्वेष से क्रोध की उत्पत्ति होती है।

सङ्गात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते। *(गीता-२/६२)*

अर्थात् आसक्ति से विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पडने पर क्रोध उत्पन्न होता है। यहां प्रश्न उठता है कि क्रोध का कारण राग अर्थात् काम है या द्वेष? उत्तर है-दोनों ही, क्योंकि काम तो क्रोध का निमित्त कारण है तथा द्वेष उपादान कारण।

आसक्ति का ही दूसरा पर्याय है-राग। राग से रंजित मनुष्य का मानस अनेक कामनाओं के प्रति आकर्षित रहता है। उन

आत्म-शुद्धि में बाधक-राग-द्वेष

-प.पू. आ. देव श्रीमद्विजय जिनोत्तमसूरीश्वर जी म.सा.

धर्मप्रेमी महानुभावों !

आत्म-साधना के मार्ग में ही नहीं अपितु सामाजिक जीवन में भी अशांति का कारण राग-द्वेष ही है। मानव-मन के अनुकूल जब विषयों की प्राप्ति होती है तो 'राग' की उत्पत्ति होती है तथा जब मानव-मन के प्रतिकूल विषयों एवं अवस्थाओं की प्राप्ति होती है तो द्वेष भावना का उदय होता है जब एक व्यक्ति या वस्तु के प्रति राग होता है तो साथ ही किसी न किसी व्यक्ति या वस्तु के साथ द्वेष-भावना भी अवश्य होती है। ये राग-द्वेष की जोडी, मनुष्य के जीवन में जहर घोलती है। जीवन में अशांति एवं अव्यवस्था फैलाती है, जिससे कि सामान्य जन जीवन दूषित हो जाता है फिर अध्यात्म जगत की तो बात ही क्या है ?

भारतीय साधना-पद्धति में राग-द्वेष दोनों को ही दूषित तत्त्व बताया गया है। ये दोनों तत्त्व हमें अपने नैतिक पथ से भ्रष्ट कर देते है। जब तक हमारी आँखों पर राग या द्वेष का चश्मा लगा रहता है, तब तक हम तत्वार्थ निर्णय नहीं कर सकते। वस्तु के स्वरूप को नही पहचान सकते, क्योंकि तत्वार्थ निर्णय के लिए निष्पक्ष धारणा आवश्यक है। यदि रागात्मक या द्वेषात्मक धारणा पहले से ही बनी हुई है तो फिर तत्त्वार्थ-निर्णय कैसे हो सकता है ?

अध्यात्म के प्रसंग में इनके विद्यमान रहते आत्म-साधना सफल नही हो सकती। राग से कामनाओं, इच्छाओं की उत्पत्ति होती है तथा द्वेष से क्रोध की उत्पत्ति होती है।

सङ्गात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते। *(गीता-२/६२)*

अर्थात् आसक्ति से विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पडने पर क्रोध उत्पन्न होता है। यहां प्रश्न उठता है कि क्रोध का कारण राग अर्थात् काम है या द्वेष? उत्तर है-दोनों ही, क्योंकि काम तो क्रोध का निमित्त कारण है तथा द्वेष उपादान कारण।

आसक्ति का ही दूसरा पर्याय है-राग। राग से रंजित मनुष्य का मानस अनेक कामनाओं के प्रति आकर्षित रहता है। उन

पुण्यवानों ! हमें अनुकूलता में हर्ष और प्रतिकूलता में विषाद होता है। चिन्ता, भय, शोक, ईर्ष्या-ये सब द्वेष के कारण होते हैं। पक्षपात, कामान्धता आदि राग के कारण उत्पन्न होते हैं इसलिए अनुकूल-प्रतिकूल वृत्तियों का नाश होने से सारे विकारों का नाश होकर, मनुष्य में स्वाभाविक समता-वृत्ति आ जाती है। उसके लिए हर्ष-विषाद, लाभ-हानि आदि में समता ही प्रतीत होती है। वह किसी को अच्छा या बुरा नहीं मानता। उसके लिए सब समान हो जाते हैं।

भारतीय संस्कृति में तो समता के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला गया है। समता भाव में वह अमोघ शक्ति है जो कि शत्रु को भी मित्र बना देती है। ''यह तेरा है, यह मेरा है'' भाव विषमता पैदा करता है। परन्तु भारतीय संस्कृति तो सबको समता-दर्शन का पाठ पढाती है। यह अपना है, यह पराया है-इस प्रकार की भावना तो तुच्छ पुरुष रखते हैं, किन्तु समता-धारकों के लिए तो सारा विश्व ही समान है। कहा भी है-

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्वकम् ॥

समताधारियों की दृष्टि में किसी प्रकार की विषमता का समावेश नही हो सकता। समता-योग का सर्वोच्च सोपान है, जिस पर चढने के पश्चात् आत्म-दर्शन सहज एवं स्वाभाविक हो जाता है। भगवान महावीर ने समता को अपने जीवन का महनीय अंग बनाकर समता के अनेक सुन्दर उपदेश दिये हैं, जिनको यदि जीवन में उतार लिया जाये तो जीवन ज्योतिर्मय हो जायेगा।

आया तुले पयासु
(सू.कृ.श्रु.१ अ.११ गा.३)

अर्थात् अपनी आत्मा के समान सबकी आत्मा को समझो। जो व्यक्ति अपनी आत्मा के समान ही सबकी आत्मा को समझेगा, वह भला कैसे किसी को कष्ट दे सकेगा? किसी से कैसे द्वेष कर सकेगा ? प्राणीमात्र को सुख अनुकूल लगता है तथा दुःख प्रतिकूल। संसार में कोई मरना नहीं चाहता, सब जीना चाहते हैं। समता के विषय में व्यासजी ने भी ऐसे ही विचार दिए हैं-

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्

अर्थात् अपने को प्रतिकूल कष्टप्रद लगने वाले कार्यो को दूसरों के लिए मत करो।

भगवान महावीर ने तो शत्रु अथवा मित्र सभी प्राणियों के विषय में समभाव रखने के लिए अहिंसा की परिभाषा में ही स्वीकार किया है, साथ ही यह भी कहा है कि आजीवन किसी भी प्राणी की मन, वचन काया से हिंसा न करना एक दुष्कर व्रत है-

समया सव्व भूएसु, सत्तु मित्तेसु वा जगे ।
पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करम् ॥
(उत्तरा.अ.१९ गा.२५)

सत्य की सफलता भी समता पर अवलम्बित है। समताधारी मानव कभी

पुण्यवानों ! हमें अनुकूलता में हर्ष और प्रतिकूलता में विषाद होता है । चिन्ता, भय, शोक, ईर्ष्या-ये सब द्वेष के कारण होते हैं । पक्षपात, कामान्धता आदि राग के कारण उत्पन्न होते हैं इसलिए अनुकूल-प्रतिकूल वृत्तियों का नाश होने से सारे विकारों का नाश होकर, मनुष्य में स्वाभाविक समता-वृत्ति आ जाती है । उसके लिए हर्ष-विषाद, लाभ-हानि आदि में समता ही प्रतीत होती है। वह किसी को अच्छा या बुरा नहीं मानता। उसके लिए सब समान हो जाते हैं ।

भारतीय संस्कृति में तो समता के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला गया है । समता भाव में वह अमोघ शक्ति है जो कि शत्रु को भी मित्र बना देती है । ''यह तेरा है, यह मेरा है'' भाव विषमता पैदा करता है । परन्तु भारतीय संस्कृति तो सबको समता-दर्शन का पाठ पढाती है । यह अपना है, यह पराया है-इस प्रकार की भावना तो तुच्छ पुरुष रखते हैं, किन्तु समता-धारकों के लिए तो सारा विश्व ही समान है । कहा भी है-

अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्वकम् ॥

समताधारियों की दृष्टि में किसी प्रकार की विषमता का समावेश नही हो सकता । समता-योग का सर्वोच्च सोपान है, जिस पर चढ़ने के पश्चात् आत्म-दर्शन सहज एवं स्वाभाविक हो जाता है । भगवान महावीर ने समता को अपने जीवन का महनीय अंग बनाकर समता के अनेक सुन्दर उपदेश दिये हैं, जिनको यदि जीवन में उतार लिया जाये तो जीवन ज्योतिर्मय हो जायेगा ।

आया तुले पयासु

(सू.कृ.श्रु.१ अ.११ गा.३)

अर्थात् अपनी आत्मा के समान सबकी आत्मा को समझो । जो व्यक्ति अपनी आत्मा के समान ही सबकी आत्मा को समझेगा, वह भला कैसे किसी को कष्ट दे सकेगा? किसी से कैसे द्वेष कर सकेगा ? प्राणीमात्र को सुख अनुकूल लगता है तथा दुःख प्रतिकूल । संसार में कोई मरना नहीं चाहता, सब जीना चाहते हैं । समता के विषय में व्यासजी ने भी ऐसे ही विचार दिए हैं-

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्

अर्थात् अपने को प्रतिकूल कष्टप्रद लगने वाले कार्यो को दूसरों के लिए मत करो ।

भगवान महावीर ने तो शत्रु अथवा मित्र सभी प्राणियों के विषय में समभाव रखने के लिए अहिंसा की परिभाषा में ही स्वीकार किया है, साथ ही यह भी कहा है कि आजीवन किसी भी प्राणी की मन, वचन काया से हिंसा न करना एक दुष्कर व्रत है-

समया सव्व भूएसु, सत्तु मित्तेसु वा जगे ।
पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करम् ॥

(उत्तरा.अ.१९ गा.२५)

सत्य की सफलता भी समता पर अवलम्बित है । समताधारी मानव कभी

चाहने वाला, द्वेषी तथा बन्धुगणों में धर्मात्माओं और पापियों में समभाव रखने वाला निश्चित श्रेष्ठ महापुरुष है।

कितना सुन्दर प्रतिपादन है-शास्त्रों में, समतायोगी का। ऐसी समता आने पर अवकाश ही कहां है, विषमता को ठहरने का। राग-द्वेष के सभी रास्ते बंद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जो अपूर्व शांति सुख एवं आनन्द की अनुभूति होती है, वह आत्मा की सहज अभिव्यक्ति है। समता की प्रतिष्ठा में आत्मा का स्वरूप निखरने लगता है। समता में वह शक्ति है जिससे विषमता की कडियां, संकीर्णता की भावनाएं टूटने लगती हैं, बिखरने लगती हैं। उनका नामोनिशान तक नहीं रहता। सर्वत्र समता का सूर्य चमकने लगता है।

आज मानव-जीवन में जितनी समस्याएं हैं, जितनी विसंगतियां हैं, जितनी हलचल एवं विरोध की संभावनाएं हैं, जितनी अशांतियाँ हैं, उन्हें विज्ञान की अनुसंधानात्मक प्रवृत्तियाँ शांत नहीं कर सकतीं, क्योंकि उनका अनुसंधान बहिर्मुखी है। बहिर्जगत् को देकर प्रवृत्त होता है, आज का भौतिक विज्ञान। अशांतियां बाहर की नहीं अन्तर की हैं। विरोध अन्तस्तल में है। विसंगतियां शारीरिक नहीं मानसिक हैं। उनका निदान तथा शोधन आत्म-विज्ञान से ही सम्भव है। अतः आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है कि हम अपनी अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति को आध्यात्मिक बनायें, तभी विषमताएं दूर होंगी तथा आत्मा एवं परमात्मा में भेद प्रतीति नहीं होगी-

तुझ में मुझ में भेद न पाऊँ, ऐसा हो सन्धान।
अजर-अमर अखिलेश निरंजन, जयंति सिद्ध भगवान्॥

ये पंक्तियाँ, यदि हमारे जीवन का आदर्श बन जाएं तो 'तेरे मेरे' का भेद दूर हो जायेगा, मिट जायेगा, समता प्रतिष्ठित हो जायेगी। समता की प्रतिष्ठा में जो सुख है, वह सुख भौतिकता में कहां ? किन्तु ये समता प्राप्त होगी-निष्काम भाव से, कर्म फलाफल की लाभ-अलाभ की आसक्ति मूर्च्छा के त्याग के बाद। कहा भी है-

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्ण-सुखदुखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी, सन्तुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिः, भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥

इतना ही नहीं गीता में विस्तारपूर्वक इसकी विवेचना है, जिससे कोई भी जीव क्लेश या उद्वेग को प्राप्त नहीं होता और जो स्वयं भी किसी जीव से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता तथा हर्ष, अमर्ष, भय उद्वेग आदि से रहित होता है, वही परमात्मा का श्रेष्ठ भक्त है, जिसकी कोई आकांक्षा नहीं है। जो बाह्याभ्यन्तर शुद्धि से सम्पन्न है, पक्षपात रति, दुःखों से विमुक्त, वह आरम्भ-समारम्भ का परित्यागी अर्थात् मन-वाणी तथा शरीर द्वारा प्रारम्भ से होने वाले सम्पूर्ण स्वाभाविक कर्मों में कर्त्तापन के अभिमान का त्यागी, जो

चाहने वाला, द्वेषी तथा बन्धुगणों में धर्मात्माओं और पापियों में समभाव रखने वाला निश्चित श्रेष्ठ महापुरुष है।

कितना सुन्दर प्रतिपादन है-शास्त्रों में, समतायोगी का। ऐसी समता आने पर अवकाश ही कहां है, विषमता को ठहरने का। राग-द्वेष के सभी रास्ते बंद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जो अपूर्व शांति सुख एवं आनन्द की अनुभूति होती है, वह आत्मा की सहज अभिव्यक्ति है। समता की प्रतिष्ठा में आत्मा का स्वरूप निखरने लगता है। समता में वह शक्ति है जिससे विषमता की कड़ियां, संकीर्णता की भावनाएं टूटने लगती हैं, बिखरने लगती हैं। उनका नामोनिशान तक नहीं रहता। सर्वत्र समता का सूर्य चमकने लगता है।

आज मानव-जीवन में जितनी समस्याएं हैं, जितनी विसंगतियां हैं, जितनी हलचल एवं विरोध की संभावनाएं हैं, जितनी अशांतियॉ हैं, उन्हें विज्ञान की अनुसंधानात्मक प्रवृत्तियॉ शांत नहीं कर सकतीं, क्योंकि उनका अनुसंधान बहिर्मुखी है। वहिर्जगत् को देकर प्रवृत्त होता है, आज का भौतिक विज्ञान। अशांतियां बाहर की नहीं अन्तर की हैं। विरोध अन्तस्तल में है। विसंगतियां शारीरिक नहीं मानसिक हैं। उनका निदान तथा शोधन आत्म-विज्ञान से ही सम्भव है। अतः आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है कि हम अपनी अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति को आध्यात्मिक बनायें, तभी विषमताएं दूर होंगी तथा आत्मा एवं परमात्मा में भेद प्रतीति नहीं होगी-

तुझ में मुझ में भेद न पाऊँ, ऐसा हो सन्धान।
अजर-अमर अखिलेश निरंजन, जयति सिद्ध भगवान्॥

ये पंक्तियॉ, यदि हमारे जीवन का आदर्श बन जाएं तो 'तेरे मेरे' का भेद दूर हो जायेगा, मिट जायेगा, समता प्रतिष्ठित हो जायेगी। समता की प्रतिष्ठा में जो सुख है, वह सुख भौतिकता में कहां ? किन्तु ये समता प्राप्त होगी-निष्काम भाव से, कर्म फलाफल की लाभ-अलाभ की आसक्ति मूर्च्छा के त्याग के बाद। कहा भी है-

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्ण-सुखदुखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी, सन्तुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिः, भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥

इतना ही नहीं गीता में विस्तारपूर्वक इसकी विवेचना है, जिससे कोई भी जीव क्लेश या उद्वेग को प्राप्त नहीं होता और जो स्वयं भी किसी जीव से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता तथा हर्ष, अमर्ष, भय उद्वेग आदि से रहित होता है, वही परमात्मा का श्रेष्ठ भक्त है, जिसकी कोई आकांक्षा नहीं है। जो बाह्याभ्यन्तर शुद्धि से सम्पन्न है, पक्षपात रति, दुःखों से विमुक्त, वह आरम्भ-समारम्भ का परित्यागी अर्थात् मन-वाणी तथा शरीर द्वारा प्रारम्भ से होने वाले सम्पूर्ण स्वाभाविक कर्मों में कर्त्तापन के अभिमान का त्यागी, जो

कठोर वचनों से आक्रोश करे, तिरस्कृत करे तब भी भिक्षु को उन पर क्रोध नहीं करना चाहिए, क्योंकि क्रोध से भिक्षु भी उस अज्ञानी के समान हो जाता है। अतः मन को शांत रखना चाहिए।

भगवान ने केवल ऐसा उपदेश ही नहीं दिया, अपितु उनका समस्त जीवन समता का एक ज्वलन्त उदाहरण है-

श्रमण भगवान महावीर के जीवन में तप, तितिक्षा और धन की त्रिवेणी का संगम था। वे कठोर तप के साथ ध्यान के शान्त प्रकोष्ठ में प्रवेश करके अन्तर्लीन हो जाते—ऐसे प्रसंगों में अनेक देव, पिशाच, क्रूर पशु एवं हिंसक मनुष्य उन पर प्राणान्तक आक्रमण करते-कोई सहज स्वभाव के कारण, कोई द्वेषवश, किन्तु महावीर उन उपसर्गों को शान्त-दान्त, निष्क्लान्त भाव से अन्तर्लीन होकर सहन करते थे।

गोशाल की बला से मुक्त होकर श्रमण भगवान महावीर ने विविध तप करते हुए श्रावस्ती नगरी में वर्षावास किया। यहां पर उन्होंने ध्यान योग की अनेक प्रक्रियाओं द्वारा साधना को और प्रखर बनाया। चातुर्मासोपरान्त प्रभु ने कठोर सर्दी में भद्र, महाभद्र तथा सर्वतो भद्र की कठोर तपश्चरण विधि स्वीकार की और साथ ही ध्यान की श्रेष्ठतम श्रेणी पर आरूढ हुए। तभी का एक प्रसंग मैं आपको बता रहा हूँ—

तीन दिन का उपवास करके श्रमण भगवान महावीर पेढाल उद्यान में कायोत्सर्ग करके खडे थे और उत्कृष्ट ध्यान-प्रतिमा में लीन थे। तन, मन और प्राण स्थिर थे, वे अकम्प वज्रसंकल्पी की भांति ध्यानस्थ थे। इस अपूर्व ध्यानलीनता को देखकर देवराज इन्द्र भी गद्गद् होकर बोले—''आज ध्यान धीरता और तितिक्षा में श्रमण वर्धमान महावीर की कोई तुलना नहीं है। कोई देव या दानव इनकी निश्चलता को भंग नहीं कर सकता।'' देवताओं की सभा में उस समय संगम नामक एक देव उपस्थित था जो कि ईर्ष्यालु एवं अहंकारी था। उसने कहा-''देवराज के मुख से मनुष्य की प्रशंसा शोभा नहीं देती, यह मिथ्या स्तुति केवल श्रद्धातिरेक का प्रदर्शन है। मनुष्य में क्षमता ही नहीं कि वह देवशक्ति के सामने टिक सके। यदि आप हस्तक्षेप न करें तो मैं इसकी परीक्षा करके महावीर को ध्यानच्युत कर सकता हूँ।'' देवराज मौन रहे। संगम पेढाल उद्यान पहुँचा। अचानक सायं-सायं की आवाज से दिशाएं कांप उठीं। भयंकर धूल भरी आंधी से महावीर के शरीर पर मिट्टी का ढेर जम गया। ऑख, नाक, कान और पूरा शरीर धूल से दब गया पर महावीर ने अपने निश्चय के अनुसार ऑख की पलकें भी बंद नहीं कीं।

आंधी बंद हुई कि वज्र जैसे तीक्ष्ण मुँह वाली चींटियां चारों ओर से महावीर के शरीर को बुरी तरह से काटने लगीं, लेकिन महावीर का मन वज्र-सा दृढ रहा।

कठोर वचनों से आक्रोश करे, तिरस्कृत करे तब भी भिक्षु को उन पर क्रोध नहीं करना चाहिए, क्योंकि क्रोध से भिक्षु भी उस अज्ञानी के समान हो जाता है। अतः मन को शांत रखना चाहिए।

भगवान ने केवल ऐसा उपदेश ही नहीं दिया, अपितु उनका समस्त जीवन समता का एक ज्वलन्त उदाहरण है-

श्रमण भगवान महावीर के जीवन में तप, तितिक्षा और धान की त्रिवेणी का संगम था। वे कठोर तप के साथ ध्यान के शान्त प्रकोष्ठ में प्रवेश करके अन्तर्लीन हो जाते—ऐसे प्रसंगों में अनेक देव, पिशाच, क्रूर पशु एवं हिंसक मनुष्य उन पर प्राणान्तक आक्रमण करते-कोई सहज स्वभाव के कारण, कोई द्वेषवश, किन्तु महावीर उन उपसर्गों को शान्त-दान्त, निष्क्लान्त भाव से अन्तर्लीन होकर सहन करते थे।

गोशाल की बला से मुक्त होकर श्रमण भगवान महावीर ने विविध तप करते हुए श्रावस्ती नगरी में वर्षावास किया। यहां पर उन्होंने ध्यान योग की अनेक प्रक्रियाओं द्वारा साधना को और प्रखर बनाया। चातुर्मासोपरान्त प्रभु ने कठोर सर्दी में भद्र, महाभद्र तथा सर्वतो भद्र की कठोर तपश्चरण विधि स्वीकार की और साथ ही ध्यान की श्रेष्ठतम श्रेणी पर आरूढ हुए। तभी का एक प्रसंग मैं आपको बता रहा हूँ—

तीन दिन का उपवास करके श्रमण भगवान महावीर पेढाल उद्यान में कायोत्सर्ग करके खडे थे और उत्कृष्ट ध्यान-प्रतिमा में लीन थे। तन, मन और प्राण स्थिर थे, वे अकम्प वज्रसंकल्पी की भांति ध्यानस्थ थे। इस अपूर्व ध्यानलीनता को देखकर देवराज इन्द्र भी गद्‌गद् होकर बोले—''आज ध्यान धीरता और तितिक्षा में श्रमण वर्धमान महावीर की कोई तुलना नहीं है। कोई देव या दानव इनकी निश्चलता को भंग नहीं कर सकता।'' देवताओं की सभा में उस समय संगम नामक एक देव उपस्थित था जो कि ईर्ष्यालु एवं अहंकारी था। उसने कहा-''देवराज के मुख से मनुष्य की प्रशंसा शोभा नहीं देती, यह मिथ्या स्तुति केवल श्रद्धातिरेक का प्रदर्शन है। मनुष्य में क्षमता ही नहीं कि वह देवशक्ति के सामने टिक सके। यदि आप हस्तक्षेप न करें तो मैं इसकी परीक्षा करके महावीर को ध्यानच्युत कर सकता हूँ।'' देवराज मौन रहे। संगम पेढाल उद्यान पहुँचा। अचानक सायं-सायं की आवाज से दिशाएं कांप उठीं। भयंकर धूल भरी आंधी से महावीर के शरीर पर मिट्टी का ढेर जम गया। ऑख, नाक, कान और पूरा शरीर धूल से दब गया पर महावीर ने अपने निश्चय के अनुसार ऑख की पलकें भी बंद नहीं कीं।

आंधी बंद हुई कि वज्र जैसे तीक्ष्ण मुँह वाली चींटियां चारों ओर से महावीर के शरीर को बुरी तरह से काटने लगी, लेकिन महावीर का मन वज्र-सा दृढ रहा।

बढते हुए माया-लोभ ये चारों काले कुत्सित कषाय पुनर्जन्म रूपी संसार वृक्ष की जडों को सींचते हैं ।

राग के मार्ग में बाधा पडने पर क्रोध उत्पन्न होता है । क्रोध में तमागुण की अधिकता होती है इसमें मानव, दानव बन जाता है । मानव का सन्तुलन बिगड जाता है। क्रोध के कारण कई अनर्थ हो जाते हैं ।

अक्सर देखा जाता है कि मनुष्य जिस कर्म को बुद्धि द्वारा बुरा समझता है, उसे करना भी नहीं चाहता फिर भी छोड नहीं पाता और जिस काम को अच्छा समझता उसे करना चाहता है, किन्तु उसे कर नहीं पाता। इस प्रकार त्याज्य कर्म को न त्यागना तथा कर्त्तव्य को न करना-प्रमाद कहलाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष, झूठ, कपट, चोरी, हिंसा, व्यभिचार आदि दुराचारों का त्याग न करने से ज्ञान, वैराग्य, सद्गुण, सदाचार, योग, भक्ति का आचरण न करने से मनुष्य में दोष ही दोष उत्पन्न होने लगते हैं।

पाण्डव गीता में कहा है—

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः ।
केनापि देवेन हृदि स्थितेन
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥

अर्थात् मैं धर्म को जानता हूँ, परन्तु मेरी उसमें प्रवृत्ति नहीं होती । मैं अधर्म को जानता हूँ किन्तु उससे मेरी निवृत्ति नहीं होती, किन्तु मेरे हृदय में कोई ऐसी शक्ति है जो मुझे जैसा प्रेरित करती है, मैं वैसा ही करता हूँ—यह उक्ति दुर्योधन की है । यह ठोस सिद्धान्त नहीं है, क्योंकि जो धर्म, अधर्म का विवेकी पुरुष होगा वह कभी भ्रान्त दशा में नहीं रहेगा। मन के दास तो अविवेकी पुरुष ही होते हैं, ज्ञानी नहीं । यही दुर्योधन जैसी दशा है तो वस्तुतः हम धर्म, अधर्म तत्त्व को जानते ही नहीं । आज के मानव की स्थिति तो जरूर इस श्लोक में प्रतिबिम्बित है ही ।

अर्जुन ने कृष्ण से पूछा है-

अथ केन प्रयुक्तोऽयम्, पापं चरति पुरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय ! बलिदिव नियोजितः ॥

हे कृष्ण ! तो फिर यह मनुष्य जबरदस्ती नियोजित की भांति किससे प्रेरित होकर पाप का आचरण करता है?

कृष्ण ने उत्तर दिया-

काम एष क्रोध एष रजोगुण-समुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम् ॥

(गीता/३-३७)

अर्थात् रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है । यह ही महाअशन अर्थात् अग्नि के सदृश भोगों से न तृप्त होने वाला बडा पापी है- दुराचरण में प्रवृत्त करवाने में तुम इसे ही अपना शत्रु समझो ।

ज्ञानी महापुरुषों ने कहा है-काम, लोभ, मान, मोह आदि मानव के शरीरस्थ शत्रु हैं । यदि किसी भी प्रकार से इन पर मनुष्य विजय प्राप्त कर ले तो उसे किसी

बढते हुए माया-लोभ ये चारों काले कुत्सित कषाय पुनर्जन्म रूपी संसार वृक्ष की जडों को सींचते हैं।

राग के मार्ग में बाधा पडने पर क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध में तमागुण की अधिकता होती है इसमें मानव, दानव बन जाता है। मानव का सन्तुलन बिगड जाता है। क्रोध के कारण कई अनर्थ हो जाते हैं।

अक्सर देखा जाता है कि मनुष्य जिस कर्म को बुद्धि द्वारा बुरा समझता है, उसे करना भी नहीं चाहता फिर भी छोड नहीं पाता और जिस काम को अच्छा समझता उसे करना चाहता है, किन्तु उसे कर नहीं पाता। इस प्रकार त्याज्य कर्म को न त्यागना तथा कर्त्तव्य को न करना-प्रमाद कहलाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष, झूठ, कपट, चोरी, हिंसा, व्यभिचार आदि दुराचारों का त्याग न करने से ज्ञान, वैराग्य, सद्गुण, सदाचार, योग, भक्ति का आचरण न करने से मनुष्य में दोष ही दोष उत्पन्न होने लगते हैं।

पाण्डव गीता में कहा है—

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
केनापि देवेन हृदि स्थितेन
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि॥

अर्थात् मैं धर्म को जानता हूँ, परन्तु मेरी उसमें प्रवृत्ति नहीं होती। मैं अधर्म को जानता हूँ किन्तु उससे मेरी निवृत्ति नहीं होती, किन्तु मेरे हृदय में कोई ऐसी शक्ति है जो मुझे जैसा प्रेरित करती है, मैं वैसा ही करता हूँ—यह उक्ति दुर्योधन की है। यह ठोस सिद्धान्त नहीं है, क्योंकि जो धर्म, अधर्म का विवेकी पुरुष होगा वह कभी भ्रान्त दशा में नहीं रहेगा। मन के दास तो अविवेकी पुरुष ही होते हैं, ज्ञानी नहीं। यही दुर्योधन जैसी दशा है तो वस्तुतः हम धर्म, अधर्म तत्त्व को जानते ही नहीं। आज के मानव की स्थिति तो जरूर इस श्लोक में प्रतिबिम्बित है ही।

अर्जुन ने कृष्ण से पूछा है-

अथ केन प्रयुक्तोऽयम्, पापं चरति पुरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय! बलिदिव नियोजितः॥

हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य जबरदस्ती नियोजित की भांति किससे प्रेरित होकर पाप का आचरण करता है?

कृष्ण ने उत्तर दिया-

काम एष क्रोध एष रजोगुण-समुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम्॥

(गीता/३-३७)

अर्थात् रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है। यह ही महाअशन अर्थात् अग्नि के सदृश भोगों से न तृप्त होने वाला बडा पापी है- दुराचरण में प्रवृत्त करवाने में तुम इसे ही अपना शत्रु समझो।

ज्ञानी महापुरुषों ने कहा है-काम, लोभ, मान, मोह आदि मानव के शरीरस्थ शत्रु हैं। यदि किसी भी प्रकार से इन पर मनुष्य विजय प्राप्त कर ले तो उसे किसी

छोडकर अपने जीवन को जंजाल बना लेते हैं। अशांति/टेंशन में जीवन-यापन करते हैं। अतः आवश्यक है कि राग-द्वेषात्मक आसुरी सम्पद् को छोडें, क्योंकि ये नरक के द्वार हैं।

त्रिविध नरकस्येदं, द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय! तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्॥

राग-द्वेष के कारण उत्पन्न काम, क्रोध, लोभ रूपी आसुरी सम्पदा नरक का द्वार है। यह आत्मा को पतन के गर्त में ले जाती है। अतः आत्म-कल्याण-साधक व्यक्ति को इससे मुक्त होकर, आत्म-स्वरूप को प्राप्त करना चाहिए।

पुण्यवानों! मेरे कहने का, विश्लेषण का तात्पर्य यह है कि राग-द्वेष आध्यात्मिक जगत् के लिए ही नहीं, अपितु मानवता के प्रति भी अभिशाप हैं। इनसे मानव की वृत्तियां दूषित होती हैं। विषयों के प्रति आसक्ति बढती है। आसक्ति से कामनाएं उत्पन्न होती हैं। कामनाओं की पूर्ति में बाधा आने पर द्वेष, क्रोध की भावना भडकती है। अतः राग-द्वेष सारे अनर्थों की जड हैं। आश्चर्य तो यह है कि मानव यह सब जानता हुआ भी अनजान है कि राग-द्वेष हमारे शत्रु हैं, क्योंकि जब भी उसकी इन्द्रियों का सम्पर्क विषयों से होता है तो भौतिक आनन्द की अनुभूति होती है और वह भटक जाता है। राग का चश्मा उसके नेत्रों पर लग जाता है। राग के चश्में से उसे दृश्यमान जगत् अपना/आत्मीय प्रतीत होता है, वह दीवाना हो जाता है। उसे विषय आनन्ददायक प्रतीत होते हैं। राग के पथ में बाधक तत्त्वों की उपस्थिति के होते ही द्वेष की भावना भडकती है। बस, वह इसी प्रकार बारम्बार राग-द्वेष में लीन रहता है। साध्य-बिन्दु से भटक जाता है। बस! यह भटकाव ही उसके लिए खतरनाक है। आप स्वयं सोच सकते हैं कि राही यदि रास्ते से भटक जाये तो क्या वह मंजिल पा सकता है? नहीं! तो ठीक यही दशा राग-द्वेष के कारण आत्म-पथ से भटके हुए मानव की भी है। वह आत्म-पथ से भटक कर शांति नहीं पा सकता, आत्म-दर्शन आत्मानन्द नहीं प्राप्त कर सकता।

राग-द्वेषजयी, वीतराग प्रभु के चरणों में भाव-वन्दन।

चातुर्मास
श्री सम्मेदशिखर जी तीर्थ

किसी को गाली देने की जगह वाणी में माधुर्य लाओ। चेहरे पर लाई जाने वाली मुस्कान और वाणी में रहने वाली मिठास अपनी ओर से दिया जाने वाला सम्माननीय उपहार है।

छोडकर अपने जीवन को जंजाल बना लेते हैं। अशांति/टेंशन में जीवन-यापन करते हैं। अतः आवश्यक है कि राग-द्वेषात्मक आसुरी सम्पद् को छोडें, क्योंकि ये नरक के द्वार हैं।

त्रिविध नरकस्येदं, द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय! तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्॥

राग-द्वेष के कारण उत्पन्न काम, क्रोध, लोभ रूपी आसुरी सम्पदा नरक का द्वार है। यह आत्मा को पतन के गर्त में ले जाती है। अतः आत्म-कल्याण-साधक व्यक्ति को इससे मुक्त होकर, आत्म-स्वरूप को प्राप्त करना चाहिए।

पुण्यवानों! मेरे कहने का, विश्लेषण का तात्पर्य यह है कि राग-द्वेष आध्यात्मिक जगत् के लिए ही नहीं, अपितु मानवता के प्रति भी अभिशाप हैं। इनसे मानव की वृत्तियां दूषित होती हैं। विषयों के प्रति आसक्ति बढती है। आसक्ति से कामनाएं उत्पन्न होती हैं। कामनाओं की पूर्ति में बाधा आने पर द्वेष, क्रोध की भावना भडकती है। अतः राग-द्वेष सारे अनर्थों की जड हैं। आश्चर्य तो यह है कि मानव यह सब जानता हुआ भी अनजान है कि राग-द्वेष हमारे शत्रु हैं, क्योंकि जब भी उसकी इन्द्रियों का सम्पर्क विषयों से होता है तो भौतिक आनन्द की अनुभूति होती है और वह भटक जाता है। राग का चश्मा उसके नेत्रों पर लग जाता है। राग के चश्में से उसे दृश्यमान जगत् अपना/आत्मीय प्रतीत होता है, वह दीवाना हो जाता है। उसे विषय आनन्ददायक प्रतीत होते हैं। राग के पथ में बाधक तत्त्वों की उपस्थिति के होते ही द्वेष की भावना भडकती है। बस, वह इसी प्रकार बारम्बार राग-द्वेष में लीन रहता है। साध्य-बिन्दु से भटक जाता है। बस! यह भटकाव ही उसके लिए खतरनाक है। आप स्वयं सोच सकते हैं कि राही यदि रास्ते से भटक जाये तो क्या वह मंजिल पा सकता है? नहीं! तो ठीक यही दशा राग-द्वेष के कारण आत्म-पथ से भटके हुए मानव की भी है। वह आत्म-पथ से भटक कर शांति नहीं पा सकता, आत्म-दर्शन आत्मानन्द नहीं प्राप्त कर सकता।

राग-द्वेषजयी, वीतराग प्रभु के चरणों में भाव-वन्दन।

चातुर्मास
श्री सम्मेदशिखर जी तीर्थ

किसी को गाली देने की जगह वाणी में माधुर्य लाओ। चेहरे पर लाई जाने वाली मुस्कान और वाणी में रहने वाली मिठास अपनी ओर से दिया जाने वाला सम्माननीय उपहार है।

उपदेश देते हुए कहा था कि-''बाहर के शत्रु शत्रु नहीं है, शत्रु तो आत्मा के भीतर में है, वे है-राग, द्वेष, काम, क्रोध, मोह-लोभ। इसे जीतने का प्रयत्न करना चाहिए।''

''वास्तव में ये भौतिक पदार्थो की लालसा ही हमारी आत्मा की दुश्मन है, जो बाहरी व्यक्ति को दुश्मन होने का कहती है। सत्य यह है कि-''अप्पाणमेव जुज्जाही, किं वे जुज्जेण बज्जओ'' अर्थात्-राग-द्वेष, काम-क्रोध, मोह-लोभ वाली आत्मा ही शत्रु है, उसके साथ युद्ध करना चाहिए, नाशवंत धन, राज्य, सोना आदि के लिए युद्ध करना निस्सार- बेकार है।''

ऐसा उपदेश सुनकर 98 पुत्रों ने युद्ध का विचार छोडकर, चारित्र-संयम-दीक्षा लेकर अंतरशत्रु पर विजय प्राप्त कर केवलज्ञान प्राप्त किया था और शाश्वत मोक्षलक्ष्मी पाई थी।

24 तीर्थंकरों का-''जीव मात्र को थोडी सी भी पीडा नहीं करना यानी अहिंसा, भौतिक लालसा का त्याग यानी अपरिग्रह, सत्य (अस्तेय), अचौर्य व ब्रह्मचर्य स्वरूप'' इन पंचशील के उपदेशों का भारतीय जनता पर इतना गहरा प्रभाव पडा है कि-भारतीय जन जन में ''जीओ और जीने दो'' का नारा गूंज रहा है। अहिंसा, अपरिग्रह आदि पंचशील का प्रभाव इतना हुआ है कि- एक भी राजा ने- एक भी भारतीय ने कभी विदेश में जाकर किसी से लडाई नहीं की है, हां शील-सदाचार-सत्यादि मूल्यों के लिए लडाई लडनी भी पडी तो लडाई की है, किन्तु जमीन, धन, वैभव को लूटने के लिए कोई भारतीय विदेश नहीं गया है।

जैनियों की पंचशील के विषय में प्रेम-मैत्री-स्नेह भाव की इतनी विशाल भावना है कि Live or Let Live जीओ और जीने दो की शुभ भावना से भी आगे बढकर दूसरों के लिए जीओ, यह उत्तम भावना है। गाय व शेर, बाघ और बकरी, सांप-नउला, चूहा-बिल्ली, परस्पर वैर भूल जाएं ऐसी भावना जैनियों की है, कि इस विश्व में नफरत मात्र का नाश हो व प्रेम-मैत्रीभाव बढे।

जैनाचार्यो का योगदान

जैनियों के ज्ञानी, त्यागी, संयमी, तपस्वी गुरु-जैनाचार्यों आदि मुनियों ने पवित्र आचार-विचार का प्रचार-प्रसार किया है, देश की ज्ञान संपत्ति में अपार वृद्धि की है। जैसे-

❑ 14 पूर्वधर श्री भद्रबाहु स्वामी ने जैनागमों व सूत्रों पर निर्युक्तियां रचकर ज्ञान के खजाने को समझने में सरल बनाया है।

❑ 10 पूर्वधर श्री उमास्वाति म. ने तत्वार्थसूत्र व प्रशमरति जैसे संस्कृति रक्षक व शुद्ध आचारवर्धक महान ग्रंथ दिये है।

❑ श्री शीलांकाचार्य ने ग्यारह अंगों पर विशेष टीकाएं रचकर ज्ञानमार्ग को पुष्ट किया है।

❑ श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरिजी ने प्रमाणनयतत्वालोकालंकार, द्वादशारनयचक्र

उपदेश देते हुए कहा था कि-''बाहर के शत्रु शत्रु नहीं है, शत्रु तो आत्मा के भीतर में है, वे है-राग, द्वेष, काम, क्रोध, मोह-लोभ। इसे जीतने का प्रयत्न करना चाहिए।''

''वास्तव में ये भौतिक पदार्थो की लालसा ही हमारी आत्मा की दुश्मन है, जो बाहरी व्यक्ति को दुश्मन होने का कहती है। सत्य यह है कि-''अप्पाणमेव जुज्जाही, किं वे जुज्जेण बज्जओ'' अर्थात्-राग-द्वेष, काम-क्रोध, मोह-लोभ वाली आत्मा ही शत्रु है, उसके साथ युद्ध करना चाहिए, नाशवंत धन, राज्य, सोना आदि के लिए युद्ध करना निस्सार- बेकार है।''

ऐसा उपदेश सुनकर 98 पुत्रों ने युद्ध का विचार छोडकर, चारित्र-संयम-दीक्षा लेकर अंतरशत्रु पर विजय प्राप्त कर केवलज्ञान प्राप्त किया था और शाश्वत मोक्षलक्ष्मी पाई थी।

24 तीर्थंकरों का-''जीव मात्र को थोडी सी भी पीडा नहीं करना यानी अहिंसा, भौतिक लालसा का त्याग यानी अपरिग्रह, सत्य (अस्तेय), अचौर्य व ब्रह्मचर्य स्वरूप'' इन पंचशील के उपदेशों का भारतीय जनता पर इतना गहरा प्रभाव पडा है कि-भारतीय जन जन में ''जीओ और जीने दो'' का नारा गूंज रहा है। अहिंसा, अपरिग्रह आदि पंचशील का प्रभाव इतना हुआ है कि- एक भी राजा ने- एक भी भारतीय ने कभी विदेश में जाकर किसी से लडाई नहीं की है, हां शील-सदाचार-सत्यादि मूल्यों के लिए लडाई लडनी भी पडी तो लडाई की है, किन्तु जमीन, धन, वैभव को लूटने के लिए कोई भारतीय विदेश नहीं गया है।

जैनियों की पंचशील के विषय में प्रेम-मैत्री-स्नेह भाव की इतनी विशाल भावना है कि Live or Let Live जीओ और जीने दो की शुभ भावना से भी आगे बढकर दूसरों के लिए जीओ, यह उत्तम भावना है। गाय व शेर, बाघ और बकरी, सांप-नउला, चूहा-बिल्ली, परस्पर वैर भूल जाएं ऐसी भावना जैनियों की है, कि इस विश्व में नफरत मात्र का नाश हो व प्रेम-मैत्रीभाव बढे।

जैनाचार्यो का योगदान

जैनियों के ज्ञानी, त्यागी, संयमी, तपस्वी गुरु-जैनाचार्यों आदि मुनियों ने पवित्र आचार-विचार का प्रचार-प्रसार किया है, देश की ज्ञान संपत्ति में अपार वृद्धि की है। जैसे-

- 14 पूर्वधर श्री भद्रबाहु स्वामी ने जैनागमों व सूत्रों पर निर्युक्तियां रचकर ज्ञान के खजाने को समझने में सरल बनाया है।
- 10 पूर्वधर श्री उमास्वाति म. ने तत्वार्थसूत्र व प्रशमरति जैसे संस्कृति रक्षक व शुद्ध आचारवर्धक महान ग्रंथ दिये है।
- श्री शीलांकाचार्य ने ग्यारह अंगों पर विशेष टीकाएं रचकर ज्ञानमार्ग को पुष्ट किया है।
- श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरिजी ने प्रमाणनयतत्वालोकालंकार, द्वादशारनयचक्र

देखकर जैन बना था । उसने देश की संस्कृति में दया, दान व उदारता से सविशेष प्राण फूंका था ।

❐ आम राजा ने आचार्य श्री बप्पभट्टसूरिजी के सदुपदेश से लोकहित के कार्य किये थे ।

❐ गुजरात के राजा कुमारपाल ने आचार्य श्री हेमचंद्रसूरीश्वर जी के सदुपदेश से अपने 17 प्रदेशों में अहिंसा का डंका बजाया था, सात व्यसनों को गधे पर बिठाकर देशपार किया था और पांच हजार मंदिर बनवाये थे ।

❐ राजा हर्ष ने आचार्य श्री मानतुंगसूरिजी म. के बेडी टूटने व भक्तामर स्तोत्र रचे जाने के आश्चर्य से प्रभावित होकर जैन धर्म के प्रति अनुराग वाला बना था और जनहित के कार्य किये थे ।

❐ गुजरात का राजा सिद्धराज जयसिंह भी जैन धर्म से प्रभावित हुआ था ।

जैन मंत्री-दीवान का देश में योगदान

❐ वस्तुपाल-तेजपाल जैन मंत्रियों ने राजा वीरधवल के कर्णावती राज्य को मुस्लिम आक्रमणों से बचाया था । इन भाइयों ने विश्व प्रसिद्ध देलवाडा के जिनालय का निर्माण कर भारतीय शिल्प कला में चार चांद लगाये हैं ।

❐ भामाशाह नाम के जैन मंत्री ने अपनी लाखों की सम्पत्ति मेवाड सूर्य के महाराणा प्रताप के चरणों में समर्पित कर दी थी, जिससे 12 वर्ष तक 25 हजार की सेना का पालन-पोषण हो सका था, जिसके कारण संस्कृति की अपार रक्षा हो सकी थी ।

❐ मेवाड के मंत्री दयाल शाह ने भी अनेक जनोपयोगी कार्य किये थे और दयालशा किले पर विशाल चौमुखजी जिनालय का निर्माण करवाया था ।

❐ मंत्री पेथडशाह ने अकाल के तीन वर्ष तक पूरे भारतवर्ष को अपने कोठारों से अनाज देकर अकाल से जनता को बचाया था ।

❐ मंत्री विमलशाह ने आबू व अचलगढ पर विश्वप्रसिद्ध जिनालय निर्माण करवाये थे ।

❐ मांडवगढ के मंत्री पेथडशाह ने भी अनेक जनोपयोगी कार्य किये थे ।

❐ आज भी जैनियों द्वारा अनेक जीवदया, अनुकम्पा के कार्य होते हैं गोशाला-पिंजरापोल में प्रतिदिन एक करोड से भी अधिक रुपयों का खर्च जैन ही करते हैं ।

जैन श्रावकों का देश में योगदान

❐ जैन धर्म के सिद्धांतों से प्रभावित होकर इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध नाट्यकार/विचारक जार्ज बर्नाड शॉ ने मांसाहार तक त्याग दिया था । उन्होंने पुनःजन्म में जैन बनने की इच्छा व्यक्त की थी ।

❐ महात्मा गांधी को ईसाई (क्रिश्चियन) बनते हुए श्रीमद्‌राजचंद्र ने रोका था । श्रीमद् राजचंद्र को महात्मा गांधी अपने गुरु के रूप में मानते थे ।

देखकर जैन बना था। उसने देश की संस्कृति में दया, दान व उदारता से सविशेष प्राण फूंका था।

❑ आम राजा ने आचार्य श्री बप्पभट्टसूरिजी के सदुपदेश से लोकहित के कार्य किये थे।

❑ गुजरात के राजा कुमारपाल ने आचार्य श्री हेमचंद्रसूरीश्वर जी के सदुपदेश से अपने 17 प्रदेशों में अहिंसा का डंका बजाया था, सात व्यसनों को गधे पर बिठाकर देशपार किया था और पांच हजार मंदिर बनवाये थे।

❑ राजा हर्ष ने आचार्य श्री मानतुंगसूरिजी म. के बेडी टूटने व भक्तामर स्तोत्र रचे जाने के आश्चर्य से प्रभावित होकर जैन धर्म के प्रति अनुराग वाला बना था और जनहित के कार्य किये थे।

❑ गुजरात का राजा सिद्धराज जयसिंह भी जैन धर्म से प्रभावित हुआ था।

जैन मंत्री-दीवान का देश में योगदान

❑ वस्तुपाल-तेजपाल जैन मंत्रियों ने राजा वीरधवल के कर्णावती राज्य को मुस्लिम आक्रमणों से बचाया था। इन भाइयों ने विश्व प्रसिद्ध देलवाडा के जिनालय का निर्माण कर भारतीय शिल्प कला में चार चांद लगाये हैं।

❑ भामाशाह नाम के जैन मंत्री ने अपनी लाखों की सम्पत्ति मेवाड सूर्य के महाराणा प्रताप के चरणों में समर्पित कर दी थी, जिससे 12 वर्ष तक 25 हजार की सेना का पालन-पोषण हो सका था, जिसके कारण संस्कृति की अपार रक्षा हो सकी थी।

❑ मेवाड के मंत्री दयाल शाह ने भी अनेक जनोपयोगी कार्य किये थे और दयालशा किले पर विशाल चौमुखजी जिनालय का निर्माण करवाया था।

❑ मंत्री पेथडशाह ने अकाल के तीन वर्ष तक पूरे भारतवर्ष को अपने कोठारों से अनाज देकर अकाल से जनता को बचाया था।

❑ मंत्री विमलशाह ने आबू व अचलगढ पर विश्वप्रसिद्ध जिनालय निर्माण करवाये थे।

❑ मांडवगढ के मंत्री पेथडशाह ने भी अनेक जनोपयोगी कार्य किये थे।

❑ आज भी जैनियों द्वारा अनेक जीवदया, अनुकम्पा के कार्य होते हैं गोशाला-पिंजरापोल में प्रतिदिन एक करोड से भी अधिक रुपयों का खर्च जैन ही करते हैं।

जैन श्रावकों का देश में योगदान

❑ जैन धर्म के सिद्धांतों से प्रभावित होकर इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध नाट्यकार/विचारक जार्ज बर्नाड शॉ ने मांसाहार तक त्याग दिया था। उन्होंने पुनःजन्म में जैन बनने की इच्छा व्यक्त की थी।

❑ महात्मा गांधी को ईसाई (क्रिश्चियन) बनते हुए श्रीमद्राजचंद्र ने रोका था। श्रीमद् राजचंद्र को महात्मा गांधी अपने गुरु के रूप में मानते थे।

धर्म

-मुनिवर्य श्री मणिरत्न सागर जी म.

मोक्ष के देव, गुरु और धर्म यह तीन मार्ग बताये गये हैं उनमे से धर्म तीसरा मार्ग है।

धर्म तत्व

जो नीच गति से जाते हुए जीव को रोककर उच्च गति में ले जाता है, सारांश जो मोक्ष की तरफ ले जाता है उसे धर्म कहते हैं।

धर्म के मूल प्रकार

(1) आध्यात्मिक धर्म (2) व्यावहारिक धर्म

(1) आध्यात्मिक धर्म—अनंत लक्षण, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चरित्र, अनंत क्रियादि है उसमें एकचित्त होना, लीन होना। उसके लिए व्यवहारिक धर्म की आवश्यकता है।

(2) व्यावहारिक धर्म—दान, शील, तप की भावना, इस प्रकार की करणी जैसे कि सामायिक, प्रतिक्रमण पौषध, गुरुभक्ति, स्वामीभक्ति, तीर्थयात्रा, जिनशासन में बताये हुए धर्म के कार्य करना उसे व्यवहारिक धर्म की आराधना समझना।

धर्म के दस नियम

(1) संयम—पांच इंद्रियों का निग्रह। जीव, हिंसादि पांच अव्रतों का त्याग। क्रोधादि चार कषायों पर जय पाना। मन-वचन काया को काबू में रखना।

(2) सत्य—कठोरता, परनिंदा, असभ्यता, संदिग्धता इत्यादि का त्याग और मधुर, उदार हितकारी, यथार्थ वचन का उपयोग।

(3) शौच—लोभ का अभाव।

(4) ब्रह्मचर्य—अब्रह्मचर्य का त्याग। व्रतों के पालन के लिए ज्ञानादि गुणों की वृद्धि के लिए और क्रोधादि कषायों का नाश करने के लिए गुरुकुल वास में बैठना।

(5) अकांचनता—शरीर की आसक्ति नहीं रखना।

(6) तप—मलीन कृतियों को निर्मल करने के लिए और आवश्यक वल रखने के लिए आत्मदमन करना।

(7) क्षमा—सहनशीलता, गुस्से को निर्माण न होने देना और गुस्सा आ जावे तो विवेकबल से उसका नाश करना।

(8) महत्ता—अंदर और वाहर की नम्रता और रूप बल, ऐश्वर्य और तप के अभिमान का त्याग करना।

धर्म

-मुनिवर्य श्री मणिरत्न सागर जी म.

मोक्ष के देव, गुरु और धर्म यह तीन मार्ग बताये गये हैं उनमे से धर्म तीसरा मार्ग है।

धर्म तत्व

जो नीच गति से जाते हुए जीव को रोककर उच्च गति में ले जाता है, सारांश जो मोक्ष की तरफ ले जाता है उसे धर्म कहते हैं।

धर्म के मूल प्रकार

(1) आध्यात्मिक धर्म (2) व्यावहारिक धर्म

(1) आध्यात्मिक धर्म—अनंत लक्षण, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चरित्र, अनंत क्रियादि है उसमें एकचित्त होना, लीन होना। उसके लिए व्यवहारिक धर्म की आवश्यकता है।

(2) व्यावहारिक धर्म—दान, शील, तप की भावना, इस प्रकार की करणी जैसे कि सामायिक, प्रतिक्रमण पौषध, गुरुभक्ति, स्वामीभक्ति, तीर्थयात्रा, जिनशासन में बताये हुए धर्म के कार्य करना उसे व्यवहारिक धर्म की आराधना समझना।

धर्म के दस नियम

(1) संयम—पांच इंद्रियों का निग्रह। जीव, हिंसादि पांच अव्रतों का त्याग। क्रोधादि चार कषायों पर जय पाना। मन-वचन काया को काबू में रखना।

(2) सत्य—कठोरता, परनिंदा, असभ्यता, संदिग्धता इत्यादि का त्याग और मधुर, उदार हितकारी, यथार्थ वचन का उपयोग।

(3) शौच—लोभ का अभाव।

(4) ब्रह्मचर्य—अब्रह्मचर्य का त्याग। व्रतों के पालन के लिए ज्ञानादि गुणों की वृद्धि के लिए और क्रोधादि कषायों का नाश करने के लिए गुरुकुल वास में बैठना।

(5) अकांचनता—शरीर की आसक्ति नहीं रखना।

(6) तप—मलीन कृतियों को निर्मल करने के लिए और आवश्यक वल रखने के लिए आत्मदमन करना।

(7) क्षमा—सहनशीलता, गुस्से को निर्माण न होने देना और गुस्सा आ जावे तो विवेकबल से उसका नाश करना।

(8) महत्ता—अंदर और वाहर की नम्रता और रूप बल, ऐश्वर्य और तप के अभिमान का त्याग करना।

मूर्ति : श्रेष्ठ आलंबन...

-गणिवर्य श्री पूर्णचन्द्रविजय जी म.
(आ. कलापूर्णसूरीजी म.सा. के शिष्य)

आराधना में आगे बढने के लिए...

उपासना में उज्जवलता लाने के लिए...

भक्ति में भव्यता का रंग प्रकट करने के लिए...

परमात्मा की मूर्ति एक सफल एवं पुष्ट आलंबन है ।

नयन और मन से सम्मिलित बन कर परमात्ममूर्ति को देखकर जो एक दिव्य भावना एवं भक्ति का पवित्र स्रोत भक्त आत्मा के अंतर पट पर प्रवाहित होता है उसका अद्‌भुत आनंद वही भक्त अनुभूत कर सकता है, उसे शब्द में संजोना बडा मुश्किल है ।

मूर्ति के प्रतिकृति, प्रतिमा, बिम्ब, अर्चा आदि पर्यायवाची नाम है जिसके माध्यम से ही हम यह रौद्र एवं दुःखपूर्ण भवसागर पार करने की क्षमता धारण कर सकते हैं ।

भवसागर को पार करना है, तिरना है तो प्रवहण नौका समान जिनमूर्ति है । साक्षात् प्रभु के विरह में प्रभु के जैसे ही कार्य करने की अप्रतिम शक्ति जिनमूर्ति में समाविष्ट है ।

कोई यदि प्रश्न करे कि बिना मूर्ति ही हम आराधना के क्षेत्र में प्रगति हासिल कर सकेंगे तो यह बात तथ्य से सम्मत नहीं है । जैसे अन्ध मनुष्य के लिए बिना लकडी का आलंबन माईलों का पंथ काटना अशक्य है वैसे ही भव जंगल के दुर्गम पंथ को को पार करना और मोक्ष मंजिल तक मूर्ति के आलंबन बिना पहुँचना सचमुच अशक्य है ।

मूर्ति से निराकार वस्तु हमारी बुद्धि से - समझने के लिए साकार बनती है ।

अलक्ष्य एवं परोक्ष वस्तु लक्ष्य एवं प्रत्यक्ष बन जाती है ।

परिकर रहित प्रतिमा सिद्धावस्था की एवं परिकर सहित प्रतिमा अरिहंतावस्था की प्रतीक है ।

जब उपासक भक्त योग मुद्रा में शांत रस भर प्रभु प्रतिमा के सन्मुख स्थिर हो जाता है, तब वह प्रभु में तन्मय - तदरूप बनकर प्रभु का दर्शन पूजन, अनुभव करता है । यह वास्तव में प्रभु प्रतिमा का प्रकृष्ट प्रभाव एवं उपकार है और उसकी श्रेष्ठ सफलता है ।

मूर्ति सिर्फ पाषाण ही नहीं है, उसे पत्थर कहना अयोग्य एवं अनुचित है । जब हम हमारे श्रद्धेय एवं पिता व्यक्ति की फोटु का भी कितना अदब या बहुमान रखते हैं, तो यह तो देवाधिदेव तीर्थंकर की प्रतिमा है, हमारे अनादि अनंतकाल के राग-द्वेषादि कल्मष एवं पापमल धोने वाली परम पवित्र मूर्ति है, उसके सामने कितना आदर एवं बहुमान भाव होना चाहिए ?

महान आचार्य प्रवर द्वारा अंजनशलाका के परम पवित्र मंत्रों से, प्रतिष्ठा विधि के आमान्य से, लक्षण एवं विधि विधान की प्रक्रिया से

मूर्ति : श्रेष्ठ आलंबन...

-गणिवर्य श्री पूर्णचन्द्रविजय जी म.
(आ. कलापूर्णसूरीजी म.सा. के शिष्य)

आराधना में आगे बढने के लिए...

उपासना में उज्जवलता लाने के लिए...

भक्ति में भव्यता का रंग प्रकट करने के लिए...

परमात्मा की मूर्ति एक सफल एवं पुष्ट आलंबन है ।

नयन और मन से सम्मिलित बन कर परमात्ममूर्ति को देखकर जो एक दिव्य भावना एवं भक्ति का पवित्र स्रोत भक्त आत्मा के अंतर पट पर प्रवाहित होता है उसका अद्‍भुत आनंद वही भक्त अनुभूत कर सकता है, उसे शब्द में संजोना बडा मुश्किल है ।

मूर्ति के प्रतिकृति, प्रतिमा, बिम्ब, अर्चा आदि पर्यायवाची नाम है जिसके माध्यम से ही हम यह रौद्र एवं दुःखपूर्ण भवसागर पार करने की क्षमता धारण कर सकते हैं ।

भवसागर को पार करना है, तिरना है तो प्रवहण नौका समान जिनमूर्ति है । साक्षात् प्रभु के विरह में प्रभु के जैसे ही कार्य करने की अप्रतिम शक्ति जिनमूर्ति में समाविष्ट है ।

कोई यदि प्रश्न करे कि बिना मूर्ति ही हम आराधना के क्षेत्र में प्रगति हासिल कर सकेंगे तो यह बात तथ्य से सम्मत नहीं है । जैसे अन्ध मनुष्य के लिए बिना लकडी का आलंबन माईलों का पंथ काटना अशक्य है वैसे ही भव जंगल के दुर्गम पंथ को को पार करना और मोक्ष मंजिल तक मूर्ति के आलंबन बिना पहुँचना सचमुच अशक्य है ।

मूर्ति से निराकार वस्तु हमारी बुद्धि से - समझने के लिए साकार बनती है ।

अलक्ष्य एवं परोक्ष वस्तु लक्ष्य एवं प्रत्यक्ष बन जाती है ।

परिकर रहित प्रतिमा सिद्धावस्था की एवं परिकर सहित प्रतिमा अरिहंतावस्था की प्रतीक है ।

जब उपासक भक्त योग मुद्रा में शांत रस भर प्रभु प्रतिमा के सन्मुख स्थिर हो जाता है, तब वह प्रभु में तन्मय - तदरूप बनकर प्रभु का दर्शन पूजन, अनुभव करता है । यह वास्तव में प्रभु प्रतिमा का प्रकृष्ट प्रभाव एवं उपकार है और उसकी श्रेष्ठ सफलता है ।

मूर्ति सिर्फ पाषाण ही नहीं है, उसे पत्थर कहना अयोग्य एवं अनुचित है । जब हम हमारे श्रद्धेय एवं पिता व्यक्ति की फोटु का भी कितना अदब या बहुमान रखते हैं, तो यह तो देवाधिदेव तीर्थंकर की प्रतिमा है, हमारे अनादि अनंतकाल के राग-द्वेषादि कल्मष एवं पापमल धोने वाली परम पवित्र मूर्ति है, उसके सामने कितना आदर एवं बहुमान भाव होना चाहिए ?

महान आचार्य प्रवर द्वारा अंजनशलाका के परम पवित्र मंत्रों से, प्रतिष्ठा विधि के आमान्य से, लक्षण एवं विधि विधान की प्रक्रिया से

घोषित किया था ।

मूर्ति में मनोवैज्ञानिक असर भी गहरा है, जो व्यक्ति के मन को भीतर तक छू लेता है। स्थूल से सूक्ष्म की ओर, प्रत्यक्ष से परोक्ष की ओर एवं संकीर्णता से कांचले में से निकल कर विशाल अंतर व्योम की ओर ले जाने की उसमें सक्षम शक्ति निहित है । पापी को पाप के गहरे अंधेरे में से निकालकर प्रभु मूर्ति पुण्य के प्रकाश की ओर ले जाने के लिए प्रभु मूर्ति में अद्भुत शक्ति है ।

नामदेव नामक लुटेरे के जीवन में भी प्रतिदिन परमात्ममूर्ति के सामने दस मिनट बैठने की प्रतिज्ञा से एक दिन ऐसा चमत्कार हुआ कि उसने सदैव के लिए खून, हत्या, लूट आदि सब पापों को तिलांजलि दे दी और वह संत नामदेव बन गया।

बैजु बावरा भी अपने प्रतिस्पर्धी एवं शत्रु संगीत सम्राट तानसेन का खून करना चाहता था लेकिन एक दिन वह किसी मंदिर में पहुंच गया और वहाँ प्रभुभक्ति में संगीत के माध्यम से ऐसा तल्लीन बन गया कि उसकी उसकी रौद्रभावना खत्म हो गई और उसने शत्रु तानसेन के साथ शत्रुता मिटा कर पक्का मित्र बना दिया। मन्त्रीश्वर पेथडशा ने आबू के पर्वतीय विभाग में सुवर्णसिद्धि को सफल करके जब वहाँ के रमणीय जिनमंदिर में वे आदीश्वर प्रभु की मूर्ति का दर्शन करते है तब उनकी सुवर्ण के प्रति मूर्च्छा खत्म हो जाती है और वहाँ प्रभु के सामने प्राप्त हुई सभी सुवर्ण महोरों का उपयोग सात क्षेत्र में ही करने का संकल्प करते हैं ।

मूर्ति की प्रभावकता के ऐसे कई हजारों प्रसंग भूतकाल के और वर्तमानकाल के है, जो कि अत्यंत प्रेरणादायक हैं ।

यह है मूर्ति की अद्भुत प्रभाविकता...।

यह है मूर्ति का मानसिक गहरा असर ।

मूर्ति एक आकार है, और आकार यानी - चित्र का सर्वथा असर है ।

बच्चों को पहले या आज प्राथमिक ज्ञान देने के लिए सचित्र पुस्तकों का उपयोग ही किया जाता है । सायन्स, भूगोल, हिस्टरी आदि कई विषयों को बडे विद्यार्थियों को सिखाने के लिए भी प्रचुरमात्रा में चित्र, आकार एवं नक्शे आदि का उपयोग किया जाता है। जैन धर्म के तत्वों को, पदार्थो को समझाने के लिए भी सचित्र पुस्तकों का उपयोग होने लगा है ।

कहा जाता है कि एक ओर हजार शब्द हैं और दूसरी ओर सिर्फ एक ही चित्र है तो दोनों में से ज्यादा असर किसका रहेगा । विज्ञापन एवं जाहेरातकला के विकास में भी आकार एवं चित्र की ही तो महत्ता है। अकाल के समय का करुण दृश्य एवं कत्लखाने के अतिकरुण चित्र एवं शाकाहार प्रदर्शनी आदि देखकर आज भी जनसमूह के दिल में अनुकंपा जीवदया की लागणी पुष्ट हो जाती है। चित्र का असर अधिक काल तक हमारे मन भीतर में गहरे रूप में अवस्थित रहता है। इसलिए तो कामुकता एवं वासना को भडकाने वाले चित्रों एवं दृश्य देखना ब्रह्मचर्य और जीवनशुद्धि के लिए नितांत वर्जित है । वर्तमान समय में पाश्चात्य अंध अनुकरण से या आधुनिक विलासभर वातावरण से जगह-जगह पर खराब एवं विकृत चित्र दृश्यमान होते जा रहे है ।

घोषित किया था ।

मूर्ति में मनोवैज्ञानिक असर भी गहरा है, जो व्यक्ति के मन को भीतर तक छू लेता है। स्थूल से सूक्ष्म की ओर, प्रत्यक्ष से परोक्ष की ओर एवं संकीर्णता से कांचले में से निकल कर विशाल अंतर व्योम की ओर ले जाने की उसमें सक्षम शक्ति निहित है । पापी को पाप के गहरे अंधेरे में से निकालकर प्रभु मूर्ति पुण्य के प्रकाश की ओर ले जाने के लिए प्रभु मूर्ति में अद्भुत शक्ति है ।

नामदेव नामक लुटेरे के जीवन में भी प्रतिदिन परमात्ममूर्ति के सामने दस मिनट बैठने की प्रतिज्ञा से एक दिन ऐसा चमत्कार हुआ कि उसने सदैव के लिए खून, हत्या, लूट आदि सब पापों को तिलांजलि दे दी और वह संत नामदेव बन गया।

बैजु बावरा भी अपने प्रतिस्पर्धी एवं शत्रु संगीत सम्राट तानसेन का खून करना चाहता था लेकिन एक दिन वह किसी मंदिर में पहुंच गया और वहाँ प्रभुभक्ति में संगीत के माध्यम से ऐसा तल्लीन बन गया कि उसकी उसकी रौद्रभावना खत्म हो गई और उसने शत्रु तानसेन के साथ शत्रुता मिटा कर पक्का मित्र बना दिया। मन्त्रीश्वर पेथडशा ने आबू के पर्वतीय विभाग में सुवर्णसिद्धि को सफल करके जब वहाँ के रमणीय जिनमंदिर में वे आदीश्वर प्रभु की मूर्ति का दर्शन करते है तब उननी सुवर्ण के प्रति मूर्च्छा खत्म हो जाती है और वहाँ प्रभु के सामने प्राप्त हुई सभी सुवर्ण महोरों का उपयोग सात क्षेत्र में ही करने का संकल्प करते हैं ।

मूर्ति की प्रभावकता के ऐसे कई हजारों प्रसंग भूतकाल के और वर्तमानकाल के है, जो कि अत्यंत प्रेरणादायक हैं ।

यह है मूर्ति की अद्भुत प्रभाविकता...।

यह है मूर्ति का मानसिक गहरा असर ।

मूर्ति एक आकार है, और आकार यानी - चित्र का सर्वथा असर है ।

बच्चों को पहले या आज प्राथमिक ज्ञान देने के लिए सचित्र पुस्तकों का उपयोग ही किया जाता है । सायन्स, भूगोल, हिस्टरी आदि कई विषयों को बडे विद्यार्थियों को सिखाने के लिए भी प्रचुरमात्रा में चित्र, आकार एवं नक्शे आदि का उपयोग किया जाता है। जैन धर्म के तत्वों को, पदार्थो को समझाने के लिए भी सचित्र पुस्तकों का उपयोग होने लगा है ।

कहा जाता है कि एक ओर हजार शब्द हैं और दूसरी ओर सिर्फ एक ही चित्र है तो दोनों में से ज्यादा असर किसका रहेगा । विज्ञापन एवं जाहेरातकला के विकास में भी आकार एवं चित्र की ही तो महत्ता है। अकाल के समय का करुण दृश्य एवं कत्लखाने के अतिकरुण चित्र एवं शाकाहार प्रदर्शनी आदि देखकर आज भी जनसमूह के दिल में अनुकंपा जीवदया की लागणी पुष्ट हो जाती है। चित्र का असर अधिक काल तक हमारे मन भीतर में गहरे रूप में अवस्थित रहता है। इसलिए तो कामुकता एवं वासना को भडकाने वाले चित्रों एवं दृश्य देखना ब्रह्मचर्य और जीवनशुद्धि के लिए नितांत वर्जित है । वर्तमान समय में पाश्चात्य अंध अनुकरण से या आधुनिक विलासभर वातावरण से जगह-जगह पर खराब एवं विकृत चित्र दृश्यमान होते जा रहे है ।

भुवनेश्वर की उदयगिरी, खंडगिरि की हाथी गुफाएं, सितानवाजल की गुफा, नासिक के पास 2,400 वर्ष प्राचीन गुफा, एलोरा के गुफामंदिर, गुजरात मे गिरनार के, मथुरा के स्तूप ये सब जैनमूर्ति, जैन स्थापत्य एवं जैन चित्रकला का बेनमून ज्वल्लंत प्रतीक है ।

पूरे एशिया में ही नही, बल्कि पूरे दुनिया में आश्चर्यकारी ऐसे शत्रुजय पर्वत (गुजरात) के छोटे विभाग में हजारों जिनप्रतिमाओं से युक्त अनेकानेक जिनमंदिरो का निर्माण यह विश्व का अभूतपूर्व रिकार्ड है ।

आबु-देलवाडा अचलगढ, राणकपुर, कुमारीयाजी तारंगा आदि अनेक तीर्थो का इतिहास एव इनकी भव्यता आज भी इतनी ही प्रेरणादायक हैं ।

कीमती रत्नों से लेकर मामूली रेत से बनी हुई लाखो नहीं, अपितु करोडों जिनमूर्तियों से यह भारतवर्ष की धरातल विभूषित एवं मंडित बनी हुई है । आज भी वह परम्परा अक्षुण्ण चालू है, जिसमें हजारों लाखों दान प्रेमी भक्तभावुकों द्वारा मंदिरो की भव्यता एवं जिनशासन की शोभा वृद्धिगत हो रही है ।

अपनी आत्मा को पवित्र एव महान बनाने का केन्द्र स्थान मदिर है, जहा भक्तियोग की उपासना-साधना की जाती है । मंदिर का वातावरण पवित्र होता है, इफेक्टिव और [illegible]प्टिव होता है, वहां पर निर्मल भावों का शुभ परमाणु का संचय होता है । जहां पर बैठने से [illegible] विचार, विनष्ट हो जाते हैं, परमात्म मूर्ति देखने से देहाभिमान गलित हो जाता है, एवं [illegible] के साथ उत्कृष्ट एवं प्रवल पुण्य का निर्माण होता है ।

जिस प्रकार युद्धप्रयाण के समय सैनिक भरत बाहुबली, अर्जुन, हनुमान, खारवेल, महाराणा प्रताप, शिवाजी जैसे वीरों के आदर्श सामने रखकर अपने में अतुल शक्ति का संचय करता है, उसी प्रकार आत्मा भी परमात्ममूर्ति सन्मुख भक्तियोग के माध्यम से उच्च आदर्श को सामने रखते हुए अपनी आत्मशक्ति को उजागर करता है एव भगवद्भाव तक पहुंचने की पराकाष्टा भी कभी प्राप्त कर लेता है ।

वर्तमान मे भी बडे स्थानों में, प्रमुख मार्ग में महान एवं राजकीय पुरुषो के स्टेच्यु-प्रतिमा लगाई जाती है, जिससे जनता को उनके कार्यो की प्रेरणा मिलती है ।

अमेरिका के न्यूर्याक में प्रवेश करते ही वहां पर स्वतंत्र देवी का 60 फूट ऊंचा स्टेच्यु बनाया गया है, जिसे देखने से प्रेक्षक के मन में अमेरिकन लोगों की स्वातत्र्य की भावना का अनुमान किया जाता है ।

मन एक समुद्र जैसा है, उसमें कई लहरे, तरंगे पैदा होती रहती हैं । प्रभु प्रतिमा दर्शन से भी मन में वीतरागता की भावना जागती है, मन मे आनंद हर्ष की लहरें फैल जाती है, जीवन में उच्चप्रेरणा मिलती है ।

जिनेश्वर भगवंत को साक्षात कल्पवृक्ष की उपमा दी गई है, जिनके पावन दर्शन से दुरित-पापों का ध्वस होता है, वंदन से वांछित इष्ट की प्राप्ति होती है एवं पूजन से लक्ष्मी की पूर्णता मिलती है ।

भक्त सिर्फ दर्शन ही नहीं, [illegible], [illegible], ध्यान, स्तवन आदि में [illegible] एव [illegible]

भुवनेश्वर की उदयगिरी, खंडगिरि की हाथी गुफाएं, सितानवाजल की गुफा, नासिक के पास 2,400 वर्ष प्राचीन गुफा, एलोरा के गुफामंदिर, गुजरात मे गिरनार के, मथुरा के स्तूप ये सब जैनमूर्ति, जैन स्थापत्य एवं जैन चित्रकला का बेनमून ज्वल्लंत प्रतीक है ।

पूरे एशिया में ही नही, बल्कि पूरे दुनिया में आश्चर्यकारी ऐसे शत्रुजय पर्वत (गुजरात) के छोटे विभाग में हजारों जिनप्रतिमाओं से युक्त अनेकानेक जिनमंदिरो का निर्माण यह विश्व का अभूतपूर्व रिकार्ड है।

आबु-देलवाडा अचलगढ, राणकपुर, कुमारीयाजी तारंगा आदि अनेक तीर्थो का इतिहास एव इनकी भव्यता आज भी इतनी ही प्रेरणादायक हैं ।

कीमती रत्नों से लेकर मामूली रेत से बनी हुई लाखो नहीं, अपितु करोडों जिनमूर्तियों से यह भारतवर्ष की धरातल विभूषित एवं मंडित बनी हुई है। आज भी वह परम्परा अक्षुण्ण चालू है, जिसमें हजारों लाखों दान प्रेमी भक्तभावुकों द्वारा मंदिरो की भव्यता एवं जिनशासन की शोभा वृद्धिगत हो रही है ।

अपनी आत्मा को पवित्र एव महान बनाने का केन्द्र स्थान मदिर है, जहा भक्तियोग की उपासना-साधना की जाती है। मंदिर का वातावरण पवित्र होता है, इफेक्टिव और पोझिटिव होता है, वहां पर निर्मल भावों का शुभ परमाणु का संचय होता है। जहां पर बैठने से बुरे विचार, विनष्ट हो जाते हैं, परमात्म मूर्ति देखने से देहाभिमान गलित हो जाता है, एवं मनःशुद्धि के साथ उत्कृष्ट एवं प्रबल पुण्य का निर्माण होता है ।

जिस प्रकार युद्धप्रयाण के समय सैनिक भरत बाहुबली, अर्जुन, हनुमान, खारवेल, महाराणा प्रताप, शिवाजी जैसे वीरों के आदर्श सामने रखकर अपने में अतुल शक्ति का संचय करता है, उसी प्रकार आत्मा भी परमात्ममूर्ति सन्मुख भक्तियोग के माध्यम से उच्च आदर्श को सामने रखते हुए अपनी आत्मशक्ति को उजागर करता है एव भगवद्भाव तक पहुंचने की पराकाष्टा भी कभी प्राप्त कर लेता है ।

वर्तमान मे भी बडे स्थानों में, प्रमुख मार्ग में महान एवं राजकीय पुरुषो के स्टेच्यु-प्रतिमा लगाई जाती है, जिससे जनता को उनके कार्यो की प्रेरणा मिलती है ।

अमेरिका के न्यूर्याक में प्रवेश करते ही वहां पर स्वतंत्र देवी का 60 फूट ऊंचा स्टेच्यु बनाया गया है, जिसे देखने से प्रेक्षक के मन में अमेरिकन लोगों की स्वातत्र्य की भावना का अनुमान किया जाता है ।

मन एक समुद्र जैसा है, उसमें कई लहरे, तरंगे पैदा होती रहती हैं। प्रभु प्रतिमा दर्शन से भी मन में वीतरागता की भावना जागती है, मन मे आनंद हर्ष की लहरें फैल जाती है, जीवन में उच्चप्रेरणा मिलती है ।

जिनेश्वर भगवंत को साक्षात कल्पवृक्ष की उपमा दी गई हे, जिनके पावन दर्शन से दुरित-पापों का ध्वस होता हे, वंदन से वांछित इष्ट की प्राप्ति होती हे एवं पूजन से लक्ष्मी की पूर्णता मिलती है ।

भक्त सिर्फ दर्शन ही नहीं, वन्दन, पूजन, ध्यान, स्तवन आदि में उल्लसित एवं लीन

गया ।

रावण ने अष्टापद पर्वत पर चौवीस तीर्थकरों की मूर्ति सन्मुख मंदोदरी राणी के साथ सुंदर तालबद्ध संगीतमय प्रभु भक्ति की पराकाष्टा में तीर्थकर नामकर्म का निर्माण किया।

आज से करीब 75,000 वर्ष पूर्व श्री कृष्ण की सेना पर जरासंध ने जरा नामक दुष्ट विद्या छोडी, जिनके दुष्प्रभाव से सेना मूर्च्छित बन गई। उस समय श्रीकृष्ण ने अठ्ठम तप के प्रभाव से पद्मावती माता द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान मूर्ति पाताल लोक में से, जो कि अतीत चोविसी के नव में दामोदर भगवान के समय में आषाढी श्रावक ने भराई थी, संप्राप्त हुई और उस मूर्ति के स्नान-प्रक्षाल जल का सेना पर छिटकाव करने से जराविघा का प्रभाव विनष्ट हो गया। पुनः सैन्य सज्ज बनने से श्रीकृष्ण ने शत्रु पर विजय पाया; जिसके हर्ष में आकर उन्होंने शंख बजाया तब से उस गांव का नाम शंखेश्वर प्रसिद्ध हुआ और मूर्ति भी शंखेश्वर पार्श्वनाथ के रूप में सुप्रसिद्ध बनी, आज शंखेश्वर तीर्थ में वह मूर्ति विश्व भर में सुविख्यात, अतिप्राचीन एवं महाचमत्कारिक मानी जाती है ।

पुरुषादानी श्री स्थंभन पार्श्वनाथ भगवान की भव्य मूर्ति के स्नात्रजल से नवांगी टीकाकार श्री अभयदेव सूरिजी का कुष्ट रोग दूर हो गया था ।

श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि ने कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना करते हुए शिवलिंग का प्रस्फुट होकर श्री अवंति पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रगट हुई और जिनशासन की अद्वितीय प्रभावना हुई ।

ऐसे एक नहीं, हजारों दृष्टांत है, जिनके आदर्शो से हम में भी श्रद्धा और भक्ति के साथ प्रभु मूर्ति के श्रेष्ठ आलंबन के प्रति भावुकता बनी रहती है ।

आइए, हम सब भावात्मक वन कर प्रभु प्रतिमा से प्रवाहित होता शांतसुधारस का अनुभव कर तृप्त बनें ।

चातुर्मास - बलसाड (गुजरात)

दोषी व्यक्ति की दृष्टि सतत् अन्य के दोषों की ओर रहती है एवं वह आत्मा अन्य के दोषों के गीत गाते गाते गुणों से गरीब हो जाता है ।
मनुष्यत्व को फूल बहुत मुश्किल से खिलता है । इस फूल को यों ही मत मुरझा देना । मनुष्य होना ही सर्वोत्तम उपलब्धि है ।

गया ।

रावण ने अष्टापद पर्वत पर चौवीस तीर्थकरों की मूर्ति सन्मुख मंदोदरी राणी के साथ सुंदर तालबद्ध संगीतमय प्रभु भक्ति की पराकाष्टा में तीर्थकर नामकर्म का निर्माण किया।

आज से करीब 75,000 वर्ष पूर्व श्री कृष्ण की सेना पर जरासंध ने जरा नामक दुष्ट विद्या छोडी, जिनके दुष्प्रभाव से सेना मूर्च्छित बन गई। उस समय श्रीकृष्ण ने अठ्ठम तप के प्रभाव से पद्यावती माता द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान मूर्ति पाताल लोक में से, जो कि अतीत चोविसी के नव में दामोदर भगवान के समय में आषाढी श्रावक ने भराई थी, संप्राप्त हुई और उस मूर्ति के स्नान-प्रक्षाल जल का सेना पर छिटकाव करने से जराविघा का प्रभाव विनष्ट हो गया। पुनः सैन्य सज्ज बनने से श्रीकृष्ण ने शत्रु पर विजय पाया; जिसके हर्ष में आकर उन्होंने शंख बजाया तब से उस गांव का नाम शंखेश्वर प्रसिद्ध हुआ और मूर्ति भी शंखेश्वर पार्श्वनाथ के रूप में सुप्रसिद्ध बनी, आज शंखेश्वर तीर्थ में वह मूर्ति विश्व भर में सुविख्यात, अतिप्राचीन एवं महाचमत्कारिक मानी जाती है ।

पुरुषादानी श्री स्थंभन पार्श्वनाथ भगवान की भव्य मूर्ति के स्नात्रजल से नवांगी टीकाकार श्री अभयदेव सूरिजी का कुष्ट रोग दूर हो गया था ।

श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि ने कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना करते हुए शिवलिंग का प्रस्फुट होकर श्री अवंति पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रगट हुई और जिनशासन की अद्वितीय प्रभावना हुई ।

ऐसे एक नहीं, हजारों दृष्टांत है, जिनके आदर्शो से हम में भी श्रद्धा और भक्ति के साथ प्रभु मूर्ति के श्रेष्ठ आलंबन के प्रति भावुकता बनी रहती है ।

आइए, हम सब भावात्मक बन कर प्रभु प्रतिमा से प्रवाहित होता शांतसुधारस का अनुभव कर तृप्त बनें ।

चातुर्मास - बलसाड (गुजरात)

दोषी व्यक्ति की दृष्टि सतत् अन्य के दोषों की ओर रहती है एवं वह आत्मा अन्य के दोषों के गीत गाते गाते गुणों से गरीब हो जाता है ।
मनुष्यत्व को फूल बहुत मुश्किल से खिलता है । इस फूल को यों ही मत मुरझा देना । मनुष्य होना ही सर्वोत्तम उपलब्धि है ।

सेठ अब अपने जीवन यापन के लिये एक समय सात्विक भोजन करते व प्रभु भजन तथा शुभ भावों में अपना समय बिताते। सेठ जी की दिनचर्या देख सभी जन आश्चर्य चकित थे। सेठजी के जीवन में अब न तो प्रमाद था न किसी के प्रति राग, न द्वेष, न लोभ, मानों वह तो एक गृह योगी बन गये।

इस तरह से सेठ जी के छह दिन गुजर गये। सातवें दिन प्रातः संत एकनाथ स्वयं सेठजी के घर पहुंचे और सेठजी से पूछा कि सेठजी ! आपका क्या हाल चाल है? छह दिन कैसे बीते ? सेठजी प्रणाम करते हुये बोले कि हे गुरुदेव ! जब से आपश्री के मुँह से मैंने मृत्यु की बात सुनी तब से मैने पाप कर्म को मन, वचन और काया से छोड़ दिया। आपने जब कह दिया कि ''सात दिन के अंदर मौत हो जायेगी'' जब मौत सामने नजर आ रही हो तो मैं पाप कर्म कैसे करू ?

यह सुनकर सत एकनाथ मुस्कुराते हुये बोले कि भैया ! मैंने रवि, सोम आदि सात दिनों में जो तुम्हें मृत्यु की बात कही, उस मौत से डरकर तुमने पाप प्रवृति को छोड दिया है। इसी तरह से हमेशा पाप से डरोगें तो पापी से एक दिन परमात्मा बन जाओगे। अरे भाई ! यह केवल तुम्हारे लिये ही नही है अपितु सभी जनों के लिये है। इन्हीं सात दिनों में से किसी भी एक दिन प्रत्येक जीव को मरना ही मरना है। यह सभी प्राणियों के लिये शाश्वत नियम है लेकिन हॉ जीवन में यदि मृत्यु का स्मरण रहे तो बहुत सारे पापो से आत्मा बच जाती है।

हमारे ज्ञानी भगवंतों ने भी कहा है कि इस क्षण भगुर जीवन में धर्म की साधना-आराधना कर लें ! इस जीवन में मौत पर हमारी दृष्टि सदा वैसे ही रहे जैसे कि युद्ध-भूमि मे गये हुये सैनिक की दृष्टि अपने प्रति स्पर्धी पर, जैसे चरने के लिये वन में गई हुई गाय का मन अपने बछडे पर रहता है।

एक संत ने कल्याण का उपाय बताते हुये किसी से कहा -

दो बातन को भूल मत, जो चाहत कल्याण। एक मौत को, दूजो श्री भगवान ॥

चातुर्मास - जैन नगर, मेरठ

व्यक्ति की अपेक्षाएं जब उपेक्षित होती हैं, वह भीतर से उद्विग्न और असंतुलित हो जाता है। वास्तव में महान व्यक्ति वही होता हैं जो अपनी अपेक्षाएं स्वयं से रखते हैं दूसरों से नहीं।

सेठ अब अपने जीवन यापन के लिये एक समय सात्विक भोजन करते व प्रभु भजन तथा शुभ भावों में अपना समय बिताते। सेठ जी की दिनचर्या देख सभी जन आश्चर्य चकित थे। सेठजी के जीवन में अब न तो प्रमाद था न किसी के प्रति राग, न द्वेष, न लोभ, मानों वह तो एक गृह योगी बन गये।

इस तरह से सेठ जी के छह दिन गुजर गये। सातवें दिन प्रातः संत एकनाथ स्वयं सेठजी के घर पहुंचे और सेठजी से पूछा कि सेठजी ! आपका क्या हाल चाल है? छह दिन कैसे बीते ? सेठजी प्रणाम करते हुये बोले कि हे गुरुदेव ! जब से आपश्री के मुँह से मैंने मृत्यु की बात सुनी तब से मैने पाप कर्म को मन, वचन और काया से छोड़ दिया। आपने जब कह दिया कि "सात दिन के अंदर मौत हो जायेगी" जब मौत सामने नजर आ रही हो तो मैं पाप कर्म कैसे करू ?

यह सुनकर सत एकनाथ मुस्कुराते हुये बोले कि भैया ! मैंने रवि, सोम आदि सात दिनों में जो तुम्हें मृत्यु की बात कही, उस मौत से डरकर तुमने पाप प्रवृति को छोड दिया है। इसी तरह से हमेशा पाप से डरोगें तो पापी से एक दिन परमात्मा बन जाओगे। अरे भाई ! यह केवल तुम्हारे लिये ही नही है अपितु सभी जनों के लिये है। इन्हीं सात दिनों में से किसी भी एक दिन प्रत्येक जीव को मरना ही मरना है। यह सभी प्राणियों के लिये शाश्वत नियम है लेकिन हॉ जीवन में यदि मृत्यु का स्मरण रहे तो बहुत सारे पापो से आत्मा बच जाती है।

हमारे ज्ञानी भगवंतों ने भी कहा है कि इस क्षण भगुर जीवन में धर्म की साधना-आराधना कर लें ! इस जीवन में मौत पर हमारी दृष्टि सदा वैसे ही रहे जैसे कि युद्ध-भूमि मे गये हुये सैनिक की दृष्टि अपने प्रति स्पर्धी पर, जैसे चरने के लिये वन में गई हुई गाय का मन अपने बछडे पर रहता है।

एक संत ने कल्याण का उपाय बताते हुये किसी से कहा -

दो बातन को भूल मत, जो चाहत कल्याण। एक मौत को, दूजो श्री भगवान ॥

चातुर्मास - जैन नगर, मेरठ

व्यक्ति की अपेक्षाएं जब उपेक्षित होती हैं, वह भीतर से उद्विग्न और असंतुलित हो जाता है। वास्तव में महान व्यक्ति वही होता हैं जो अपनी अपेक्षाएं स्वयं से रखते हैं दूसरों से नहीं।

हे वैरी?

मेरी (आत्मा की) दुश्मन निद्रा ? तुं कहा से आ गई?

क्यों आई? मेरी साधना में तेरी कोई आवश्यकता नही है।

बहुत वर्षो की साधना के बाद मैंने यह जागृत अवस्था पाई है, और उसे तुं क्यों बिगाड रही है? निद्रा कह रही है।

मैं तो भोली भाली हूँ, आपके आमत्रण से आयी हूँ,

दूसरी तरफ मैं यम की दासी के रूप में चिर निद्रा के नाम से प्रसिद्ध हूँ। मेरे एक हाथ में मुक्ति भी है और दूसरे हाथ में फांसी भी है। इस प्रकार अध्यात्म योगियों ने निद्रा को हितकर नहीं माना।

अध्यात्म योगियों के ठीक विपरीत ससारी गृहस्थ नीद न आए तो नींद के लिए छटपटाता है। उसे लाने के लिए हजार उपाय करता है। नीद की गोलियां और इन्जेक्शन भी लेता है। किसी भी तरह वह पडा रहना चाहता है। एक दृष्टि से सोचने पर बात सही भी लगती है कि- जिसके सामने कोई आत्म कल्याण का लक्ष्य ही नही है वह बेचारा नींद के लिए प्रवृत्ति नहीं करेगा तो क्या करेगा ?

नीतिकार कहते हैं कि-

जो सोवत है सो खोवत है ! जो जागत है सो पावत है ॥

अर्थात् जो व्यक्ति नींद आलस्य प्रमाद में मग्न रहता है वह बहुत कुछ लाभ खोता है। उसके हाथ से लाभ शुभ के कई प्रसंग चले जाते हैं। परन्तु कहते है कि-

अब पछताये होत क्या, जब चिडिया चुग गई खेत।

प्रभु महावीर को प्रश्न?

एक बार की वात है। समवसरण में श्री वीर प्रभु की देशना के बाद जयन्ती श्राविका ने प्रभु से प्रश्न पूछा कि हे कृपानाथ ? इस संसार में किसका सोना अच्छा है? और किसका जागना अच्छा? उत्तर देते हुए भगवान महावीर ने फरमाया कि- **आयरिया छम्मिणं, अधम्मिणं तु सुत्तया सेया ॥**

धर्मी आत्माओं का जगना अच्छा और अधर्मी आत्माओं का सोते हुए रहना अच्छा है क्योंकि अधर्मी जागता रहेगा तो पाप करता रहेगा, कइयों को अपने पाप में सहभागी बनायेगा। इस तरह अधर्मी बहुत अनर्थ करेगा। अतः धर्मी का जाग और अधर्मी का सोते रहना स्व पर उभय के लिए लाभदायक रहेगा। परन्तु आज इस कलियुग में ठीक इससे विपरीत देखा जा रहा है धर्मी सो रहे है और अधर्मी जाग रहे है। अब आप ही सोचिये कि क्या परिणाम आयेगा? अधर्मी के जागते रहने से पापाचार बढता रहेगा और धर्मी के सोते रहने से धर्माचरण घटता रहेगा। कलियुग में यही प्रमाण बढता है। वर्तमान जगत मे ठीक विपरीत यही दृश्य देख रहे हैं, आज भयंकर कलियुग चल रहा है यह कहन मे रत्तीभर भी संदेह नहीं होता है।

आरोग्य की दृष्टि से निद्रा—

हे वैरी?

मेरी (आत्मा की) दुश्मन निद्रा ? तुं कहा से आ गई?

क्यों आई? मेरी साधना में तेरी कोई आवश्यकता नही है।

बहुत वर्षो की साधना के बाद मैंने यह जागृत अवस्था पाई है, और उसे तुं क्यों बिगाड रही है? निद्रा कह रही है।

मैं तो भोली भाली हूॅं, आपके आमत्रण से आयी हूॅं,

दूसरी तरफ मैं यम की दासी के रूप में चिर निद्रा के नाम से प्रसिद्ध हूॅं। मेरे एक हाथ में मुक्ति भी है और दूसरे हाथ में फांसी भी है। इस प्रकार अध्यात्म योगियों ने निद्रा को हितकर नहीं माना।

अध्यात्म योगियों के ठीक विपरीत ससारी गृहस्थ नीद न आए तो नींद के लिए छटपटाता है। उसे लाने के लिए हजार उपाय करता है। नीद की गोलियां और इन्जेक्शन भी लेता है। किसी भी तरह वह पडा रहना चाहता है। एक दृष्टि से सोचने पर बात सही भी लगती है कि- जिसके सामने कोई आत्म कल्याण का लक्ष्य ही नही है वह बेचारा नींद के लिए प्रवृत्ति नहीं करेगा तो क्या करेगा ?

नीतिकार कहते हैं कि-

जो सोवत है सो खोवत है ! जो जागत है सो पावत है ॥

अर्थात् जो व्यक्ति नींद आलस्य प्रमाद में पड़ा रहता है वह बहुत कुछ लाभ खोता है। उसके हाथ से लाभ शुभ के कई प्रसंग चले जाते हैं। परन्तु कहते है कि-

अब पछताये होत क्या, जब चिडिया चुग गई खेत।

प्रभु महावीर को प्रश्न?

एक बार की बात है। समवसरण में श्री वीर प्रभु की देशना के बाद जयन्ती श्राविका ने प्रभु से प्रश्न पूछा कि हे कृपानाथ ? इस संसार में किसका सोना अच्छा है? और किसका जागना अच्छा? उत्तर देते हुए भगवान महावीर ने फरमाया कि- **आयरिया छम्मिणं, अधम्मिणं तु सुत्तया सेया ॥**

धर्मी आत्माओं का जगना अच्छा और अधर्मी आत्माओं का सोते हुए रहना अच्छा है क्योंकि अधर्मी जागता रहेगा तो पाप करता रहेगा, कइयों को अपने पाप में सहभागी बनायेगा। इस तरह अधर्मी बहुत अनर्थ करेगा। अतः धर्मी का जाग और अधर्मी का सोते रहना स्व पर उभय के लिए लाभदायक रहेगा। परन्तु आज इस कलियुग में ठीक इससे विपरीत देखा जा रहा है धर्मी सो रहे है और अधर्मी जाग रहे है। अब आप ही सोचिये कि क्या परिणाम आयेगा? अधर्मी के जागते रहने से पापाचार बढता रहेगा और धर्मी के सोते रहने से धर्माचरण घटता रहेगा। कलियुग में यही प्रमाण बढता है। वर्तमान जगत मे ठीक विपरीत यही दृश्य देख रहे हैं, आज भयंकर कलियुग चल रहा है यह कहने मे रत्तीभर भी संदेह नहीं होता है।

आरोग्य की दृष्टि से निद्रा—

आहार और नींद में संबंध

आहारे उंध वधे घणी, निद्रा दुःख भंडार ।
नैवेद्य धरी प्रभु आगले, वरीये पद अणाहार ॥

वीर विजय जी महाराज कहते हैं कि ज्यों-ज्यों आहार का प्रमाण बढता है त्यों-त्यों नीद का प्रमाण भी बढता जाता है । ऐसी निद्रा दुःख का भंडार रूप होती है । इस नींद के पीछे अनेक दुःख आते हैं इसलिये इस कर्मोदय को टालने के लिए आहार का अर्थात् नैवेद्य का भरा हुआ थाल प्रभु के आगे त्याग भावना से अर्पण करें जिससे अणाहारी निराहारी मोक्ष का पद प्राप्त कर सकते हैं । योगशास्त्र में भी कहते हैं कि आहार और निद्रा में परस्पर जन्य जनक भाव सम्बन्ध हैं । आहार बढने से नींद बढती है और नींद बढने से आहार बढता है । दोनों बढते ही जाये तो बुद्धि जडता की तरफ ढलती है ।

अतः अल्पाहारी-हिताहारी-मिताहारी परिमिताहारी एवं अल्प निद्रालु बनना ही लाभदायक है ।

निद्रा का शास्त्रीय स्वरूप-

सुहपडिवोहा निद्दा, निद्दा निद्दाय दुःख पडिबोहा पयलाटिओवविट्ठस्स पयल पयला उ चंकमओ दिण विंति अत्थकरद्धा, द्धाणद्धी अद्ध चक्की अद्धबला

1. जिस प्रकार की नींद में आसानी से जग सकते हो उसे निद्रा कहते हैं जिस नींद में सुख रूप से जागने का स्वभाव हो अथवा जगाने पर एक क्षण में आसानी से जो जाग जाय उसे प्रथम प्रकार की निद्रा कहते हैं ।

2. नींद की एक विशेष अवस्था जिसमें बडी मुश्किल से बहुत टटोलने पर उठे उसे दूसरे प्रकार की निद्रा कहते हैं ।

3. जिसमें खडे-खडे या बैठे-बैठे भी नींद आवे उसे प्रचला प्रकार की नींद कहते हैं ।

4. चलते-चलते जो नींद आती है उसे प्रचला प्रचला नामक नीद कहते हैं ।

5. दिन में जिस विषयक कार्य का तीव्र आकांक्षा से जो चिन्तन किया हो और दिन में वह कार्य न करके सो गया हो और रात को नींद में से उठकर उस कार्य को निद्रावस्था में ही करें वैसी नींद को थीणद्धि स्त्यानर्द्धि नामक पांचवें प्रकार की नींद कहते हैं । इस प्रकार की नींद में मनुष्य ठीक जागते हुए की तरह सारे ही काम कर लेता है । फिर भी उसे पता नहीं रहता है । पुनः आकर सो जाता है । सुबह उठने के बाद कुछ याद नहीं रहता है कि मैंने यह काम किया है इस प्रकार की नींद में अर्द्ध चक्रवर्ती अर्थात् वासुदेव के आधे बल के जितनी शक्ति रहती है । परन्तु यह कैसे? इस प्रश्न के उत्तर में कर्म शास्त्रकार स्पष्टीकरण करते हैं कि जो जीव वज्रऋषभनाराच संघयण नामक प्रथम संघयण वाला होता है उसे यदि थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म उदय हो तो उसमें अर्धचक्रवर्ती अर्थात् वासुदेव के बल का आधा बल-शक्ति थीणद्धि निद्रा के उदय में रहती है । परन्तु ऐसा जीव मरकर नरक में जाता है । छेवट्ठा नामक छट्ठे प्रकार का संघयण जिसके उदय में हो, (हमारे जैसे जीव) ऐसे जीवों को यदि थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म

आहार और नींद में संबंध

आहारे उंध वधे घणी, निद्रा दुःख भंडार ।
नैवेद्य धरी प्रभु आगले, वरीये पद अणाहार ।।

वीर विजय जी महाराज कहते हैं कि ज्यों-ज्यों आहार का प्रमाण बढता है त्यों-त्यों नीद का प्रमाण भी बढता जाता है । ऐसी निद्रा दुःख का भंडार रूप होती है । इस नींद के पीछे अनेक दुःख आते हैं इसलिये इस कर्मोदय को टालने के लिए आहार का अर्थात् नैवेद्य का भरा हुआ थाल प्रभु के आगे त्याग भावना से अर्पण करें जिससे अणाहारी निराहारी मोक्ष का पद प्राप्त कर सकते हैं । योगशास्त्र में भी कहते हैं कि आहार और निद्रा में परस्पर जन्य जनक भाव सम्बन्ध हैं । आहार बढने से नींद बढती है और नींद बढने से आहार बढता है । दोनों बढते ही जाये तो बुद्धि जडता की तरफ ढलती है ।

अतः अल्पाहारी-हिताहारी-मिताहारी परिमिताहारी एवं अल्प निद्रालु बनना ही लाभदायक है ।

निद्रा का शास्त्रीय स्वरूप-

सुहपडिवोहा निद्दा, निद्दा निद्दाय दुःख पडिबोहा पयलाठिओववित्रुस्स पयल पयला उ चंकमओ दिण विंति अत्थकरद्धा, द्धाणद्धी अद्ध चक्की अद्धबला

1. जिस प्रकार की नींद में आसानी से जग सकते हो उसे निद्रा कहते हैं जिस नींद में सुख रूप से जागने का स्वभाव हो अथवा जगाने पर एक क्षण में आसानी से जो जाग जाय उसे प्रथम प्रकार की निद्रा कहते हैं ।

2. नींद की एक विशेष अवस्था जिसमें बडी मुश्किल से बहुत टटोलने पर उठे उसे दूसरे प्रकार की निद्रा कहते हैं ।

3. जिसमें खडे-खडे या बैठे-बैठे भी नींद आवे उसे प्रचला प्रकार की नींद कहते हैं ।

4. चलते-चलते जो नींद आती है उसे प्रचला प्रचला नामक नीद कहते हैं ।

5. दिन में जिस विषयक कार्य का तीव्र आकांक्षा से जो चिन्तन किया हो और दिन में वह कार्य न करके सो गया हो और रात को नींद में से उठकर उस कार्य को निद्रावस्था में ही करें वैसी नींद को थीणद्धि स्त्यानर्द्धि नामक पांचवें प्रकार की नींद कहते हैं । इस प्रकार की नींद में मनुष्य ठीक जागते हुए की तरह सारे ही काम कर लेता है । फिर भी उसे पता नहीं रहता है । पुनः आकर सो जाता है । सुबह उठने के बाद कुछ याद नहीं रहता है कि मैंने यह काम किया है इस प्रकार की नींद में अर्द्ध चक्रवर्ती अर्थात् वासुदेव के आधे बल के जितनी शक्ति रहती है । परन्तु यह कैसे? इस प्रश्न के उत्तर में कर्म शास्त्रकार स्पष्टीकरण करते हैं कि जो जीव वज्रऋषभनाराच संघयण नामक प्रथम संघयण वाला होता है उसे यदि थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म उदय हो तो उसमें अर्धचक्रवर्ती अर्थात् वासुदेव के बल का आधा बल-शक्ति थीणद्धि निद्रा के उदय में रहती है । परन्तु ऐसा जीव मरकर नरक में जाता है । छेवट्ठा नामक छट्ठे प्रकार का संघयण जिसके उदय में हो, (हमारे जैसे जीव) ऐसे जीवों को यदि थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म

अच्छे सुंदर लड्डू रखे हुए थे। कई लड्डू होने पर भी उस गृहस्थ ने एक भी लड्डू मुनि को भिक्षा में नहीं दिया। वह साधु लड्डू खाने का ही विचार करता रहा, इसी चिन्ता में रात्रि में सो गया। थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म के भारी उदय से वह साधु मध्य रात्रि में उठकर उस लड्डू वाले गृहस्थ के घर गया। द्वार तोडकर घर में घुसकर उसने खूब लड्डू खाये। शेष बचे हुए लड्डू अपने पात्र में लेकर उपाश्रय आकर पुनः सो गया। प्रातःकाल सभी साधु उठे। लड्डू खाने वाला साधु भी उठा, पर मानों उसे कुछ भी याद नहीं हो इस तरह वह अपनी नित्य क्रिया करने लगा। अपने गुरु को जाकर कहा कि मैंने आज ऐसा स्वप्न देखा है, परन्तु अन्य साधुगण वस्त्र-पात्र आदि की प्रतिलेखन क्रिया करने लगे तब एक पात्र में खूब लड्डू देखे। सबके बीच यह भारी आश्चर्य प्रकट हुआ काफी पूछ परख की, परन्तु कोई सत्य प्रकट नही हुआ। आखिर गुरु ने उसके स्वप्न के आधार पर थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म का भारी उदय समझकर उसे दीक्षा से निकाल दिया।

(3) हाथी मारक

एक वार की बात है कि एक छोटे साधु को रास्ते में एक हाथी ने बहुत परेशान किया। घबराकर साधु किसी तरह जान छुडाकर भागकर उपाश्रय में आ गए। दिनभर उनमें हाथी के प्रति बडा भारी क्रोध चलता रहा। इसी क्रोध के विचार में रात को सो गये।थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म के भारी उदय से वे साधु उठकर नगर के बंद द्वार तोडकर गांव के बाहर उस हाथी के पास गये। वज्रऋषभनाराच नामक प्रथम संघयण वाले उन्होंने थीणद्धि निद्रा के उदय में अर्ध-चक्रवर्ती अर्थात् तीन खण्ड के मालिक वासुदेव के अर्ध बल जितनी शक्ति से उस हाथी के दोनों दांत खींचकर निकाल डाले और दांतों से ही प्रहार कर हाथी को मार डाला। शेष रात्रि में लौटते समय उपाश्रय के बाहर ही दोनों दांत रखकर अन्दर आकर अपने संथारे पर सो गए। प्रातः उठकर गुरु के पास जाकर कहा कि आज मैंने ऐसा स्वप्न देखा है। कुछ देर में सभी साधु विहार के लिए निकले। बाहर निकलते ही जब हाथी के दोनों दांत देखे तब शंका पडी। गुरु ने सभी साधुओं को पूछा, किसी ने भी कोई जवाब नहीं दिया गांव के बाहर जाते ही उस साधु के उपकरण दिखाई दिये। इस प्रमाण से गुरु उस साधु को थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म के उदय वाला जानकर उससे साधुवेश छीनकर निकाल दिया।

साधुमंडलीमा रहे रे, एक लघु अणगार,
थीणद्धिनिद्रापरवशेरे रे, हणियो हस्तीमहंत,
सूतो भर निद्रावशे रे, भूतलीये दोय दंत ॥
अंग अशुचि शिष्यनुं रे, संशय मरियो साघ
ज्ञानी वयणे काढीयो रे, हंसवनेथी व्याघ ॥

(4) वट-वृक्ष छेदक

भूतकाल की बात है कि एक साधु विशेष बडे पात्र लेकर अन्य सभी साधुओं की

अच्छे सुंदर लड्डू रखे हुए थे। कई लड्डू होने पर भी उस गृहस्थ ने एक भी लड्डू मुनि को भिक्षा में नहीं दिया। वह साधु लड्डू खाने का ही विचार करता रहा, इसी चिन्ता में रात्रि में सो गया। थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म के भारी उदय से वह साधु मध्य रात्रि में उठकर उस लड्डू वाले गृहस्थ के घर गया। द्वार तोडकर घर में घुसकर उसने खूब लड्डू खाये। शेष बचे हुए लड्डू अपने पात्र में लेकर उपाश्रय आकर पुनः सो गया। प्रातःकाल सभी साधु उठे। लड्डू खाने वाला साधु भी उठा, पर मानों उसे कुछ भी याद नहीं हो इस तरह वह अपनी नित्य क्रिया करने लगा। अपने गुरु को जाकर कहा कि मैंने आज ऐसा स्वप्न देखा है, परन्तु अन्य साधुगण वस्त्र-पात्र आदि की प्रतिलेखन क्रिया करने लगे तब एक पात्र में खूब लड्डू देखे। सबके बीच यह भारी आश्चर्य प्रकट हुआ काफी पूछ परख की, परन्तु कोई सत्य प्रकट नही हुआ। आखिर गुरु ने उसके स्वप्न के आधार पर थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म का भारी उदय समझकर उसे दीक्षा से निकाल दिया।

(3) हाथी मारक

एक वार की बात है कि एक छोटे साधु को रास्ते में एक हाथी ने बहुत परेशान किया। घबराकर साधु किसी तरह जान छुडाकर भागकर उपाश्रय में आ गए। दिनभर उनमें हाथी के प्रति बडा भारी क्रोध चलता रहा। इसी क्रोध के विचार में रात को सो गये।थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म के भारी उदय से वे साधु उठकर नगर के बंद द्वार तोडकर गांव के बाहर उस हाथी के पास गये। वज्रऋषभनाराच नामक प्रथम संघयण वाले उन्होंने थीणद्धि निद्रा के उदय में अर्घ-चक्रवर्ती अर्थात् तीन खण्ड के मालिक वासुदेव के अर्घ बल जितनी शक्ति से उस हाथी के दोनों दांत खींचकर निकाल डाले और दांतों से ही प्रहार कर हाथी को मार डाला। शेष रात्रि में लौटते समय उपाश्रय के बाहर ही दोनों दांत रखकर अन्दर आकर अपने संथारे पर सो गए। प्रातः उठकर गुरु के पास जाकर कहा कि आज मैंने ऐसा स्वप्न देखा है। कुछ देर में सभी साधु विहार के लिए निकले। बाहर निकलते ही जब हाथी के दोनों दांत देखे तब शंका पडी। गुरु ने सभी साधुओं को पूछा, किसी ने भी कोई जवाब नहीं दिया गांव के वाहर जाते ही उस साधु के उपकरण दिखाई दिये। इस प्रमाण से गुरु उस साधु को थीणद्धि निद्रा नामक दर्शनावरणीय कर्म के उदय वाला जानकर उससे साधुवेश छीनकर निकाल दिया।

साधुमंडलीमा रहे रे, एक लघु अणगार,
थीणद्धिनिद्रापरवशेरे रे, हणियो हस्तीमहंत,
सूतो भर निद्रावशे रे, भूतलीये दोय दंत ॥
अंग अशुचि शिष्यनुं रे, संशय मरियो साघ
ज्ञानी वयणे काढीयो रे, हंसवनेथी व्याघ ॥

(4) वट-वृक्ष छेदक

भूतकाल की बात है कि एक साधु विशेष वडे पात्र लेकर अन्य सभी साधुओं की

बने हुये थे। एक बार महा ज्ञानी मुनि भगवंत के आगमन पर सेठ ने इस घटना के बारे में पूछा। ज्ञानी महाराज ने कहा कि यह थीणद्धि निद्रा के कारण होता है सेठ ने पुत्रवधू को अपने घर से निकालकर मायके भेज दिया।

ट्रक भरकर खींच लाया

वर्तमान काल की बात है कि एक जगह मकान बनने का काम चल रहा था। निरीक्षकों ने मजदूरों को हुक्म दिया कि कल सुबह एक ट्रक पत्थर पहाडी से लाकर यहां डाल देना। हां कहकर छुट्टी होते ही शाम को सभी मजदूर निकल गए। एक मजदूर ने घर आकर जल्दी सोते हुए अपनी पत्नी को कहा कि मुझे सुबह जल्दी उठाना, पत्थर भरने जाना हैं। ऐसा कहता हुआ उस विचार में सो गया। थीणद्धि नामक निद्रा दर्शनावरणीय कर्म के उदय वाला वह मजदूर मध्यरात्रि में उठा नींद में ही वह ट्रक लेकर पहाडी प्रदेश में पहुंच गया। अन्य कोई मजदूर नहीं आये थे। अतः उसने अकेले ने ही वडे-वडे पत्थरों को उठाकर ट्रक भर दिया। जिन पत्थरों को चार जने मिलकर भी न उठा सकते थे उन्हें वह अकेला उठाकर ट्रक भरता गया। ट्रक भर जाने पर अकेला ही उस भारी ट्रक को मकान पर ले गया और वहां खाली करके घर आकर बिस्तर में सो गया। सुवह जव पत्नी उठाने गई तव सारा शरीर पसीने में तर था एवं भारी गरमी के कारण मानों खोल रहा था। नींद से उठकर जल्दवाजी करता हुआ तैयार हो रहा था। इतने में पत्नी ने पूछा कि आप रात में इतनी देर तक कहां गये थे? पति ने इसका कुछ भी जवाब न देते हुये कहा मुझे जल्दी काम पर जाना है, अतः इस समय देरी मत कर, मुझे जाने दे। इतना कहकर घर से निकल गया और शीघ्र ही काम पर पहुंच गया। सभी मजदूर इकट्ठे हुये थे और यह चर्चा कर रहे थे कि पत्थर का यह ट्रक यहां कौन ले आया है? सभी इन्कार कर रहे थे कि इतने में चौकीदार ने उस गजदूर का नाम बताते हुये कहा कि यह मजदूर रात को ले आया था। इस प्रकार थीणद्धि निद्रा में वह मजदूर दुगुनी, चौगुनी शक्ति से काम कर रहा था। वीरविजय जी महाराज दर्शनावरणीय कर्म की पूजा की ढाल में कहते हैं कि-

दिन चिंतित रात्रे करे रे, करणी जे नरनार
बलदेव नु बल ते समे रे, नरक गति अवतार ॥

अर्थात् थीणद्धि निद्रा के उदय से ऐसे कार्य जो भी कोई करते हैं भले ही वे वलदेव के वल जितनी शक्ति से करते हों, परन्तु वे नरक गति में जाते हैं। इस तरह थीणद्धि निद्रा वहुत ही खराव होती है। जीव को नरकगामी वनाती है।

निद्रा से नुकसान

पूर्वधर मुनि दुर्गति में गये।

महान विद्वान पूज्य आचार्य देव के भानुदत्त नामक मुनि अच्छे शिष्य थे। आचार्य महाराज ने खूव परिश्रम से उन्हें 14 पूर्व (धर्मशास्त्रों) का अभ्यास कराया। इस तरह भानुदत्त गुनि भी 14 पूर्वधारी गहान् विद्वान

बने हुये थे। एक बार महा ज्ञानी मुनि भगवंत के आगमन पर सेठ ने इस घटना के बारे में पूछा। ज्ञानी महाराज ने कहा कि यह थीणद्धि निद्रा के कारण होता है सेठ ने पुत्रवधू को अपने घर से निकालकर मायके भेज दिया।

ट्रक भरकर खींच लाया

वर्तमान काल की बात है कि एक जगह मकान बनने का काम चल रहा था। निरीक्षकों ने मजदूरों को हुक्म दिया कि कल सुबह एक ट्रक पत्थर पहाडी से लाकर यहां डाल देना। हां कहकर छुट्टी होते ही शाम को सभी मजदूर निकल गए। एक मजदूर ने घर आकर जल्दी सोते हुए अपनी पत्नी को कहा कि मुझे सुबह जल्दी उठाना, पत्थर भरने जाना हैं। ऐसा कहता हुआ उस विचार में सो गया। थीणद्धि नामक निद्रा दर्शनावरणीय कर्म के उदय वाला वह मजदूर मध्यरात्रि में उठा नींद में ही वह ट्रक लेकर पहाडी प्रदेश में पहुंच गया। अन्य कोई मजदूर नहीं आये थे। अतः उसने अकेले ने ही वडे-वडे पत्थरों को उठाकर ट्रक भर दिया। जिन पत्थरों को चार जने मिलकर भी न उठा सकते थे उन्हें वह अकेला उठाकर ट्रक भरता गया। ट्रक भर जाने पर अकेला ही उस भारी ट्रक को मकान पर ले गया और वहां खाली करके घर आकर विस्तर में सो गया। सुवह जव पत्नी उठाने गई तव सारा शरीर पसीने में तर था एवं भारी गरमी के कारण मानों खोल रहा था। नींद से उठकर जल्दवाजी करता हुआ तैयार हो रहा था। इतने में पत्नी ने पूछा कि आप रात में इतनी देर तक कहां गये थे? पति ने इसका कुछ भी जवाब न देते हुये कहा मुझे जल्दी काम पर जाना है, अतः इस समय देरी मत कर, मुझे जाने दे। इतना कहकर घर से निकल गया और शीघ्र ही काम पर पहुंच गया। सभी मजदूर इकट्ठे हुये थे और यह चर्चा कर रहे थे कि पत्थर का यह ट्रक यहां कौन ले आया है? सभी इन्कार कर रहे थे कि इतने में चौकीदार ने उस मजदूर का नाम बताते हुये कहा कि यह मजदूर रात को ले आया था। इस प्रकार थीणद्धि निद्रा में वह मजदूर दुगुनी, चौगुनी शक्ति से काम कर रहा था। वीरविजय जी महाराज दर्शनावरणीय कर्म की पूजा की ढाल में कहते हैं कि-

दिन चिंतित रात्रे करे रे, करणी जे नरनार
बलदेव नु बल ते समे रे, नरक गति अवतार ॥

अर्थात् थीणद्धि निद्रा के उदय से ऐसे कार्य जो भी कोई करते हैं भले ही वे वलदेव के वल जितनी शक्ति से करते हों, परन्तु वे नरक गति में जाते हैं। इस तरह थीणद्धि निद्रा वहुत ही खराव होती है। जीव को नरकगामी वनाती है।

निद्रा से नुकसान

पूर्वधर मुनि दुर्गति में गये।

महान विद्वान पूज्य आचार्य देव के भानुदत्त नामक मुनि अच्छे शिष्य थे। आचार्य महाराज ने खूव परिश्रम से उन्हें 14 पूर्व (धर्मशास्त्रों) का अभ्यास कराया। इस तरह भानुदत्त मुनि भी 14 पूर्वधारी महान विद्वान

आचार-विचार : नारी का

-सा. श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म.

झरोखा प्रकाश के लिए है-कचरे के लिये नही,
इन्द्रियां विकास के लिये है, विकार के लिए नही।
इस जिंदगी का हर द्वार श्रेय के लिये खुला है
क्योंकि जिन्दगी—
जिन्दगी उत्थान के लिये है, पतन के लिये नही।

उद्यान में गुलाब जब डाली पर खिलता है, विकसित होता है तब वह अपनी सुवास को इधर-उधर दसों दिशाओं में बिखेरने लगता है। लेकिन यह सब कब तक? जब तक कि डाली पर वह फूल विकसित है, खिला हुआ है।

वैसे ही इस विश्व की सुन्दर सुरम्य वाटिका में नारी रूपी गुलाब भी सुसंस्कार की डाली पर सद् आचार-विचार से खिला है, विकसित है तो उसके जीवन की सुवास दशों दिशाओं में बिखरेगी। अपने गुणो की मधुर सुवास मात्र अपने आस पास ही नहीं, वल्कि दूर-दूर के क्षेत्रों को अपनी महक देगी। परन्तु वही वात कि कव तक? जब तक वह आचार-विचार की डाली पर विकसित रहेगी खिली रहेगी तव तक। जेसे ही वह आचार-विचार या सुसंस्कार की डाली से खिर गई गिर गई निश्चित हीं उसके जीवन का विनाश हे, सर्वनाश हे।

जहां आर्य सन्नारियों का नाम सदा इतिहास के पृष्ट पर स्वर्णाक्षर में त्यागिनी, तपस्विनी, वीरांगना ओर सदाचारिणी के रूप में अंकित रहा हे, वहां आज वर्तमान में जो नारी की स्थिति वनी हुई ह उसके पीछे यदि कोई मूल कारण है तो उनका आचार-विचार और सुसंस्कार की न्यूनता का है।

जिस देश में नारी की पूजा होती थी आज उसी देश में नारी की फोटुएं सरेआम बाजारों में दीवारों पर लगाई जाती है। अरे, नारी को अपने जीवन का उत्थान करना होगा, अपने जीवन को उज्जवल बनाना होगा।

तभी तो किसी कवि ने कहा है—
रात को उज्जवल बनाने का काम सितारों का है,
नदी को उज्जवल वनाने का काम किनारों का है,
इससे भी महत्त्वपूर्ण बात तो जीवन की यह हे
कि परिवार को उज्जवल वनाने का काम सन्नारियों का है।

आज वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हैं तो नारी शिक्षा के क्षेत्र में तो वहुत ही आगे वढ रही है, परन्तु सुसंस्कार के क्षेत्र में पिछडती जा रही है। शिक्षा बाह्य जीवन का आकर्षण है लेकिन आन्तरिक जीवन का आकर्षण तो सुसंस्कार है।

सुसंस्कारी नारी अपने जीवन के साथ-साथ अपनी संतान के जीवन का व अपने परिवारजनों के जीवन को भी सुन्दर वनाती है। जिस घर की नारी सुसंस्कारी है वही घर, परिवार आदर्श वन सकता है।

आवश्यकता ह नारी अपने जीवन को सद्आचार, सद्विचार आर व्यवहार से आगे वढने का प्रयास करे।

चातुर्मास - जेन नगर, मेरठ

आचार-विचार : नारी का

-सा. श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म.

झरोखा प्रकाश के लिए है-कचरे के लिये नही,
इन्द्रियां विकास के लिये है, विकार के लिए नही।
इस जिंदगी का हर द्वार श्रेय के लिये खुला है
क्योंकि जिन्दगी—
जिन्दगी उत्थान के लिये है, पतन के लिये नही।

उद्यान में गुलाब जब डाली पर खिलता है, विकसित होता है तब वह अपनी सुवास को इधर-उधर दसों दिशाओं में बिखेरने लगता है। लेकिन यह सब कब तक? जब तक कि डाली पर वह फूल विकसित है, खिला हुआ है।

वैसे ही इस विश्व की सुन्दर सुरम्य वाटिका में नारी रूपी गुलाब भी सुसंस्कार की डाली पर सद् आचार-विचार से खिला है, विकसित है तो उसके जीवन की सुवास दशों दिशाओं में बिखरेगी। अपने गुणो की मधुर सुवास मात्र अपने आस पास ही नहीं, वल्कि दूर-दूर के क्षेत्रों को अपनी महक देगी। परन्तु वही वात कि कव तक? जब तक वह आचार-विचार की डाली पर विकसित रहेगी खिली रहेगी तव तक। जेसे ही वह आचार-विचार या सुसंस्कार की डाली से खिर गई गिर गई निश्चित हीं उसके जीवन का विनाश है, सर्वनाश हे।

जहां आर्य सन्नारियों का नाम सदा इतिहास के पृष्ठ पर स्वर्णाक्षर में त्यागिनी, तपस्विनी, वीरांगना ओर सदाचारिणी के रूप में अंकित रहा हे, वहां आज वर्तमान में जो नारी की स्थिति वनी हुई ह उसके पीछे यदि कोई मूल कारण है तो उनका आचार-विचार और सुसंस्कार की न्यूनता का है।

जिस देश में नारी की पूजा होती थी आज उसी देश में नारी की फोटुएं सरेआम बाजारों में दीवारों पर लगाई जाती है। अरे, नारी को अपने जीवन का उत्थान करना होगा, अपने जीवन को उज्जवल बनाना होगा।

तभी तो किसी कवि ने कहा है—
रात को उज्जवल बनाने का काम सितारों का है,
नदी को उज्जवल बनाने का काम किनारों का है,
इससे भी महत्त्वपूर्ण बात तो जीवन की यह हे
कि परिवार को उज्जवल बनाने का काम सन्नारियों का है।

आज वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हैं तो नारी शिक्षा के क्षेत्र में तो वहुत ही आगे वढ रही है, परन्तु सुसंस्कार के क्षेत्र में पिछडती जा रही है। शिक्षा बाह्य जीवन का आकर्पण है लेकिन आन्तरिक जीवन का आकर्षण तो सुसंस्कार है।

सुसंस्कारी नारी अपने जीवन के साथ-साथ अपनी संतान के जीवन का व अपने परिवारजनों के जीवन को भी सुन्दर वनाती है। जिस घर की नारी सुसंस्कारी है वही घर, परिवार आदर्श वन सकता है।

आवश्यकता ह नारी अपने जीवन को सद्आचार, सद्विचार आर व्यवहार से आगे वढने का प्रयास करे।

चातुर्मास - जेन नगर, मेरठ

सर्वत्र पूजनीय बनता । दूसरों को पढाकर अपनी आजीविका का वर्षो तक निर्वाह कर सकता था । परन्तु वह पोथी को न खोलता हुआ सिर्फ बेचने हेतु से गांव-गांव घूमता था। सच ही कहा है कि...

जहां खरो चन्दन भारवाही ।
भारस्स भागी नहु चन्दणरस्य
एवं खु नाणी चरणेण हीणो
नाणस्स भागी न हु सुग्गई ए ॥

गधा जिस तरह चन्दन के काष्ठ को पीठ पर उठा कर चलता है परन्तु वह चन्दन की सुगन्ध का अनुभव नहीं कर पाता, सिर्फ काष्ठ के भार को ही वहन करने वाला बनता है, ठीक उसी तरह चारित्र आचरण रहित सिर्फ ज्ञान इकट्ठा करने वाला ज्ञानी भी ज्ञान का भी भागी कहलाता है, परन्तु सद्गति का भागीदार नहीं बन पाता । यह सार है ।

ब्राह्मण वेचारा शास्त्र पोथी खोलकर एक सुवाक्य भी नहीं पढ पाता था परन्तु पोथी को उठाकर गांव गांव घूमता रहता था। वेचने के लिए सवको दिखाता रहता था । उस काल की वात थी 500 रुपये देकर पोथी कौन खरीदे? एक वर्ष बीत गया । ब्राह्मण परेशान हो गया । अरे रे? देवी ने पोथी क्यों दी ? देवी ने ही 500 रुपये दे दिये होते तो भटकने की यह नोंवत तो नहीं आती आज भी विना पढे पंडित वनने की इच्छा वाले अनेक है । पढना नहीं है, परिश्रम नहीं करना है, परन्तु किसी तरह उपाधि डिग्री हासिल करनी है, विद्वान बनना नहीं है, विद्वान है ऐसा दिखावा करना है । यह सरस्वती का कितना उपहास है? बिना परिश्रम के विद्या उपार्जन न करते हुए भी विद्वता का दावा करना विद्वता न होते हुए भी विद्वता है, ऐसी कीर्ति, प्रशंसा प्राप्त करना मान-सम्मान पुरस्कार एवं पद प्राप्त करना यह भगवती सरस्वती का कितना छल गिना जाएगा । परीक्षाओं को पास करने के ही यह हेतु से सिर्फ पढना और वह भी किसी तरह परीक्षा पास करके उपाधि प्राप्त कर लेनी जिससे आजीविका चला सके । वर्तमान शिक्षा पद्धति का हेतु ज्ञानोपार्जन के बजाय अर्थोपार्जन रह गया है । विद्या सिर्फ अर्थोपार्जन के लिए ही रह गई है । यह कितना निकृष्ट विद्या का हेतु है । एक काल वह था जब विद्या दान से अर्थोपार्जन करना निकृष्ट कहलाता था । आज वह दूषण-भूषण रूप में परिवर्तित हो गया है।

ब्राह्मण घूमता हुआ एक शहर में गया वडी दुकान देखकर चढा । मध्याह्न के समय पिता भोजन के लिए घर गये हुए थे और पुत्र दुकान की गद्दी पर बैठा हुआ था । ब्राह्मण ने शास्त्र पोथी हाथ में देते हुए कहा, देवी ने दी है इत्यादि सारी वात वता दी । लडके ने पोथी खोलकर 2-4 पन्ने पलटे देखा और पढा । उसे वडे कीमती वातें लगी । सोनेरी सुवाक्य लगे । एक वाक्य जीवन में उतर जाये तो जीवन पलट जाये, ऐसा लगते ही 500 रुपये निकालकर दे दिये ब्राह्मण खुश होकर चला ।

सर्वत्र पूजनीय बनता । दूसरों को पढाकर अपनी आजीविका का वर्षो तक निर्वाह कर सकता था । परन्तु वह पोथी को न खोलता हुआ सिर्फ बेचने हेतु से गांव-गांव घूमता था। सच ही कहा है कि...

जहां खरो चन्दन भारवाही ।
भारस्स भागी नहु चन्दणस्य
एवं खु नाणी चरणेण हीणो
नाणस्स भागी न हु सुग्गई ए ॥

गधा जिस तरह चन्दन के काष्ठ को पीठ पर उठा कर चलता है परन्तु वह चन्दन की सुगन्ध का अनुभव नहीं कर पाता, सिर्फ काष्ठ के भार को ही वहन करने वाला बनता है, ठीक उसी तरह चारित्र आचरण रहित सिर्फ ज्ञान इकट्ठा करने वाला ज्ञानी भी ज्ञान का भी भागी कहलाता है, परन्तु सद्गति का भागीदार नहीं बन पाता । यह सार है ।

ब्राह्मण वेचारा शास्त्र पोथी खोलकर एक सुवाक्य भी नहीं पढ पाता था परन्तु पोथी को उठाकर गांव गांव घूमता रहता था। वेचने के लिए सवको दिखाता रहता था । उस काल की वात थी 500 रुपये देकर पोथी कौन खरीदे? एक वर्ष बीत गया । ब्राह्मण परेशान हो गया । अरे रे? देवी ने पोथी क्यों दी ? देवी ने ही 500 रुपये दे दिये होते तो भटकने की यह नौवत तो नहीं आती आज भी बिना पढे पंडित वनने की इच्छा वाले अनेक है । पढना नहीं है, परिश्रम नहीं करना है, परन्तु किसी तरह उपाधि डिग्री हासिल करनी है, विद्वान बनना नहीं है, विद्वान है ऐसा दिखावा करना है । यह सरस्वती का कितना उपहास है? बिना परिश्रम के विद्या उपार्जन न करते हुए भी विद्वता का दावा करना विद्वता न होते हुए भी विद्वता है, ऐसी कीर्ति, प्रशंसा प्राप्त करना मान-सम्मान पुरस्कार एवं पद प्राप्त करना यह भगवती सरस्वती का कितना छल गिना जाएगा । परीक्षाओं को पास करने के ही यह हेतु से सिर्फ पढना और वह भी किसी तरह परीक्षा पास करके उपाधि प्राप्त कर लेनी जिससे आजीविका चला सके । वर्तमान शिक्षा पद्धति का हेतु ज्ञानोपार्जन के बजाय अर्थोपार्जन रह गया है । विद्या सिर्फ अर्थोपार्जन के लिए ही रह गई है । यह कितना निकृष्ट विद्या का हेतु है । एक काल वह था जब विद्या दान से अर्थोपार्जन करना निकृष्ट कहलाता था । आज वह दूषण-भूषण रूप में परिवर्तित हो गया है।

ब्राह्मण घूमता हुआ एक शहर में गया वडी दुकान देखकर चढा । मध्याह्न के समय पिता भोजन के लिए घर गये हुए थे और पुत्र दुकान की गद्दी पर बैठा हुआ था । ब्राह्मण ने शास्त्र पोथी हाथ में देते हुए कहा, देवी ने दी है इत्यादि सारी वात वता दी । लडके ने पोथी खोलकर 2-4 पन्ने पलटे देखा और पढा । उसे वडे कीमती वातें लगी । सोनेरी सुवाक्य लगे । एक वाक्य जीवन में उतर जाये तो जीवन पलट जाये, ऐसा लगते ही 500 रुपये निकालकर दे दिये ब्राह्मण खुश होकर चला ।

आचार-विचार : नारी का

-सा. श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म.

झरोखा प्रकाश के लिए है-कचरे के लिये नही,
इन्द्रियां विकास के लिये हैं, विकार के लिए नहीं।
इस जिंदगी का हर द्वार श्रेय के लिये खुला है
क्योंकि जिन्दगी—
जिन्दगी उत्थान के लिये है, पतन के लिये नही।

उद्यान में गुलाब जब डाली पर खिलता है, विकसित होता है तब वह अपनी सुवास को इधर-उधर दसों दिशाओं में बिखेरने लगता है। लेकिन यह सब कब तक? जव तक कि डाली पर वह फूल विकसित है, खिला हुआ है।

वैसे ही इस विश्व की सुन्दर सुरम्य वाटिका में नारी रूपी गुलाब भी सुसंस्कार की डाली पर सद् आचार-विचार से खिला है, विकसित है तो उसके जीवन की सुवास दशों दिशाओं में विखरेगी। अपने गुणों की मधुर सुवास मात्र अपने आस पास ही नहीं, वल्कि दूर-दूर के क्षेत्रों को अपनी महक देगी। परन्तु वही बात कि कब तक? जव तक वह आचार-विचार की डाली पर विकसित रहेगी खिली रहेगी तव तक। जैसे ही वह आचार-विचार या सुसंस्कार की डाली से खिर गई गिर गई निश्चित ही उसके जीवन का विनाश है, सर्वनाश है।

जहां आर्य सन्नारियों का नाम सदा इतिहास के पृष्ठ पर स्वर्णाक्षर में त्यागिनी, तपस्विनी, वीरांगना और सदाचारिणी के रूप में अंकित रहा है, वहां आज वर्तमान में जो नारी की स्थिति बनी हुई है उसके पीछे यदि कोई मूल कारण है तो उनका आचार-विचार और सुसंस्कार की न्यूनता का है।

जिस देश में नारी की पूजा होती थी आज उसी देश में नारी की फोटुएं सरेआम बाजारों मे दीवारों पर लगाई जाती है। अरे, नारी को अपने जीवन का उत्थान करना होगा, अपने जीवन को उज्जवल बनाना होगा।

तभी तो किसी कवि ने कहा है—
रात को उज्जवल बनाने का काम सितारों का है,
नदी को उज्जवल बनाने का काम किनारों का है,
इससे भी महत्त्वपूर्ण बात तो जीवन की यह है
कि परिवार को उज्जवल बनाने का काम सन्नारियों का है।

आज वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हैं तो नारी शिक्षा के क्षेत्र में तो वहुत ही आगे वढ रही है, परन्तु सुसंस्कार के क्षेत्र में पिछडती जा रही है। शिक्षा वाह्य जीवन का आकर्पण हे लेकिन आन्तरिक जीवन का आकर्षण तो सुसंस्कार है।

सुसंस्कारी नारी अपने जीवन के साथ-साथ अपनी संतान के जीवन का व अपने परिवारजनों के जीवन को भी सुन्दर वनाती हे। जिस घर की नारी सुसंस्कारी है वही घर, परिवार आदर्श वन सकता हे।

आवश्यकता हे नारी अपने जीवन को सदआचार, सद्विचार और व्यवहार से आगे वढने का प्रयास करें।

चातुर्मास - जैन नगर, मेरठ

आचार-विचार : नारी का

-सा. श्री प्रफुल्लप्रभाश्री जी म.

झरोखा प्रकाश के लिए है-कचरे के लिये नही,
इन्द्रियां विकास के लिये हैं, विकार के लिए नहीं।
इस जिंदगी का हर द्वार श्रेय के लिये खुला है
क्योंकि जिन्दगी—
जिन्दगी उत्थान के लिये है, पतन के लिये नही।

उद्यान में गुलाब जब डाली पर खिलता है, विकसित होता है तब वह अपनी सुवास को इधर-उधर दसों दिशाओं में बिखेरने लगता है। लेकिन यह सब कब तक? जब तक कि डाली पर वह फूल विकसित है, खिला हुआ है।

वैसे ही इस विश्व की सुन्दर सुरम्य वाटिका में नारी रूपी गुलाब भी सुसंस्कार की डाली पर सद् आचार-विचार से खिला है, विकसित है तो उसके जीवन की सुवास दशों दिशाओं में विखरेगी। अपने गुणों की मधुर सुवास मात्र अपने आस पास ही नहीं, वल्कि दूर-दूर के क्षेत्रों को अपनी महक देगी। परन्तु वही वात कि कब तक? जव तक वह आचार-विचार की डाली पर विकसित रहेगी खिली रहेगी तव तक। जैसे ही वह आचार-विचार या सुसंस्कार की डाली से खिर गई गिर गई निश्चित हीं। उसके जीवन का विनाश हे, सर्वनाश हे।

जहां आर्य सन्नारियों का नाम सदा इतिहास के पृष्ठ पर स्वर्णाक्षर में त्यागिनी, तपस्विनी, वीरांगना और सदाचारिणी के रूप में अंकित रहा है, वहां आज वर्तमान में जो नारी की स्थिति बनी हुई है उसके पीछे यदि कोई मूल कारण है तो उनका आचार-विचार और सुसंस्कार की न्यूनता का है।

जिस देश में नारी की पूजा होती थी आज उसी देश में नारी की फोटुएं सरेआम बाजारों मे दीवारों पर लगाई जाती है। अरे, नारी को अपने जीवन का उत्थान करना होगा, अपने जीवन को उज्जवल बनाना होगा।

तभी तो किसी कवि ने कहा है—
रात को उज्जवल बनाने का काम सितारों का है,
नदी को उज्जवल बनाने का काम किनारों का है,
इससे भी महत्त्वपूर्ण बात तो जीवन की यह है
कि परिवार को उज्जवल बनाने का काम सन्नारियों का है।

आज वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हैं तो नारी शिक्षा के क्षेत्र में तो बहुत ही आगे वढ रही है, परन्तु सुसंस्कार के क्षेत्र में पिछडती जा रही है। शिक्षा वाह्य जीवन का आकर्षण हे लेकिन आन्तरिक जीवन का आकर्षण तो सुसंस्कार है।

सुसंस्कारी नारी अपने जीवन के साथ-साथ अपनी संतान के जीवन का व अपने परिवारजनों के जीवन को भी सुन्दर वनाती हे। जिस घर की नारी सुसंस्कारी है वही घर, परिवार आदर्श वन सकता है।

आवश्यकता है नारी अपने जीवन को सदआचार, सद्‌विचार और व्यवहार से आगे बढ़ने का प्रयास करें।

चातुर्मास - जैन नगर, मेरठ

प्रथम माता-पिता के पूजक बनें

सा. श्री दिव्यचेतना श्री जी म.

हम अपनी जीवन प्रणाली की गहराई से चिंतन करें तो यह महसूस जरूर होगा कि हमारी संपूर्ण जीवन प्रणाली एक दूसरे के प्रति उपकार पर ही निर्भर है। जन्म पाकर जब से इस संसार में प्रवेश किया है तब से यानि उसी पल से हमारा जीवन अनेक आत्माओं के उपकार के बोझ तले दबा हुआ ही रहा है। इसमें कोई शक नहीं है।

✣ इसी कारण जब हम ट्रेन आदि में सफर करते हैं तो अपनी ट्रेन पटरी के नीचे नहीं उतरती किन्तु इच्छित स्थल पर हमें पहुँचाती है तो उसमें उस ट्रेन-ड्राइवर का ही हमारे प्रति यह उपकार है।

✣ वैसे ही हम फुटपाथ पर बड़े निश्चिंत रूप से आराम से चले जा रहे हैं। किन्तु कोई ट्रक ड्राइवर या कोई टेक्सी ड्राइवर या कोई वाहन चालक अपने वाहन को सीधा फुटपाथ पर जहां हम चल रहे हैं, वह आकर नहीं टकराता तो उसमें भी उस ड्राईवर या वाहन चालक का ही उपकार है।

✣ हम जब कभी भी नाई के पास जाते हैं तो वह बाल ही काटेगा पर गला नहीं। यह उस नाई का उपकार है। इस प्रकार हर कोई क्षेत्र में, कार्य में, किसी न किसी प्रकार से हमारा विश्वास भरा सद्व्यवहार के साथ उपकार की धारा सतत् अपने प्रति बह रही है।

✣ ठाणांग सूत्र एवं 500 ग्रंथ के रचयिता श्री उमा स्वाति जी म.सा. अपने ग्रंथ में उपकारों की बात को दुहराते हुए कहते हैं कि- इस संसार में तीन प्रमुख उपकारकर्ता हैं-

(1) 'माता-पिता'-जो हमारे जीवनदाता हैं।
(2) 'मालिक' यानि स्वामि- जो हमारे जीवनदाता हैं।
(3) 'धर्मगुरु'- जो हमारे धर्मदाता हैं।

इन तीनों के उपकारों से ऋणमुक्त होना आसान नहीं किन्तु बहुत ही कठिन है। आज मालिक या गुरु के उपकारों की नहीं बल्कि एक माता-पिता के उपकारों की बातें करनी है क्योंकि- इन तीन प्रमुख उपकारियों में से सबसे प्रथम माता-पिता ही उपकारी है उन्होंने हमें जन्म न दिया होता तो न कोई जीवनदाता और न कोई धर्मदाता हमारे होते।

जिस परम कृपावंत परमात्मा महावीर स्वामी के शासन में हम जी रहे हैं, उस

प्रथम माता-पिता के पूजक बनें

सा. श्री दिव्यचेतना श्री जी म.

हम अपनी जीवन प्रणाली की गहराई से चिंतन करें तो यह महसूस जरूर होगा कि हमारी संपूर्ण जीवन प्रणाली एक दूसरे के प्रति उपकार पर ही निर्भर है। जन्म पाकर जब से इस संसार में प्रवेश किया है तब से यानि उसी पल से हमारा जीवन अनेक आत्माओं के उपकार के बोझ तले दबा हुआ ही रहा है। इसमें कोई शक नहीं है।

❖ इसी कारण जब हम ट्रेन आदि में सफर करते हैं तो अपनी ट्रेन पटरी के नीचे नहीं उतरती किन्तु इच्छित स्थल पर हमें पहुँचाती है तो उसमें उस ट्रेन-ड्राइवर का ही हमारे प्रति यह उपकार है।

❖ वैसे ही हम फुटपाथ पर बड़े निश्चिंत रूप से आराम से चले जा रहे हैं। किन्तु कोई ट्रक ड्राइवर या कोई टेक्सी ड्राइवर या कोई वाहन चालक अपने वाहन को सीधा फुटपाथ पर जहां हम चल रहे हैं, वह आकर नहीं टकराता तो उसमें भी उस ड्राईवर या वाहन चालक का ही उपकार है।

❖ हम जब कभी भी नाई के पास जाते हैं तो वह बाल ही काटेगा पर गला नहीं। यह उस नाई का उपकार है। इस प्रकार हर कोई क्षेत्र में, कार्य में, किसी न किसी प्रकार से हमारा विश्वास भरा सद्व्यवहार के साथ उपकार की धारा सतत् अपने प्रति बह रही है।

❖ ठाणांग सूत्र एवं 500 ग्रंथ के रचयिता श्री उमा स्वाति जी म.सा. अपने ग्रंथ में उपकारों की बात को दुहराते हुए कहते हैं कि- इस संसार में तीन प्रमुख उपकारकर्ता हैं-

(1) 'माता-पिता'-जो हमारे जीवनदाता हैं।
(2) 'मालिक' यानि स्वामि- जो हमारे जीवनदाता हैं।
(3) 'धर्मगुरु'- जो हमारे धर्मदाता हैं।

इन तीनों के उपकारों से ऋणमुक्त होना आसान नहीं किन्तु बहुत ही कठिन है। आज मालिक या गुरु के उपकारों की नहीं बल्कि एक माता-पिता के उपकारों की बातें करनी है क्योंकि- इन तीन प्रमुख उपकारियों में से सबसे प्रथम माता-पिता ही उपकारी है उन्होंने हमें जन्म न दिया होता तो न कोई जीवनदाता और न कोई धर्मदाता हमारे होते।

जिस परम कृपावंत परमात्मा महावीर स्वामी के शासन में हम जी रहे हैं, उस

चुस्त धार्मिक विचार वाली है। अतः रोजाना ठंडा दूध-खाखरा से चौविहार का पालन कर लेती है। ऐसे तो एक नहीं सैंकड़ों प्रसंग घर-घर में हर समाज में मिलेंगे।

इसके पीछे जो कोई कारण है तो वह यह कि आज मानवता एवं कृतज्ञता गुण समाप्त हो चुके हैं। गणधर भगवंत रचित श्री जयवीराय नामक प्रार्थना सूत्र में 'गुरुजण पूआ' अर्थात् मैं गुरुजनों का पूजक बनुं। यहाँ गुरुजन का मतलब पंच महाव्रत धारण करने वाले न केवल साधु हैं किन्तु माता-पिता आदि घर के तमाम बुजुर्गों का यही क्रम समुचित है।

जो अपने माता-पिता को ही सम्मान नहीं दे सकता, उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता गुण वाला न हो तो, वह उपकारी गुरु भगवंतों का क्या आदर सम्मान करेगा? जो अपने माता-पिता की सेवा प्रेम से नहीं कर पाता वह गुरु भगवंतो की क्या सेवा करेगा? जो माता-पिता के उपकारों को नहीं समझ पाता वह गुरु भगवंतों की करुणा-उपकारों की बातें क्या समझेगा। जो जीवित और प्रत्यक्ष उपकारी हैं उनके आगे नत्मस्तक नहीं हो सकता, वह परमात्मा के असीम उपकारों और करुणा के पास क्या झुकेगा? अर्थात् 'कृतज्ञता' गुण विना धर्म की सारी बातें मिथ्या आडंबर स्वरूप है।

❖ जो माँ-बाप की बीमारी में उनकी सभी औषधियाँ भी ला नहीं पाते और दूसरी ओर अनाथाश्रम में मुफ्त औषधियाँ [illegible] फलों का वितरण करने का ढोंग करते [illegible] इससे क्या लाभ?

❖ जो दंतहीन बूढे बुजुर्ग माँ-बाप गरमागरम एक चाय का कप या खिचडी [illegible] खिला सकते, वह घर में भिखमंगों को [illegible] खिलाये तो क्या लाभ?

❖ जो अपने साफ-सुथरे इस्तरी [illegible] कपड़ों में कोई सिलवट न पड़ जाये [illegible] हरदम ख्याल रखें किन्तु माँ-बाप के चेहरे [illegible] पडी हुई झुर्रियों की जरा सी चिंता न करें [illegible] क्या लाभ?

❖ जो अपने माँ-बाप को जीवन [illegible] रुलाता है, पीडा देता है, वह भविष्य में भवांतर में माँ-बाप बनने के भाग्य से [illegible] रहते हैं यह एक सनातन कटु सत्य है। [illegible] करणी, वैसी भरणी।

❖ याद करो वे...कलिकाल सर्वज्ञ [illegible] हेमचन्द्र सूरी महाराज...कि जिन्होंने [illegible] माता को केवल दीक्षा ही नही दी [illegible] उनके महाप्रयाण के अवसर पर सुंदर से [illegible] अंतिम निर्यामणा पास में रहकर [illegible] और...और उनकी समाधि के लिये [illegible] करोड नवकार मंत्र का जाप एवं साढे [illegible] करोड नये संस्कृत श्लोकों का सृजन [illegible] का भीष्म संकल्प किया।

❖ याद करो वे...पितामह भीष्म जिन्होंने पिता की इच्छाओं को पूर्ण करने [illegible] लिए आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार [illegible]

चुस्त धार्मिक विचार वाली है। अतः रोजाना ठंडा दूध-खाखरा से चौविहार का पालन कर लेती है। ऐसे तो एक नहीं सैंकड़ों प्रसंग घर-घर में हर समाज में मिलेंगे।

इसके पीछे जो कोई कारण है तो वह यह कि आज मानवता एवं कृतज्ञता गुण समाप्त हो चुके हैं। गणधर भगवंत रचित श्री जयवीराय नामक प्रार्थना सूत्र में 'गुरुजण पूआ' अर्थात् मैं गुरुजनों का पूजक बनुं। यहॉ गुरुजन का मतलब पंच महाव्रत धारण करने वाले न केवल साधु हैं किन्तु माता-पिता आदि घर के तमाम बुजुर्गों का यही क्रम समुचित है।

जो अपने माता-पिता को ही सम्मान नहीं दे सकता, उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता गुण वाला न हो तो, वह उपकारी गुरु भगवंतों का क्या आदर सम्मान करेगा? जो अपने माता-पिता की सेवा प्रेम से नहीं कर पाता वह गुरु भगवंतो की क्या सेवा करेगा? जो माता-पिता के उपकारों को नहीं समझ पाता वह गुरु भगवंतों की करुणा-उपकारों की बातें क्या समझेगा। जो जीवित और प्रत्यक्ष उपकारी हैं उनके आगे नत्मस्तक नहीं हो सकता, वह परमात्मा के असीम उपकारों और करुणा के पास क्या झुकेगा? अर्थात् 'कृतज्ञता' गुण विना धर्म की सारी बातें मिथ्या आडंबर स्वरूप है।

✣ जो मॉ-बाप की बीमारी में उनकी सभी औषधियॉं भी ला नहीं पाते और दूसरी ओर अनाथाश्रम में मुफ्त औषधियॉं [illegible] फलों का वितरण करने का ढोंग करते [illegible] इससे क्या लाभ?

✣ जो दंतहीन बूढे बुजुर्ग मॉ-बाप [illegible] गरमागरम एक चाय का कप या खिचडी [illegible] खिला सकते, वह घर में भिखमंगों को [illegible] खिलाये तो क्या लाभ?

✣ जो अपने साफ-सुथरे इस्तरी [illegible] कपड़ों में कोई सिलवट न पड़ जाये [illegible] हरदम ख्याल रखें किन्तु मॉ-बाप के चेहरे [illegible] पडी हुई झुर्रियों की जरा सी चिंता न करें [illegible] क्या लाभ?

✣ जो अपने मॉ-बाप को जीवन [illegible] रुलाता है, पीडा देता है, वह भविष्य में भवांतर में माँ-बाप बनने के भाग्य से व[illegible] रहते हैं यह एक सनातन कटु सत्य है। जै[illegible] करणी, वैसी भरणी।

✣ याद करो वे...कलिकाल सर्वज्ञ [illegible] हेमचन्द्र सूरी महाराज...कि जिन्होंने अ[illegible] माता को केवल दीक्षा ही नही दी [illegible] उनके महाप्रयाण के अवसर पर सुंदर से [illegible] अंतिम निर्यामणा पास में रहकर [illegible] और...और उनकी समाधि के लिये [illegible] करोड नवकार मंत्र का जाप एवं साढे [illegible] करोड नये संस्कृत श्लोकों का सृजन [illegible] का भीष्म संकल्प किया।

✣ याद करो वे...पितामह भीष्म जिन्होंने पिता की इच्छाओं को पूर्ण करने [illegible] लिए आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार [illegible]

दिनों की भूखी बूढी मॉ की भूख मिटाने वहां जा पहुंचा और एक कटोरा चावल पा लिया। खुद भूख सेअति अशक्त होने पर भी अपनी मां के प्रति प्रगाढ प्रेम के कारण अपने पैर में कोई ऐसी शक्ति का संचार मानो हुआ हो वैसे बडी तेजी से पैदल चलकर वापिस घर लौट आया।

मॉ को बेटे की प्रतिक्षा में एक एक पल को गिनती देख तुरन्त ही बेटे ने कहा, ओ मॉ, ओ मेरी प्यारी मॉ, मैं आ गया, लो चावल तुम पहले खा लो।

तब मॉ ने वात्सल्य भाव से सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा- क्या तूने चावल खा लिये? पुत्र का शरीर तेज तापमान से तप रहा था, फिर भी मातृभक्ति से झूठ बोला- हां माँ मेरी प्यारी-प्यारी मॉ मैंने तो...इतने सारे भरपेट चावल रास्ते में आते-आते ही खा लिये। अब तुम जल्दी खा लो, मॉ।

और अधा अधाकर चावल खाती मॉ को तृप्त नजरों से देखते-देखते एक मात्र मातृगुंजन के साथ बेटे ने अपने प्राण छोड़ दिये।

संक्षेप में ऐसे तीर्थस्वरूप मॉ-वाप के उपकारों को हम कभी न भूलें। जैसी भी हो वैसी वह मेरी माँ है। भले अनपढ, गवार क्युं न हो पर 'जननी सखी, जोड नहि जडे रे लोल' ऐसी मधुर कविता के माध्यम से एक गुजराती कवि कहते हैं शहद मधुर हो या वर्षा करने वाले मेघ भी क्युं न मधुर हो किन्तु उनसे भी मीठी मधुर मेरी एक मॉ है जिसकी जोड इस धरती पर कतई मिलनी संभव नहीं है।

इसी कारण ठाणांग सूत्र में यह तक बताया है कि इस संसार में केवल एक ऐसा कार्य है जो करने से अपने मॉ-बाप के ऋणों से मुक्त हो सकें और वह है अपने मॉ-बाप को धर्म के मार्ग पर ले आना यानि परमात्मा द्वारा प्रतिबोधित धर्म पथ पर जो पुत्र अपने मॉ-बाप को ले आता है, वह पुत्र उनके उपकारों से आंशिक ऋण-मुक्त हो सकता है, वरना सारी जिंदगी उनकी सेवा करे या जीवन भर अपने कंधे या पीठ पर लेकर घूमे, या अपनी चमडी उतारकर उसके जूते वनाकर अपने माता-पिता के चरणों में यदि पहना भी दे तो भी वह केवल कर्त्तव्य का पालन ही करता है, किन्तु ऋण मुक्त नहीं बन सकता।

तो ऐसे जन्मदाता माता-पिता के उपकारों को हम कभी भी न भूलें, किन्तु सतत नजर समक्ष रखते हुए मालिक यानि 'जीवनदाता' और धर्मगुरु यानि 'धर्मदाता' तक पहुंचे और उनके चरणों की सेवा प्राप्त कर प्रभु महावीर के संदेश अनुसार जीवन वनायें।

॥ शुभं-भवतु ॥

चातुर्मास-श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर

दिनों की भूखी बूढी मॉ की भूख मिटाने वहां जा पहुंचा और एक कटोरा चावल पा लिया। खुद भूख सेअति अशक्त होने पर भी अपनी मां के प्रति प्रगाढ प्रेम के कारण अपने पैर में कोई ऐसी शक्ति का संचार मानो हुआ हो वैसे बडी तेजी से पैदल चलकर वापिस घर लौट आया।

मॉ को बेटे की प्रतिक्षा में एक एक पल को गिनती देख तुरन्त ही बेटे ने कहा, ओ मॉ, ओ मेरी प्यारी मॉ, मैं आ गया, लो चावल तुम पहले खा लो।

तब मॉ ने वात्सल्य भाव से सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा- क्या तूने चावल खा लिये? पुत्र का शरीर तेज तापमान से तप रहा था, फिर भी मातृभक्ति से झूठ बोला- हां माँ मेरी प्यारी-प्यारी मॉ मैंने तो...इतने सारे भरपेट चावल रास्ते में आते-आते ही खा लिये। अब तुम जल्दी खा लो, मॉ।

और अधा अधाकर चावल खाती मॉ को तृप्त नजरों से देखते-देखते एक मात्र मातृगुंजन के साथ बेटे ने अपने प्राण छोड़ दिये।

संक्षेप में ऐसे तीर्थस्वरूप मॉ-बाप के उपकारों को हम कभी न भूलें। जैसी भी हो वैसी वह मेरी माँ है। भले अनपढ, गवार क्युं न हो पर 'जननी सखी, जोड नहि जडे रे लोल' ऐसी मधुर कविता के माध्यम से एक गुजराती कवि कहते हैं शहद मधुर हो या वर्षा करने वाले मेघ भी क्युं न मधुर हो किन्तु उनसे भी मीठी मधुर मेरी एक मॉ है जिसकी जोड इस धरती पर कतई मिलनी संभव नहीं है।

इसी कारण ठाणांग सूत्र में यह तक बताया है कि इस संसार में केवल एक ऐसा कार्य है जो करने से अपने मॉ-बाप के ऋणों से मुक्त हो सकें और वह है अपने मॉ-बाप को धर्म के मार्ग पर ले आना यानि परमात्मा द्वारा प्रतिबोधित धर्म पथ पर जो पुत्र अपने मॉ-बाप को ले आता है, वह पुत्र उनके उपकारों से आंशिक ऋण-मुक्त हो सकता है, वरना सारी जिंदगी उनकी सेवा करे या जीवन भर अपने कंधे या पीठ पर लेकर घूमे, या अपनी चमडी उतारकर उसके जूते बनाकर अपने माता-पिता के चरणों में यदि पहना भी दे तो भी वह केवल कर्त्तव्य का पालन ही करता है, किन्तु ऋण मुक्त नहीं बन सकता।

तो ऐसे जन्मदाता माता-पिता के उपकारों को हम कभी भी न भूलें, किन्तु सतत नजर समक्ष रखते हुए मालिक यानि 'जीवनदाता' और धर्मगुरु यानि 'धर्मदाता' तक पहुंचे और उनके चरणों की सेवा प्राप्त कर प्रभु महावीर के संदेश अनुसार जीवन बनायें।

॥ शुभं-भवतु ॥

चातुर्मास-श्री आत्मानंद जैन सभा भवन, जयपुर

(13) तेरी मां मेरी माँ भी लगती है (14) मेरे बाप की भी मां लगती है (15) मेरी भोजाई (16) पुत्रवधू (17) सास (18) सोत भी लगती है। इस तरह 18 प्रकार के सम्बन्ध तेरे मेरे बीच में लगते, बनते हैं। तेरा बाप और मैं भाई बहिन हैं और पति पत्नी के सम्बन्ध से जुडे थे। इतना ही नहीं हम भाई (पति) कुबेरदत्त से छूटे तो वह मथुरा में आकर अपनी माँ (वेश्या कुबेरसेना) के साथ देह सम्बन्ध करता हुआ पति रूप में रहने लगा और उससे एक पुत्र पैदा हुआ। हाय ! देखो इस संसार की कैसी भंयकर विचित्रता ! अब क्या किया जाये? किसको मुँह दिखायें।

साध्वी जो कुछ बोल रही थी वह वेश्या ने और कुबेरदत्त दोनों ने सुना। सुनकर बहुत ही दुःख हुआ। विषय वासना के निमित्त फंसे भयंकर पापकर्म हो जाते हैं। पश्चाताप से मन वैराग्य वासित हुआ। भाई ने भी दीक्षा ली। साधु बनकर कडी तपश्चर्या करके पाप धोने का संकल्प किया। वेश्या ने वेश्यावृत्ति छोड दी। सभी पापों को धोने के लिए पश्चाताप एवं प्रायश्चित की प्रवृत्ति में लग गये। कैसा विषम है यह संसार? कैसी घटनाएं धटती है? कैसा स्वरूप धारण कर लेती हैं?

इस तरह देखने से स्पष्ट दिखाई देगा कि समस्त संसार का स्वरूप सैकडों प्रकार की विचित्रताओं, विविधताओं एवं विषमताओं से भरा पडा है। अतः यहां सत्य कहा जाता है कि जहां इस प्रकार की विचित्रता, विषमता एवं विविधताएं भरी पडी है वही संसार है। इसी का नाम संसार है। संसार के बाहर मोक्ष में इनमें से एक भी नहीं है। चित्र अर्थात् आश्चर्य-विचित्रता अर्थात् आश्चर्यकारी-विस्मयकारी स्वरूप। अर्थात् संसार का जो स्वरूप जो भी कोई देखे उसे आश्चर्यकारी ही लगेगा। संसार में आश्चर्य नहीं होगा तो कहां होगा? अतः समस्त आश्चर्यों का केन्द्र संसार ही है। आप देखेंगे कि-

कोई सुखी है तो कोई दुःखी है।
कोई राजा है तो कोई रंक है।
कोई अमीर है तो कोई गरीब है।
कोई बंगले में है तो कोई झोंपडी में है।

किसी के यहां खाने के लिए बहुत है पर अफसोस कि खाने वाला कोई नहीं है। और किसी के यहां खाने वाले बहुत ज्यादा है, तो खाने के लिए रोटी का टुकडा भी नहीं है। यह संसार की कैसी विचित्रता विविधता है। संसार की ऐसी सैकडों विषमताएं हैं और सच कहो तो विषमताओं से भरा पडा संसार मानो विचित्रताओं विषमताओं तथा विविधताओं का ही बना हुआ है। इस संसार की चित्र विचित्र बातें भी कम नहीं है।

ऐसे विचित्र दुःखों से भरे हुए दुःखदायक संसार को देखकर संसारी जीव धर्म के प्रति श्रद्धा, आस्था रखकर धर्म में आगे बढें, संसार को छोडकर संयमी बनकर 14 राजलोकपी मंजिल तोडकर शीघ्रता से मुक्ति को प्राप्त हों यही शुभेच्छा।

चातुर्मास - श्री आत्मानंद जैन सभा भवन, जयपुर

(13) तेरी मां मेरी माँ भी लगती है (14) मेरे बाप की भी मां लगती है (15) मेरी भोजाई (16) पुत्रवधू (17) सास (18) सोत भी लगती है। इस तरह 18 प्रकार के सम्बन्ध तेरे मेरे बीच में लगते, बनते हैं। तेरा बाप और मैं भाई बहिन हैं और पति पत्नी के सम्बन्ध से जुडे थे। इतना ही नहीं हम भाई (पति) कुबेरदत्त से छूटे तो वह मथुरा में आकर अपनी माँ (वेश्या कुबेरसेना) के साथ देह सम्बन्ध करता हुआ पति रूप में रहने लगा और उससे एक पुत्र पैदा हुआ। हाय ! देखो इस संसार की कैसी भंयकर विचित्रता ! अब क्या किया जाये? किसको मुँह दिखायें।

साध्वी जो कुछ बोल रही थी वह वेश्या ने और कुबेरदत्त दोनों ने सुना। सुनकर बहुत ही दुःख हुआ। विषय वासना के निमित्त फंसे भयंकर पापकर्म हो जाते हैं। पश्चाताप से मन वैराग्य वासित हुआ। भाई ने भी दीक्षा ली। साधु बनकर कडी तपश्चर्या करके पाप धोने का संकल्प किया। वेश्या ने वेश्यावृत्ति छोड दी। सभी पापों को धोने के लिए पश्चाताप एवं प्रायश्चित की प्रवृत्ति में लग गये। कैसा विषम है यह संसार? कैसी घटनाएं धटती है? कैसा स्वरूप धारण कर लेती हैं ?

इस तरह देखने से स्पष्ट दिखाई देगा कि समस्त संसार का स्वरूप सैकडों प्रकार की विचित्रताओं, विविधताओं एवं विषमताओं से भरा पडा है। अतः यहां सत्य कहा जाता है कि जहां इस प्रकार की विचित्रता, विषमता एवं विविधताएं भरी पडी है वही संसार है। इसी का नाम संसार है। संसार के बाहर मोक्ष में इनमें से एक भी नहीं है। चित्र अर्थात् आश्चर्य-विचित्रता अर्थात् आश्चर्यकारी-विस्मयकारी स्वरूप। अर्थात् संसार का जो स्वरूप जो भी कोई देखे उसे आश्चर्यकारी ही लगेगा। संसार में आश्चर्य नहीं होगा तो कहां होगा? अतः समस्त आश्चर्यों का केन्द्र संसार ही है। आप देखेंगे कि-

कोई सुखी है तो कोई दुःखी है।
कोई राजा है तो कोई रंक है।
कोई अमीर है तो कोई गरीब है।
कोई बंगले में है तो कोई झोंपडी में है।

किसी के यहां खाने के लिए बहुत है पर अफसोस कि खाने वाला कोई नहीं है। और किसी के यहां खाने वाले बहुत ज्यादा है, तो खाने के लिए रोटी का टुकडा भी नहीं है। यह संसार की कैसी विचित्रता विविधता है। संसार की ऐसी सैकडों विषमताएं हैं और सच कहो तो विषमताओं से भरा पडा संसार मानो विचित्रताओं विषमताओं तथा विविधताओं का ही बना हुआ है। इस संसार की चित्र विचित्र बातें भी कम नहीं है।

ऐसे विचित्र दुःखों से भरे हुए दुःखदायक संसार को देखकर संसारी जीव धर्म के प्रति श्रद्धा, आस्था रखकर धर्म में आगे बढें, संसार को छोडकर संयमी बनकर 14 राजलोककी मंजिल तोडकर शीघ्रता से मुक्ति को प्राप्त हों यही शुभेच्छा।

चातुर्मास - श्री आत्मानंद जैन सभा भवन, जयपुर

है कौन ?

—श्रीमती शान्ती देवी लोढ़ा

है कौन छिपा फूलों के सौरभ में आकर, है कौन छिपा पत्तों की इस हरियाली में ?
है कौन दे रहा ताप सूर्य को अति प्रचंड, है कौन चन्द्रमा की शीतल उजियाली में ?
है कौन निशा की नीरव काली चादर में, तारों के मोती सजा सजा हर्षित होता ?
है कौन उषा के कोमल कलित कपोलों पर, कुंकुम काटी का सजा लाल है कर देता ?
है कौन छिपा सागर के अन्तर में जाकर, किसको छूने को सागर भी है मचल रहा ?
सरिता की चंचल ललित लहर के नर्तन में, है किसका नव संदेश भला यह झलक रहा ?
है कौन छिपा मधु ऋतु की सुषमा में आकर, है कौन कूक में कोयल की मधु घोल रहा ?
है कौन चमकता चपला की चंचल छबि में, है कौन बादलों के गर्जन में बोल रहा ?
है कौन भला दिन का प्रकाश देता हमको, फिर निशा अंधेरी कौन भला कर जाता है ?
जो सूर्य सजाता पूर्व दिशा को प्रातः काल, वह क्यों सन्ध्या को पश्चिम में ढल जाता है ?
जो चन्द्र पूर्णिमा को अम्बर में सजता है, वह अमावस्या निशा में भला कहाँ छिप जाता है ?
है कौन भला चुपचाप अश्रुकण बिखरा कर, प्यासी पृथ्वी पर ओस बिन्दु बरसाता है ?
है कौन दीप की बाती में जो चमक रहा, है कौन छिपा मृदु झोंकों में मलया निल के ?
है इन्द्र धनुप में किसकी शोभा झलक रही, है नीले नभ में कौन खेलता हिलमिल के ?
है कौन जगत का कर्णधार है सृष्टा है, किसके संकेतो पर है सृष्टि नाच रही ?
वह दया सिन्धु क्यों अवलोकित न होता है, चर और अचर में जिसकी सत्ता व्याप रही ?

डी. 682, मालवीय नगर, जयपुर-17

है कौन ?

—श्रीमती शान्ती देवी लोढ़ा

है कौन छिपा फूलों के सौरभ में आकर, है कौन छिपा पत्तों की इस हरियाली में ?
है कौन दे रहा ताप सूर्य को अति प्रचंड, है कौन चन्द्रमा की शीतल उजियाली में ?
है कौन निशा की नीरव काली चादर में, तारों के मोती सजा सजा हर्षित होता ?
है कौन उषा के कोमल कलित कपोलों पर, कुंकुम काटी का सजा लाल है कर देता ?
है कौन छिपा सागर के अन्तर में जाकर, किसको छूने को सागर भी है मचल रहा ?
सरिता की चंचल ललित लहर के नर्तन में, है किसका नव संदेश भला यह झलक रहा ?
है कौन छिपा मधु ऋतु की सुषमा में आकर, है कौन कूक में कोयल की मधु घोल रहा ?
है कौन चमकता चपला की चंचल छबि में, है कौन बादलों के गर्जन में बोल रहा ?
है कौन भला दिन का प्रकाश देता हमको, फिर निशा अंधेरी कौन भला कर जाता है ?
जो सूर्य सजाता पूर्व दिशा को प्रातः काल, वह क्यों सन्ध्या को पश्चिम में ढल जाता है ?
जो चन्द्र पूर्णिमा को अम्बर में सजता है, वह अमावस्या निशा में भला कहाँ छिप जाता है ?
है कौन भला चुपचाप अश्रुकण बिखरा कर, प्यासी पृथ्वी पर ओस बिन्दु बरसाता है ?
है कौन दीप की बाती में जो चमक रहा, है कौन छिपा मृदु झोंकों में मलया निल के ?
है इन्द्र धनुष में किसकी शोभा झलक रही, है नीले नभ में कौन खेलता हिलमिल के ?
है कौन जगत का कर्णधार है सृष्टा है, किसके संकेतो पर है सृष्टि नाच रही ?
वह दया सिन्धु क्यों अवलोकित न होता है, चर और अचर में जिसकी सत्ता व्याप रही ?

डी. 682, मालवीय नगर, जयपुर-17

हुई वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए (3) प्रिय अथवा अप्रिय को राग या द्वेष से सुनने, देखने, सूंघने, चखने, स्पर्श करने, क्रोध, मान, माया, लोभ करने, आर्तध्यान या रौद्रध्यान करने, सांसारिक प्रवृत्तियों के लिए बोलने, सांसारिक कार्यों के लिए काया का उपयोग करने, विषय भोग आदि पर राग करने, शत्रुओं आदि पर द्वेष करने, ये सब कार्य करने से मुझे जो अशुभ कर्मों का बंधन हुआ हो, उसकी मैं निन्दा करता हूं। (4) उपयोग (ध्यान) नहीं रहने से, दबाव होने से, अथवा नौकरी आदि के कारण आने जाने में, बार-बार चलने में, अथवा इधर-उधर घूमने में जो अशुभ कर्म बंधे हों उनकी मैं निन्दा करता हूँ। (5) वीतराग प्रभु के वचनों में शंका, अन्य धर्म की इच्छा, धर्म के फल में शंका, साधु-साध्वी के मैले कपडे देखकर उनके प्रति खराब भावना, मिथ्या दृष्टि वालों की प्रशंसा तथा उनके साथ रहने या भोजन करने संबंधी जो छोटे बडे मुझसे अतिचार (पाप) लगे हों, उनसे में निवृत्त होता हूँ, छूटता हूँ। (6) छ काय के जीवों (पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पति काय और त्रस अर्थात दो इन्द्रिय से पांच इन्द्रियों वाले जीवों की विराधना हुई हो, ऐसी प्रवृत्ति करते हुए अथवा अपने लिए या अन्यों के लिए भोजन बनाते हुए जो मुझे दोष लगा हो, उसकी मैं निन्दा करता हूँ। (7) पॉच अणुव्रत (छोटे व्रत जो साधुओं के व्रतों के मुकाबले में छोटे व्रत हैं, तीन गुण व्रत, चार शिक्षाव्रत जो प्राणी को साधु-जीवन जीने की शिक्षा देते हैं। इन बारह व्रतों में छोटे बडे जो अतिचार मुझे लगे हों, उनसे मैं निवृत्त होता हूँ।

(II) अब पहिले अणुव्रत (प्राणातिपात) में लगे हुए दोषों का प्रतिक्रमण किया जाता है। प्रमाद के कारण-(1) मांस, मदिरा, मद्य, मक्खन खाना (2) इन्द्रियों के सुख की इच्छा (3) चार कषाय (4) निद्रा (5) विकथा-राजकथा, देश कथा, भोजन कथा, स्त्री कथा, अथवा क्रोधादि अप्रशस्त भावों के उदय से जो हिंसा न करने के व्रत में दोष लगे, ऐसा मैंने आचरण किया हो तो मैं उससे निवृत्त होता हूँ। प्राणियों (पशु, नौकर आदि) को निर्दयतापूर्वक मारने, रस्सी या सांकल से इस प्रकार से बांधने कि वे घूम फिर न सकें, उनके अंगों को छेदने (बींधने या खसी करने) बहुत बोझ उन पर लादने, उन्हें भूखे-प्यासे रखने, इस प्रकार पहले अणुव्रत के बारे में मुझसे छोटे बडे जो भी दोष लगे हों उनसे मैं निवृत्त होता हूँ, छूटता हूँ।

(III) दूसरे अणुव्रत में (स्थूल मृषावाद विरमण व्रत)- झूठ नहीं बोलने के व्रत में दोष लगे ऐसा मैंने आचरण किया हो तो उससे मैं छूटता हूँ (इस व्रत के अंतर्गत अप्रिय वचन नहीं बोलना चाहिए एवं पांच वडे झूठ नहीं बोलना चाहिए- (1) कन्या के गुण दोष सही रूप से नहीं वताना (2) पशु के वारे में झूठी प्रशंसा करना (3) जमीन के उपजाऊ नहीं होने पर भी उसको उपजाऊ वताना (4) किसी से रुपया लेने पर भी कहना कि मैंने नहीं लिए (5) झूठी गवाही देना।

हुई वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए (3) प्रिय अथवा अप्रिय को राग या द्वेष से सुनने, देखने, सूंघने, चखने, स्पर्श करने, क्रोध, मान, माया, लोभ करने, आर्तध्यान या रौद्रध्यान करने, सांसारिक प्रवृत्तियों के लिए बोलने, सांसारिक कार्यों के लिए काया का उपयोग करने, विषय भोग आदि पर राग करने, शत्रुओं आदि पर द्वेष करने, ये सब कार्य करने से मुझे जो अशुभ कर्मों का बंधन हुआ हो, उसकी मैं निन्दा करता हूं। (4) उपयोग (ध्यान) नहीं रहने से, दबाव होने से, अथवा नौकरी आदि के कारण आने जाने में, बार-बार चलने में, अथवा इधर-उधर घूमने में जो अशुभ कर्म बंधे हों उनकी मैं निन्दा करता हूँ। (5) वीतराग प्रभु के वचनों में शंका, अन्य धर्म की इच्छा, धर्म के फल में शंका, साधु-साध्वी के मैले कपडे देखकर उनके प्रति खराब भावना, मिथ्या दृष्टि वालों की प्रशंसा तथा उनके साथ रहने या भोजन करने संबंधी जो छोटे बडे मुझसे अतिचार (पाप) लगे हों, उनसे में निवृत्त होता हूँ, छूटता हूँ। (6) छ काय के जीवों (पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पति काय और त्रस अर्थात दो इन्द्रिय से पांच इन्द्रियों वाले जीवों की विराधना हुई हो, ऐसी प्रवृत्ति करते हुए अथवा अपने लिए या अन्यों के लिए भोजन वनाते हुए जो मुझे दोष लगा हो, उसकी मैं निन्दा करता हूँ। (7) पॉच अणुव्रत (छोटे व्रत जो साधुओं के व्रतों के मुकावले में छोटे व्रत हैं, तीन गुण व्रत, चार शिक्षाव्रत जो प्राणी को साधु-जीवन जीने की शिक्षा देते हैं। इन बारह व्रतों में छोटे बडे जो अतिचार मुझे लगे हों, उनसे मैं निवृत्त होता हूँ।

(II) अब पहिले अणुव्रत (प्राणाति पात) में लगे हुए दोषों का प्रतिक्रमण किया जाता है। प्रमाद के कारण-(1) मांस, मदिरा, मद्य, मक्खन खाना (2) इन्द्रियों के सुख की इच्छा (3) चार कषाय (4) निद्रा (5) विकथा-राजकथा, देश कथा, भोजन कथा, स्त्री कथा, अथवा क्रोधादि अप्रशस्त भावों के उदय से जो हिंसा न करने के व्रत में दोष लगे, ऐसा मैंने आचरण किया हो तो मैं उससे निवृत्त होता हूँ। प्राणियों (पशु, नौकर आदि) को निर्दयतापूर्वक मारने, रस्सी या सांकल से इस प्रकार से बांधने कि वे घूम फिर न सकें, उनके अंगों को छेदने (बींधने या खसी करने) बहुत बोझ उन पर लादने, उन्हें भूखे-प्यासे रखने, इस प्रकार पहले अणुव्रत के बारे में मुझसे छोटे बडे जो भी दोष लगे हों उनसे मैं निवृत्त होता हूँ, छूटता हूँ।

(III) दूसरे अणुव्रत में (स्थूल मृषावाद विरमण व्रत)- झूठ नहीं बोलने के व्रत में दोष लगे ऐसा मैंने आचरण किया हो तो उससे मैं छूटता हूँ (इस व्रत के अंतर्गत अप्रिय वचन नहीं बोलना चाहिए एवं पांच वडे झूठ नहीं बोलना चाहिए- (1) कन्या के गुण दोष सही रूप से नहीं वताना (2) पशु के बारे में झूठी प्रशंसा करना (3) जमीन के उपजाऊ नहीं होने पर भी उसको उपजाऊ वताना (4) किसी से रुपया लेने पर भी कहना कि मैंने नहीं लिए (5) झूठी गवाही देना।

व्रत)- दिग-परिमाण व्रत- दसों दिशाओं में जाने आने का प्रमाण लांघने से जो मुझे दोष लगा हो, उससे मैं छूटता हूँ (गृहस्थ जितना अधिक भ्रमण करेंगे उतना ही अधिक आरंभ समारंभ उसके द्वारा होगा)

(VIII) दूसरा गुण व्रत (सातवां श्रावक व्रत)- निश्चित किए हुए प्रमाण से अधिक सचित्र (सजीव) आहार के खाने से, सचित्त से मिले हुए आहार के खाने से, आधा कच्चा-आधा पक्का खाने से, बिना पकी हुई वनस्पति के खाने से, तुच्छ वनस्पति के खाने से (जिसमें खाना कम और फेंकना अधिक हो) जो मुझे छोटे बडे दोष लगे हों उनसे मैं छूटता हूँ। इस व्रत में (1) अंगार कर्म- ऐसा कार्य जिसमें अग्नि का अधिक काम पडता हो (जैसे लुहारी, सुनारी, भाडभूंजा, कुम्हार, दियासलाई, भट्टी, साबुन, चूना, कोयला, बॉइलर, फैक्ट्री, बिजली आदि)। (2) वनकर्म- जिसमें वनस्पति का अधिक समारंभ हो जैसे खेती, बागवानी आदि। (3) शकट कर्म- वाहन बनाने का काम (4) भारक कर्म- वाहन किराए पर चलाने का कार्य (5) स्फोटक कर्म- पृथ्वी तथा पत्थर फोडने का कार्य। (6) दंत वाणिज्य- हाथी दांत आदि- पशु-पक्षियों के बालों, अंगों से बनाई हुई वस्तुओं का व्यापार (7) लाख वाणिज्य- लाख, साजी, साबुन इत्यादि का व्यापार (8) रस वाणिज्य- दूध, दही, घी, तेल आदि का व्यापार। (9) केश वाणिज्य- दास-दासी पशुओं का व्यापार। (10) विष वाणिज्य- जहर एवं जहरीले पदार्थों का व्यापार (11) पीलन- चक्की, घाणी आदि द्वारा अन्न तथा बीजों के पीसने का काम और शस्त्र, कुदाली, फावडे इत्यादि बनाने का कार्य (12) निलांघन कर्म- पशुओं के अंगों को छेदना, काटना आदि का कार्य (13) जलशोषण कर्म- तालाब आदि को सुखाने या खाली करने का काम। (14) असति पोषण- व्यभिचारिणी स्त्रियों, हिंसक पशुओं का पोषण करना या पालना जैसे कुत्ते, बिल्ली, बंदर, तोता, मैना, मुर्गी आदि को पालना या उनका व्यापार करना या उनके खेल करना या देखना, सिंह, बाघ, चीते, रींछ आदि शिकारी प्राणियों को बेचना या उनके खेल करना, सर्कस करना या देखना आदि इन 15 कर्मों को मैं छोडता हूँ।

(IX) आठवां अनर्थ दंड व्रत (तीसरा गुण व्रत)- इसके अन्तर्गत शस्त्र, अग्नि, मूसल, चक्की आदि यंत्र, वशीकरण मंत्र, जडी-बूटी एवं औषधि आदि दूसरों को देते हुए, दिलाते हुए जो अनर्थ दंड (फालतू पाप) मुझे लगा हो, उससे मैं छूटता हूँ। इस व्रत के अंतर्गत काम विकार, अनुचित चेष्टा, आवश्यकता से अधिक बोलना, अधिक योग करना आदि के कारण इस व्रत में मुझे जो दोष लगा हो उसकी मैं निन्दा करता हूँ।

इस व्रत में बिना यतना के स्नान करना, रंग लगाना, मेहंदी लगाना, फालतू बोलना, निंदा करना, रूप की वृद्धि के लिए नए-नए कपडे पहनना, गहने आदि पहिनने के लिए आरंभ समारंभ करना जिससे समय बर्बाद हो एवं आत्म विकास की ओर ध्यान न जावे, बहुत वस्तुएं खाना फालतू है, गंध-पुष्प, सुगंधित

व्रत)- दिग-परिमाण व्रत- दसों दिशाओं में जाने आने का प्रमाण लांघने से जो मुझे दोष लगा हो, उससे मैं छूटता हूँ (गृहस्थ जितना अधिक भ्रमण करेंगे उतना ही अधिक आरंभ समारंभ उसके द्वारा होगा)

(VIII) दूसरा गुण व्रत (सातवां श्रावक व्रत)- निश्चित किए हुए प्रमाण से अधिक सचित्र (सजीव) आहार के खाने से, सचित्त से मिले हुए आहार के खाने से, आधा कच्चा-आधा पक्का खाने से, बिना पकी हुई वनस्पति के खाने से, तुच्छ वनस्पति के खाने से (जिसमें खाना कम और फेंकना अधिक हो) जो मुझे छोटे बडे दोष लगे हों उनसे मैं छूटता हूँ। इस व्रत में (1) अंगार कर्म- ऐसा कार्य जिसमें अग्नि का अधिक काम पडता हो (जैसे लुहारी, सुनारी, भाडभूंजा, कुम्हार, दियासलाई, भट्टी, साबुन, चूना, कोयला, बॉइलर, फैक्ट्री, बिजली आदि)। (2) वनकर्म- जिसमें वनस्पति का अधिक समारंभ हो जैसे खेती, बागवानी आदि। (3) शकट कर्म- वाहन बनाने का काम (4) भारक कर्म- वाहन किराए पर चलाने का कार्य (5) स्फोटक कर्म- पृथ्वी तथा पत्थर फोडने का कार्य। (6) दंत वाणिज्य- हाथी दांत आदि- पशु-पक्षियों के बालों, अंगों से बनाई हुई वस्तुओं का व्यापार (7) लाख वाणिज्य- लाख, साजी, साबुन इत्यादि का व्यापार (8) रस वाणिज्य- दूध, दही, घी, तेल आदि का व्यापार। (9) केश वाणिज्य- दास-दासी पशुओं का व्यापार। (10) विष वाणिज्य- जहर एवं जहरीले पदार्थो का व्यापार (11) पीलन- चक्की, घाणी आदि द्वारा अन्न तथा बीजों के पीसने का काम और शस्त्र, कुदाली, फावडे इत्यादि बनाने का कार्य (12) निलांघन कर्म- पशुओं के अंगों को छेदना, काटना आदि का कार्य (13) जलशोषण कर्म- तालाब आदि को सुखाने या खाली करने का काम। (14) असति पोषण- व्यभिचारिणी स्त्रियों, हिंसक पशुओं का पोषण करना या पालना जैसे कुत्ते, बिल्ली, बंदर, तोता, मैना, मुर्गी आदि को पालना या उनका व्यापार करना या उनके खेल करना या देखना, सिंह, बाघ, चीते, रींछ आदि शिकारी प्राणियों को बेचना या उनके खेल करना, सर्कस करना या देखना आदि इन 15 कर्मों को मैं छोडता हूँ।

(IX) आठवां अनर्थ दंड व्रत (तीसरा गुण व्रत)- इसके अन्तर्गत शस्त्र, अग्नि, मूसल, चक्की आदि यंत्र, वशीकरण मंत्र, जडी-बूटी एवं औषधि आदि दूसरों को देते हुए, दिलाते हुए जो अनर्थ दंड (फालतू पाप) मुझे लगा हो, उससे मैं छूटता हूँ। इस व्रत के अंतर्गत काम विकार, अनुचित चेष्टा, आवश्यकता से अधिक बोलना, अधिक योग करना आदि के कारण इस व्रत में मुझे जो दोष लगा हो उसकी मैं निन्दा करता हूँ।

इस व्रत में बिना यतना के स्नान करना, रंग लगाना, मेहंदी लगाना, फालतू बोलना, निंदा करना, रूप की वृद्धि के लिए नए-नए कपडे पहनना, गहने आदि पहिनने के लिए आरंभ समारंभ करना जिससे समय बर्बाद हो एवं आत्म विकास की ओर ध्यान न जावे, बहुत वस्तुएं खाना फालतू हैं, गंध-पुष्प, सुगंधित

वस्तुओं को जानने की उत्सुकता वृद्धि ने उसे खोजी बनाया है। खोज करते हुए इस विषय में कई महापुरुषों के अलग अलग विचार व्यक्त किये हैं उनमें बहुत सी बातों में समानता है । चिरंतनाचार्य जी ने तो अनुमोदना पर पंचसूत्र की रचना ही कर डाली है । उन्होंने इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है और अनुमोदना की प्रक्रिया को बहुत सरल बना दिया है। उन्होंने बताया है कि संसार में जो जो महापुरुष हुए उन्होंने अपने जीवन का विकास कैसे किया? उन्होंने कोनसी प्रक्रियाएं अपनाई जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंच गये । उनका स्मरण करते हुए, अपनाते हुए आचरण करते हुए अगर हम अपनी विकास क्रिया का ध्यान रखते हुए उनके बताये हुए मार्ग अनुसार अनुकरण करें तो हम अपना विकास भली प्रकार कर सकते हैं। दान, शील, तप, भावना के अनुसार इन चारों धर्म मार्ग में प्रवर्त्तन करते हुए आगे बढ सकते हें । हमारे जीवन का लक्ष्य भी आगे बढना ही है और इससे आगे बढने की भावना की अनुमोदना से पूर्ति हो जाती है। इसलिये जैसा उन महापुरुषों ने किया उसके अनुकूल 'अनुमोदना' करना हमारे लिये हितकारी है।

आत्मप्रति बोध

इसके लिये हमें इस प्रकार से चिंतन-मनन करना श्रेयस्कर है हमें अपने आपसे तीन प्रश्न करने चाहियें । वे इस प्रकार हैं-

'कोऽहम्' मैं कौन हूँ? उत्तर है- **'सोऽहम्'** मैं वह हूँ, स्वयं आत्मा हूँ । चेतन हूँ। आत्मा शरीर से भिन्न-भिन्न हैं । शरीर तो मुझे संसार के कार्य-कलाप करने के लिये अपने ही प्रयत्नों से मिला है । मैं अनंतज्ञानवान हूँ अनन्त गुणों वाला हूँ। शुद्ध हूँ, बुद्ध हूँ, ज्ञान गुण हूँ, मैं निर्मल हूँ, निरंजन और निराकार हूँ। निर्लिप्त हूँ। कर्म प्रभाव से मैं अपने आपको भूला हुआ हूँ । मैं स्वयं परमात्म स्वरूप हूँ । मुझे स्वयं मुक्त होकर स्व स्वरूप पाकर उसमें लीन होना है । मेरा प्रयास तो मोक्ष है । मुझे वही पाना है और मेरा अजरामर स्थान वही है । मुझे अपने पुरुषार्थ से जन्म, जरा और मृत्यु से छुटकारा पाकर उसी सिद्ध स्थान पर जाकर सदा काल के लिये स्थिर होना है । वहां जाकर फिर संसार में नहीं लौटना है, मुझे वहां अपने में ही रमण करना है । यही मेरा लक्ष्य है जिसे मुझे हर संभव प्रयत्न करके प्राप्त करना है । उसी में मेरा कल्याण है ।

दूसरा चिंतन 'आगतो स्मि' अर्थात् मैं कहां से आया हूँ? उत्तर है इस अनंत संसार में अनंत काल से चौरासी लाख योनियों में भवभ्रमण करते हुए, नाना प्रकारों के सुख दुख सहते हुए अब मैंने पुण्य से महान दुर्लभ मानव जन्म पाया है । मैंने एकेन्द्रिय से लगाकर पंचेन्द्रिय तक की बहुत बडी-बडी और लम्बी-लम्बी यात्राएं की है और अब भी कर रहा हूँ । किन्तु इन यात्राओं से और सांसारिक कलह और यातनाओं से छुटकारा

वस्तुओं को जानने की उत्सुकता वृद्धि ने उसे खोजी बनाया है। खोज करते हुए इस विषय में कई महापुरुषों के अलग अलग विचार व्यक्त किये हैं उनमें बहुत सी बातों में समानता है । चिरंतनाचार्य जी ने तो अनुमोदना पर पंचसूत्र की रचना ही कर डाली है । उन्होंने इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है और अनुमोदना की प्रक्रिया को बहुत सरल बना दिया है । उन्होंने बताया है कि संसार में जो जो महापुरुष हुए उन्होंने अपने जीवन का विकास कैसे किया? उन्होंने कोनसी प्रक्रियाएं अपनाई जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंच गये । उनका स्मरण करते हुए, अपनाते हुए आचरण करते हुए अगर हम अपनी विकास क्रिया का ध्यान रखते हुए उनके बताये हुए मार्ग अनुसार अनुकरण करें तो हम अपना विकास भली प्रकार कर सकते हैं। दान, शील, तप, भावना के अनुसार इन चारों धर्म मार्ग में प्रवर्त्तन करते हुए आगे बढ सकते हैं। हमारे जीवन का लक्ष्य भी आगे बढना ही है और इससे आगे बढने की भावना की अनुमोदना से पूर्ति हो जाती है। इसलिये जैसा उन महापुरुषों ने किया उसके अनुकूल 'अनुमोदना' करना हमारे लिये हितकारी है।

आत्मप्रति वोध

इसके लिये हमें इस प्रकार से चिंतन-मनन करना श्रेयस्कर है हमें अपने आपसे तीन प्रश्न करने चाहियें । वे इस प्रकार हैं-

'कोऽहम' मैं कौन हूँ? उत्तर है- **'सोऽहम्'** मैं वह हूँ, स्वयं आत्मा हूँ । चेतन हूँ। आत्मा शरीर से भिन्न-भिन्न हैं। शरीर तो मुझे संसार के कार्य-कलाप करने के लिये अपने ही प्रयत्नों से मिला है । मैं अनंतज्ञानवान हूँ अनन्त गुणों वाला हूँ। शुद्ध हूँ, बुद्ध हूँ, ज्ञान गुण हूँ, मैं निर्मल हूँ, निरंजन और निराकार हूँ। निर्लिप्त हूँ। कर्म प्रभाव से मैं अपने आपको भूला हुआ हूँ । मैं स्वयं परमात्म स्वरूप हूँ । मुझे स्वयं मुक्त होकर स्व स्वरूप पाकर उसमें लीन होना है । मेरा प्रयास तो मोक्ष है । मुझे वही पाना है और मेरा अजरामर स्थान वही है । मुझे अपने पुरुषार्थ से जन्म, जरा और मृत्यु से छुटकारा पाकर उसी सिद्ध स्थान पर जाकर सदा काल के लिये स्थिर होना है । वहां जाकर फिर संसार में नहीं लौटना है, मुझे वहां अपने में ही रमण करना है । यही मेरा लक्ष्य है जिसे मुझे हर संभव प्रयत्न करके प्राप्त करना है । उसी में मेरा कल्याण है ।

दूसरा चिंतन 'आगतो स्मि' अर्थात् मैं कहां से आया हूँ? उत्तर है इस अनंत संसार में अनंत काल से चौरासी लाख योनियों में भवभ्रमण करते हुए, नाना प्रकारों के सुख दुख सहते हुए अब मैंने पुण्य से महान दुर्लभ मानव जन्म पाया है । मैंने एकेन्द्रिय से लगाकर पंचेन्द्रिय तक की बहुत बडी-बडी और लम्बी-लम्बी यात्राएं की है और अब भी कर रहा हूं । किन्तु इन यात्राओं से और सांसारिक कलह और यातनाओं से छुटकारा

हो जाती है। इतना सब लिखने का तात्पर्य केवल एक ही है कि महापुरुषों ने जो अपने जीवन को उत्तम बनाने हेतु किया है और सत्कार्य किये वे हमारे ध्यान में आवे और हम उसके अनुरूप 'अनुमोदना' कर सकें ताकि हमारे लिये भी हमारा मार्ग प्रशस्त और आनंदकारी हो।

अनुमोदना से लाभ

अनुमोदना से जीवन में सरलता आती है दूसरों के गुण ग्राह्यता की बुद्धि जागृत होती है। अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है मानस निर्मल और पवित्र बनता है। विनय और विवेक प्रगट होता है। कषाय दूर होते हैं।

रागद्वेष की परिणति कम होती है इससे आत्मा निर्मल एवं उज्जवल होती है इस प्रकार छोटे-बडे अनेकों लाभ है जो कि हमें, इस 'अनुमोदना' की क्रिया से प्राप्त होते हैं। इसके साथ ही जो दुष्कृत की निन्दा गर्ह (घृणा) और पश्चाताप वाली क्रिया है उस क्रिया के करने पर ही अनुमोदना की क्रिया की पुष्टि होती है। उसके बिना अनुमोदना की क्रिया अधूरी रह जाती है। कारगर नहीं होती इसलिये यहां दोनों ही क्रियाओं का उल्लेख किया गया हे। एक क्रिया दूसरी की पूरक है। दोनों आवश्यक क्रियाएं हैं

सुकृत की अनुमोदना

अरिहंत परमात्मा, मूल पाठ सिद्ध भगवंत, आचार्य भगवंत, साधु साध्वी, श्रावक श्राविका, देव देवियां, यावत् नरक निगोद के जीवों के द्वारा किये गये, किये जा रहे, सुकृत की एवं जन्म जन्मांतर से अपने द्वारा किये गये सुकृत की, शुभ कार्यो की, अच्छे कार्यो की, हे परमात्मा! आपकी सान्निध्यता में, आत्मा की साक्षी से

बार बार अनुमोदना करता हूॅ
पुनः पुनः अनुमोदना करता हूँ

बार बार सच्चे श्रद्धा भरे निर्मल हृदय से अनुमोदना करता हूॅ।

दुष्कृत की निन्दा, महा (कृणा) और पश्चाताप

हे परमात्मा! जन्म, जन्मांतर से, नाना योनियों में, भटकते हुए तथा इस जन्म में मेरे द्वारा किये दुष्कृतों की अशुभ कार्यों की बुरे कार्यो की बारंबार आपके सान्निध्य में आत्म साक्षी से निन्दा करता हूॅ घृणा (गर्ल) करता हूॅ, पश्चाताप करता हूॅ।

प्रभो! क्षमा करो, क्षमा करो, क्षमा करो, इस विद्या को करने के बाद मन प्रफुल्लित, आनंदित होगा और हर्षित होगा।

जब मन आनंदित होता है तो उसमें और भी कुछ करने की जिज्ञासा होगी इसलिये यहां एक छोटा सा वैराग्य के भावों से गर्भित श्लोक लिखा जा रहा जिसका लाभ उठाया जा सकता है-

वैराग्य रस का झरना
इत्रो, न किंचित्, न किंचित्
यतो यतो यामि, ततो न किंचित्।
विचार्य, पश्यामि जगन्न किंचित्

हो जाती है । इतना सब लिखने का तात्पर्य केवल एक ही है कि महापुरुषों ने जो अपने जीवन को उत्तम बनाने हेतु किया है और सत्कार्य किये वे हमारे ध्यान में आवे और हम उसके अनुरूप 'अनुमोदना' कर सकें ताकि हमारे लिये भी हमारा मार्ग प्रशस्त और आनंदकारी हो ।

अनुमोदना से लाभ

अनुमोदना से जीवन में सरलता आती है दूसरों के गुण ग्राह्यता की बुद्धि जागृत होती है । अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है मानस निर्मल और पवित्र बनता है । विनय और विवेक प्रगट होता है । कषाय दूर होते हैं ।

रागद्वेष की परिणति कम होती है इससे आत्मा निर्मल एवं उज्जवल होती है इस प्रकार छोटे-बडे अनेकों लाभ है जो कि हमें, इस 'अनुमोदना' की क्रिया से प्राप्त होते हैं । इसके साथ ही जो दुष्कृत की निन्दा गर्ह (घृणा) और पश्चाताप वाली क्रिया है उस क्रिया के करने पर ही अनुमोदना की क्रिया की पुष्टि होती है । उसके बिना अनुमोदना की क्रिया अधूरी रह जाती है । कारगर नहीं होती इसलिये यहां दोनों ही क्रियाओं का उल्लेख किया गया हे । एक क्रिया दूसरी की पूरक है । दोनों आवश्यक क्रियाएं हैं

सुकृत की अनुमोदना

अरिहंत परमात्मा, मूल पाठ सिद्ध भगवंत, आचार्य भगवंत, साधु साध्वी, श्रावक श्राविका, देव देवियां, यावत् नरक निगोद के जीवों के द्वारा किये गये, किये जा रहे, सुकृत की एवं जन्म जन्मांतर से अपने द्वारा किये गये सुकृत की, शुभ कार्यो की, अच्छे कार्यों की, हे परमात्मा ! आपकी सान्निध्यता में, आत्मा की साक्षी से

बार बार अनुमोदना करता हूँ
पुनः पुनः अनुमोदना करता हूँ
बार बार सच्चे श्रद्धा भरे निर्मल हृदय से अनुमोदना करता हूँ ।

दुष्कृत की निन्दा, महा (कृणा) और पश्चाताप

हे परमात्मा ! जन्म, जन्मांतर से, नाना योनियों में, भटकते हुए तथा इस जन्म में मेरे द्वारा किये दुष्कृतों की अशुभ कार्यों की बुरे कार्यों की बारंबार आपके सान्निध्य में आत्म साक्षी से निन्दा करता हूँ घृणा (गर्ह) करता हूँ, पश्चाताप करता हूँ ।

प्रभो ! क्षमा करो, क्षमा करो, क्षमा करो, इस विद्या को करने के बाद मन प्रफुल्लित, आनंदित होगा और हर्षित होगा ।

जब मन आनंदित होता है तो उसमें और भी कुछ करने की जिज्ञासा होगी इसलिये यहां एक छोटा सा वैराग्य के भावों से गर्भित श्लोक लिखा जा रहा जिसका लाभ उठाया जा सकता है-

वैराग्य रस का झरना
इत्रो, न किंचित्, न किंचित्
यतो यतो यामि, ततो न किंचित् ।
विचार्य, पश्यामि जगन्न किंचित्

जैन धर्म और डाक टिकिट

-श्री महेन्द्र कुमार दोसी

जैन धर्म की संस्कृति अति प्राचीन है। हमारे देश का नाम भी प्रथम तीर्थकर आदिश्वर भगवान के पुत्र भरत चक्रवर्ती महाराज के नाम से ही भारत हुआ है। जैन धर्म के महत्त्व को अन्य धर्म के अनुयायियों ने भी पहचाना तथा जाना है। इसी महत्त्व को स्वीकारते हुए डाक तार विभाग ने समय-समय पर जैन मंदिरों, आचार्य महाराज सा., महापुरुषों तथा जैन कलात्मक कृतियों पर डाक टिकिट तथा प्रथम दिवस कवर निकाले हैं।

जैन धर्म से संबंधित डाक टिकिटों का विवरण क्रम नीचे लिखे अनुसार बांट सकते हैं।

(1) मंदिर (2) महाराज साहब (3) महापुरुष (4) कलात्मक कृति (5) प्रथम दिवस कवर।

मंदिर

हमारे देश की स्वाधीनता से भी पूर्व अंग्रेजों ने जैन धर्म के महत्त्व को स्वीकार किया। उस समय अंग्रेजों का प्रमुख कार्यस्थल कलकत्ता हुआ करता था। अंग्रेज जैन धर्म की संस्कृति से बहुत अधिक प्रभावित हुए। अंग्रेजों के राज्य में जार्ज पंचम के राज्यारोहण की सिल्वर जुबली मनाई जा रही थी। इतने विशाल वैभवपूर्ण कार्यक्रम में उन्होंने तीर्थंकर भगवान को भी बहुत याद किया। उस समय कई प्रमुख अंग्रेज अधिकारी कलकत्ता स्थित श्री शीतलनाथ भगवान के मंदिर नियमित रूप से दर्शन करने आते थे। सिल्वर जुबली समारोह के अन्तर्गत प्रकाशित डाक टिकिट शीतलनाथ भगवान को समर्पित हुआ है। राजा-रानी के अलावा उस समय अन्य कोई डाक टिकिट नहीं था। किसी भी अन्य सामग्री पर प्रकाशित यह पहला डाक टिकिट है, वह भी हमारे जैन मंदिर का। इसी से इसका महत्त्व स्पष्ट होता है।

कलकत्ता के प्रसिद्ध शीतलनाथ भगवान के मंदिर पर यह डाक टिकिट 6 मई सन् 1935 को प्रकाशित हुआ था। इस टिकिट का रंग काला तथा हल्का नीला तथा मूल्य 1¼ आना है। टिकिट पर मंदिर के साथ ही किंग जार्ज-पंचम की फोटो भी है जो मानो भगवान के दर्शन कर रही हो। यह टिकिट अब दुर्लभ टिकिटों की श्रेणी में है तथा इसकी कीमत इस समय हजारों रुपयों में है। अंग्रेजों द्वारा भारत में प्रकाशित किसी अन्य धर्म पर यह पहला टिकिट था।

जैन मंदिरों की श्रृंखला में दूसरा टिकिट हमारे अति प्राचीन सबसे पवित्र शाश्वत तीर्थ तीर्थाधिराज शत्रुंजय (पालीताणा तीर्थ) पर प्रकाशित हुआ है। 15 अगस्त सन् 1949 को यह आकर्षक टिकिट भूरे काले तथा [illegible]

जैन धर्म और डाक टिकिट

-श्री महेन्द्र कुमार दोसी

जैन धर्म की संस्कृति अति प्राचीन है । हमारे देश का नाम भी प्रथम तीर्थंकर आदिश्वर भगवान के पुत्र भरत चक्रवर्ती महाराज के नाम से ही भारत हुआ है । जैन धर्म के महत्त्व को अन्य धर्म के अनुयायियों ने भी पहचाना तथा जाना है । इसी महत्त्व को स्वीकारते हुए डाक तार विभाग ने समय-समय पर जैन मंदिरों, आचार्य महाराज सा., महापुरुषों तथा जैन कलात्मक कृतियों पर डाक टिकिट तथा प्रथम दिवस कवर निकाले हैं ।

जैन धर्म से संबंधित डाक टिकिटों का विवरण क्रम नीचे लिखे अनुसार बांट सकते हैं ।

(1) मंदिर (2) महाराज साहब (3) महापुरुष (4) कलात्मक कृति (5) प्रथम दिवस कवर ।

मंदिर

हमारे देश की स्वाधीनता से भी पूर्व अंग्रेजों ने जैन धर्म के महत्त्व को स्वीकार किया । उस समय अंग्रेजों का प्रमुख कार्यस्थल कलकत्ता हुआ करता था । अंग्रेज जैन धर्म की संस्कृति से बहुत अधिक प्रभावित हुए । अंग्रेजों के राज्य में जार्ज पंचम के राज्यारोहण की सिल्वर जुबली मनाई जा रही थी । इतने विशाल वैभवपूर्ण कार्यक्रम में उन्होंने तीर्थंकर भगवान को भी बहुत याद किया । उस समय कई प्रमुख अंग्रेज अधिकारी कलकत्ता स्थित श्री शीतलनाथ भगवान के मंदिर नियमित रूप से दर्शन करने आते थे । सिल्वर जुबली समारोह के अन्तर्गत प्रकाशित डाक टिकिट शीतलनाथ भगवान को समर्पित हुआ है । राजा-रानी के अलावा उस समय अन्य कोई डाक टिकिट नहीं था । किसी भी अन्य सामग्री पर प्रकाशित यह पहला डाक टिकिट है, वह भी हमारे जैन मंदिर का । इसी से इसका महत्त्व स्पष्ट होता है ।

कलकत्ता के प्रसिद्ध शीतलनाथ भगवान के मंदिर पर यह डाक टिकिट 6 मई सन् 1935 को प्रकाशित हुआ था । इस टिकिट का रंग काला तथा हल्का नीला तथा मूल्य 1¼ आना है । टिकिट पर मंदिर के साथ ही किंग जार्ज-पंचम की फोटो भी है जो मानो भगवान के दर्शन कर रही हो । यह टिकिट अब दुर्लभ टिकिटों की श्रेणी में है तथा इसकी कीमत इस समय हजारों रुपयों में है । अंग्रेजों द्वारा भारत मे प्रकाशित किसी अन्य धर्म पर यह पहला टिकिट था ।

जैन मंदिरों की श्रृंखला में दूसरा टिकिट हमारे अति प्राचीन सबसे पवित्र शाश्वत तीर्थ तीर्थाधिराज शत्रुंजय (पालीताणा तीर्थ) पर प्रकाशित हुआ है । 15 अगस्त सन् 1949 को एक आकर्षक टिकिट भूरे काले तथा [illegible]

सिद्धांत अहिंसा, सत्य, अपिरग्रह, ब्रह्मचर्य, अचौर्य भी कमल की पत्तियों में लिखे गये हैं।

अभी हाल ही में 9 अगस्त, 2002 को भी जैन श्वेताम्बर पंथ के स्थानकवासी समुदाय के श्रमण संघ के महान आचार्य श्री आनंद ऋषि जी महाराज साहब की पुण्य स्मृति में बहुरंगी टिकिट कीमत 4/- रु. का निकाला गया है । पू. आचार्य की फोटो के साथ ही जैन धर्म की महत्त्वपूर्ण बात अहिंसा को भी दर्शाया गया है ।

महापुरुष

जैन धर्म के अनुयायियों ने न केवल व्यापार, उद्योग, अपितु शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है । विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. विक्रम अम्बालाल सारा भाई को कौन नहीं जानता । हमारे वर्तमान राष्ट्रपति माननीय कलाम सा. उन्हें अपना गुरु मानते हैं । डा. विक्रम सारा भाई की प्रथम पुण्य तिथि पर 30 दिसम्बर 1972 को भूरे तथा हरे रंग में मूल्य 20 पैसे की श्रेणी में आकर्षक डाक टिकिट निकाला गया है । उनके फोटो के साथ वैज्ञानिक प्रगति के प्रतीक राकेट तथा जैन धर्म के शांती के संदेश के रूप में कबूतर भी दिखलाये गये हैं ।

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं समाजसेवी डा. भाऊराव पाटिल के उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए विभाग ने आकर्षक लाल-भूरे रंग का टिकिट दिनांक 9 मई सन् 1988 को 60 पैसे मूल्य का प्रकाशित किया है । उनकी फोटो के साथ ही पढते हुए बच्चे (साक्षरता कक्षा) भी दर्शाये गये हैं ।

प्रसिद्ध पुरातत्वज्ञ प्रोफेसर डा. जे.सी. जैन के पुरातत्व जगत में सराहनीय कार्य को दृष्टि में रखते हुए 28 जनवरी 1998 को आकर्षक टिकिट रु. 2/- मूल्य श्रेणी में निकाला है । उनकी फोटो के साथ ही सहस्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा की फोटो भी है जो राणकपुर तीर्थ से ली गई प्रतीत होती है । साथ ही मोहनजोदडो खुदाई में मिले सभ्यता के चिह्न प्रतीक रूप में छापे गये हैं ।

स्मारक एवं कलाकृति

प्रसिद्ध स्थल खजुराहो के जैन मंदिर में कलाकृति 'युवती लिखने की मुद्रा में' पर आकर्षक टिकिट 15 अगस्त 1965 को रु. 1/- मूल्य श्रेणी में निकाला गया है ।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिश्वर भगवान की माता मरु देवी ऐरावत हाथी पर बैठी हुई मुद्रा में, की अति प्राचीन कलाकृति गुजरात के भुज संग्रहालय में रखी हुई है इसी कलाकृति को आकर्षक रंग में 27 जुलाई 1978 को 25 पैसे मूल्य श्रेणी में डाक टिकिट पर निकाला गया है ।

वडौदा संग्रहालय की शताब्दी के अवसर पर संग्रहालय में रखी कलाकृति पर एक साथ दो टिकिटों की मिनीयेचर शीट मूल्य रु. 6/- तथा मूल्य रु. 11/- का आकर्षक बहुरंगी टिकिट दिनांक 20 दिसम्बर 1994 को निकाल गये हैं । यह टिकिट अलग-अलग तथा साथ-साथ ही उपयोग में लिये जा सकते हैं ।

सिद्धांत अहिंसा, सत्य, अपिरग्रह, ब्रह्मचर्य, अचौर्य भी कमल की पत्तियों में लिखे गये हैं।

अभी हाल ही में 9 अगस्त, 2002 को भी जैन श्वेताम्बर पंथ के स्थानकवासी समुदाय के श्रमण संघ के महान आचार्य श्री आनंद ऋषि जी महाराज साहब की पुण्य स्मृति में बहुरंगी टिकिट कीमत 4/- रु. का निकाला गया है। पू. आचार्य की फोटो के साथ ही जैन धर्म की महत्त्वपूर्ण बात अहिंसा को भी दर्शाया गया है।

महापुरुष

जैन धर्म के अनुयायियों ने न केवल व्यापार, उद्योग, अपितु शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. विक्रम अम्बालाल सारा भाई को कौन नहीं जानता। हमारे वर्तमान राष्ट्रपति माननीय कलाम सा. उन्हें अपना गुरु मानते हैं। डा. विक्रम सारा भाई की प्रथम पुण्य तिथि पर 30 दिसम्बर 1972 को भूरे तथा हरे रंग में मूल्य 20 पैसे की श्रेणी में आकर्षक डाक टिकिट निकाला गया है। उनके फोटो के साथ वैज्ञानिक प्रगति के प्रतीक राकेट तथा जैन धर्म के शांती के संदेश के रूप में कबूतर भी दिखलाये गये हैं।

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं समाजसेवी डा. भाऊराव पाटिल के उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए विभाग ने आकर्षक लाल-भूरे रंग का टिकिट दिनांक 9 मई सन् 1988 को 60 पैसे मूल्य का प्रकाशित किया है। उनकी फोटो के साथ ही पढते हुए बच्चे (साक्षरता कक्षा) भी दर्शाये गये हैं।

प्रसिद्ध पुरातत्वज्ञ प्रोफेसर डा. जे.सी. जैन के पुरातत्व जगत में सराहनीय कार्य को दृष्टि में रखते हुए 28 जनवरी 1998 को आकर्षक टिकिट रु. 2/- मूल्य श्रेणी में निकाला है। उनकी फोटो के साथ ही सहस्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा की फोटो भी है जो राणकपुर तीर्थ से ली गई प्रतीत होती है। साथ ही मोहनजोदडो खुदाई में मिले सभ्यता के चिह्न प्रतीक रूप में छापे गये हैं।

स्मारक एवं कलाकृति

प्रसिद्ध स्थल खजुराहो के जैन मंदिर में कलाकृति 'युवती लिखने की मुद्रा में' पर आकर्षक टिकिट 15 अगस्त 1965 को रु. 1/- मूल्य श्रेणी में निकाला गया है।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिश्वर भगवान की माता मरु देवी ऐरावत हाथी पर बैठी हुई मुद्रा में, की अति प्राचीन कलाकृति गुजरात के भुज संग्रहालय में रखी हुई है इसी कलाकृति को आकर्षक रंग में 27 जुलाई 1978 को 25 पैसे मूल्य श्रेणी में डाक टिकिट पर निकाला गया है।

बडौदा संग्रहालय की शताब्दी के अवसर पर संग्रहालय में रखी कलाकृति पर एक साथ दो टिकिटों की मिनीयेचर शीट मूल्य रु. 6/- तथा मूल्य रु. 11/- का आकर्षक बहुरंगी टिकिट दिनांक 20 दिसम्बर 1994 को निकाले गये हैं। यह टिकिट अलग-अलग तथा साथ-साथ ही उपयोग में लिये जा सकते हैं।

जैन तीर्थ नांदिया

-श्रीमती रानी भण्डारी, एडवोकेट

राजस्थान की देवनगरी ''सिरोही'' ऐतिहासिक व अति प्राचीन जैन मंदिरों की नगरी है। सिरोही जिला जैन मंदिरों एवं तीर्थों का विशाल गढ है, जहां अधिकतम अतिप्राचीन जैन तीर्थ होने से सिरोही को ''देवनगरी'' के नाम से भी परिभाषित किया है। सिरोही नगरी जैन मंदिरों की नगरी स्वयं में प्रमाणित है। आबू पर्वत की शाखाओं की हारमाल का एक मोती ''नांदिया'' है। प्राकृतिक एवं रमणीय वातावरण में नांदिया जैन तीर्थ है। जो आज ''जीवित महावीर स्वामी'' जैन तीर्थ के नाम से भी सुप्रसिद्ध है। प.पू. दिव्य विभूति, अध्यात्ममूर्ति, आचार्य भगवन्त श्री कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के शब्दों में...''नांदिया'' भगवान श्री महावीर की साधना स्थली प्रमाणित है और विचरण क्षेत्र भी रहा। यहां की धरा का एक-एक कण पवित्र व वन्दनीय है। नांदिया जैन तीर्थ के दर्शन-पूजन करना ही व्यक्ति के सौभाग्य को प्रमाणित करता है। प.पू. अध्यात्ममूर्ति, आचार्य श्री कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. ने भी इस क्षेत्र में विचरण-स्थिरता के साथ एक लम्बे समय तक नांदिया में साधना की थी।

2600 वर्ष प्राचीन तीर्थ नांदिया (नंदिवर्धनपुर) भगवान के बडे भ्राता श्री नंदिवर्धन राजा ने अपने नाम का गांव बसाया था। प्रभु महावीर स्वामी जब यहां जीवित समय में विहार करते थे तब यहां प्रभुजी के देह प्रमाण भव्य देशी पाषाण (पत्थर) में आवे-हुव मूर्ति प्रभुजी की सात हाथ काया की, उसी प्रमाण अष्ट प्रतिहार्य सहित बिम्ब (मूर्ति) विराज़मान की थी जो वर्तमान में विराजमान है। प्रगट प्रभावी तीर्थंकर की मूर्ति के दर्शन-पूजन का लाभ प्राप्त करना, आत्मकल्याण का सरल व श्रेष्ठ मार्ग है।

हमारी आस्था के परम शासन नायक तीर्थकर श्री महावीर स्वामी को चन्डकौशिक का सर्पदंश का उपसर्ग भी नान्दिया में हुआ था। चन्डकौशिक नामक सर्प ने श्री महावीर स्वामी के अंगूठे को काटा, उक्त काटे गये स्थान से खून के स्थान पर दूध की धारा बहती देख चन्डकौशिक सर्प स्तब्ध रह गया, उसे अपने पूर्वभव का तत्काल स्मरण हुआ। परमात्मा के उपदेश का श्रवण करके उच्चगति को प्राप्त करने के इतिहास से सभी परिचित है। ऐसे पावन-पवित्र स्थल के दर्शनमात्र से आत्म-कल्याण निश्चित है और आत्मा मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होती है। इस पावन स्थल पर निर्मित कलात्मक व भव्य मंदिर की प्रतिष्ठा प.पू. युवकजागृति प्रेरक, 213 दीक्षा के प्रदाता, सन्तशिरोमणि आचार्य श्री गुणरत्नसूरीश्वर जी म.सा. की पावन निश्रा में सम्पन्न हुई थी।

यह पावन एवं पवित्र स्थली नान्दिया पूर्णरूप से धर्म की नगरी प्रमाणित है। यह गौरवमयी धरती प.पू. कलिकाल-कल्पतरु,

जैन तीर्थ नांदिया

-श्रीमती रानी भण्डारी, एडवोकेट

राजस्थान की देवनगरी ''सिरोही'' ऐतिहासिक व अति प्राचीन जैन मंदिरों की नगरी है। सिरोही जिला जैन मंदिरों एवं तीर्थों का विशाल गढ है, जहां अधिकतम अतिप्राचीन जैन तीर्थ होने से सिरोही को ''देवनगरी'' के नाम से भी परिभाषित किया है। सिरोही नगरी जैन मंदिरों की नगरी स्वयं में प्रमाणित है। आबू पर्वत की शाखाओं की हारमाल का एक मोती ''नांदिया'' है। प्राकृतिक एवं रमणीय वातावरण में नांदिया जैन तीर्थ है। जो आज ''जीवित महावीर स्वामी'' जैन तीर्थ के नाम से भी सुप्रसिद्ध है। प.पू. दिव्य विभूति, अध्यात्ममूर्ति, आचार्य भगवन्त श्री कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के शब्दों में...''नांदिया'' भगवान श्री महावीर की साधना स्थली प्रमाणित है और विचरण क्षेत्र भी रहा। यहां की धरा का एक-एक कण पवित्र व वन्दनीय है। नांदिया जैन तीर्थ के दर्शन-पूजन करना ही व्यक्ति के सौभाग्य को प्रमाणित करता है। प.पू. अध्यात्ममूर्ति, आचार्य श्री कलापूर्ण सूरीश्वर जी म.सा. ने भी इस क्षेत्र में विचरण-स्थिरता के साथ एक लम्बे समय तक नांदिया में साधना की थी।

2600 वर्ष प्राचीन तीर्थ नांदिया (नंदिवर्धनपुर) भगवान के बडे भ्राता श्री नंदिवर्धन राजा ने अपने नाम का गांव बसाया था। प्रभु महावीर स्वामी जब यहां जीवित समय में विहार करते थे तब यहां प्रभुजी के देह प्रमाण भव्य देशी पाषाण (पत्थर) में आवे-हुव मूर्ति प्रभुजी की सात हाथ काया की, उसी प्रमाण अष्ट प्रतिहार्य सहित बिम्ब (मूर्ति) विराज़मान की थी जो वर्तमान में विराजमान है। प्रगट प्रभावी तीर्थंकर की मूर्ति के दर्शन-पूजन का लाभ प्राप्त करना, आत्मकल्याण का सरल व श्रेष्ठ मार्ग है।

हमारी आस्था के परम शासन नायक तीर्थकर श्री महावीर स्वामी को चन्डकौशिक का सर्पदंश का उपसर्ग भी नान्दिया में हुआ था। चन्डकौशिक नामक सर्प ने श्री महावीर स्वामी के अंगूठे को काटा, उक्त काटे गये स्थान से खून के स्थान पर दूध की धारा बहती देख चन्डकौशिक सर्प स्तब्ध रह गया, उसे अपने पूर्वभव का तत्काल स्मरण हुआ। परमात्मा के उपदेश का श्रवण करके उच्चगति को प्राप्त करने के इतिहास से सभी परिचित है। ऐसे पावन-पवित्र स्थल के दर्शनमात्र से आत्म-कल्याण निश्चित है और आत्मा मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होती हं। इस पावन स्थल पर निर्मित कलात्मक व भव्य मंदिर की प्रतिष्ठा प.पू. युवकजागृति प्रेरक, 213 दीक्षा के प्रदाता, सन्तशिरोमणि आचार्य श्री गुणरत्नसूरीश्वर जी म.सा. की पावन निश्रा में सम्पन्न हुई थी।

यह पावन एवं पवित्र स्थली नान्दिया पूर्णरूप से धर्म की नगरी प्रमाणित है। यह गौरवमयी धरती प.पू. कलिकाल-कल्पतरु,

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ

-श्रीमती चेतना शाह

'हमारी संस्कृति और हमारे तीर्थ' यह लेख के माध्यम से हमने पहले (गतांक) में खारवाडा के 'श्री स्थंभन पार्श्वनाथ भगवान' के मंदिर की जानकारी प्राप्त की। इस बार हम वहीं त्रंबावटी नगरी यानि खंभात के पास में बसे हुए गांव शकरपुर की जानकारी प्राप्त करेंगे। यह गांव है तो छोटा सा पर यहां दो जिन मंदिर और एक गुरु मंदिर एक ही स्थान पर बने हुए हैं।

मैंने इस लेख को लिखते वक्त दो पुस्तकों का सहारा लिया है।

1. ''चालो स्तंभन तीर्थ'' संकलन-संपादन मुनि कल्याण बोधि विजय जी म.सा.

2. ''खंभात के जिनालय'' चंद्रकांत जी कडिया सेठ आणंद जी कल्याण जी, अहमदाबाद

अहमदाबाद से खंभात का सफर ढाई घंटे का है। खंभात के पास में पूर्व की ओर डेढ कि.मी. की दूरी पर शकरपुर गांव है। जहां चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान, विहरमान श्री सीमंधर स्वामी भगवान और साथ में है गुरु मंदिर इस गुरु मंदिर में विराजित हैं गुरु गौतम स्वामी। यहां के शिलालेख में विजय हीरसूरी म.सा. और विजय सेन सूरी म.सा. के नाम का उल्लेख है।

'श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान' का मंदिर सं. 1653 पहले के समय का है। श्री सीमंधर स्वामी का मंदिर सं. 1659 के आस पास का है। कई वर्षों तक इस मंदिर का वहीवट सेठ श्री रमणलाल दलसुख भाई के हाथ में था। अब इन मंदिरों की पूरी व्यवस्था, देखभाल श्री तपागच्छ अमर जैन शाला संघ के तत्वावधान में है। खंभात का प्राचीन जैन इतिहास के ग्रंथ के अनुसार इस मंदिर का जीर्णोद्धार श्री विजय नेमिसूरी म.सा. की निश्रा में हुआ था। चिंतामणि पार्श्वनाथ के जिनालय में आरस (मकराना) के पत्थर पर चौकीशी का उल्लेख है।

आज यहां जो गुरु मंदिर है उसकी स्थापना श्री विजय नेमिसूरी म.सा. ने करवाई थी। गुरु मंदिर में श्री गौतम स्वामी भगवान की साधुवेश में मूर्ति है। सं. 1947 में जयति हुअण स्तोत्र ग्रंथ की प्रस्तावना में खंभात के विस्तार के सभी जिनालयों के बाद शकरपुर गांव में ये दोनों जिनालय है ऐसा उल्लेख है लोकोक्ति ऐसी है कि इस गांव को अकबर बादशाह ने बसाया था। उस समय उसे शक्रपुर के नाम से जाना जाता था। जिनालय के चौगान में एक लेख है। इस लेख में कवि ऋषभे सं. 1670 में रचित अपने साहित्य 'कुमार पाल रास हैं यह विगत है। श्री गौतम स्वामी की मूर्ति के पीछे अशोकवृक्ष का चित्र है। महावीर स्वामी

एक परिचय

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ

-श्रीमती चेतना शाह

'हमारी संस्कृति और हमारे तीर्थ' यह लेख के माध्यम से हमने पहले (गतांक) में खारवाडा के 'श्री स्थंभन पार्श्वनाथ भगवान' के मंदिर की जानकारी प्राप्त की। इस बार हम वहीं त्रंबावटी नगरी यानि खंभात के पास में बसे हुए गांव शकरपुर की जानकारी प्राप्त करेंगे। यह गांव है तो छोटा सा पर यहां दो जिन मंदिर और एक गुरु मंदिर एक ही स्थान पर बने हुए हैं।

मैंने इस लेख को लिखते वक्त दो पुस्तकों का सहारा लिया है।

1. ''चालो स्तंभन तीर्थ'' संकलन-संपादन मुनि कल्याण बोधि विजय जी म.सा.

2. ''खंभात के जिनालय'' चंद्रकांत जी कडिया सेठ आणंद जी कल्याण जी, अहमदाबाद

अहमदाबाद से खंभात का सफर ढाई घंटे का है। खंभात के पास में पूर्व की ओर डेढ कि.मी. की दूरी पर शकरपुर गांव है। जहां चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान, विहरमान श्री सीमंधर स्वामी भगवान और साथ में है गुरु मंदिर इस गुरु मंदिर में विराजित हैं गुरु गौतम स्वामी। यहां के शिलालेख में विजय हीरसूरी म.सा. और विजय सेन सूरी म.सा. के नाम का उल्लेख है।

'श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान' का मंदिर सं. 1653 पहले के समय का है। श्री सीमंधर स्वामी का मंदिर सं. 1659 के आस पास का है। कई वर्षो तक इस मंदिर का वहीवट सेठ श्री रमणलाल दलसुख भाई के हाथ में था। अब इन मंदिरों की पूरी व्यवस्था, देखभाल श्री तपागच्छ अमर जैन शाला संघ के तत्वावधान में है। खंभात का प्राचीन जैन इतिहास के ग्रंथ के अनुसार इस मंदिर का जीर्णोद्धार श्री विजय नेमिसूरी म.सा. की निश्रा में हुआ था। चिंतामणि पार्श्वनाथ के जिनालय में आरस (मकराना) के पत्थर पर चौकीशी का उल्लेख है।

आज यहां जो गुरु मंदिर है उसकी स्थापना श्री विजय नेमिसूरी म.सा. ने करवाई थी। गुरु मंदिर में श्री गौतम स्वामी भगवान की साधुवेश में मूर्ति है। सं. 1947 में जयति हुअण स्तोत्र ग्रंथ की प्रस्तावना में खंभात के विस्तार के सभी जिनालयों के बाद शकरपुर गांव में ये दोनों जिनालय है ऐसा उल्लेख है लोकोक्ति ऐसी है कि इस गांव को अकवर बादशाह ने बसाया था। उस समय उसे शक्रपुर के नाम से जाना जाता था। जिनालय के चौगान में एक लेख है। इस लेख में कवि ऋषभे सं. 1670 में रचित अपने साहित्य 'कुमार पाल रास हैं यह विगत है। श्री गौतम स्वामी की मूर्ति के पीछे अशोकवृक्ष का चित्र है। महावीर स्वामी

स्वाध्याय :
स्व को जानने का सशक्त माध्यम

-कु. शानु जैन

जिस प्रकार -

वृक्षों की शोभा फल-फूलों से होती है
सरिता की शोभा प्रवाह से होती है
चिंतन के साथ सोचो भाग्यवानों,
जीवन की शोभा स्वाध्याय से होती है।

स्वाध्याय दो शब्दों के मेल से बना है- स्व + अध्याय। स्व अर्थात् स्वयं का और अध्याय अर्थात् चिंतन, मनन करना। तात्पर्य यह है कि किसी अन्य साधना के बिना अपने आप ही अपना अध्ययन करना स्वाध्याय है। वास्तव में 'मैं कौन हूँ' ये समझना ही स्वाध्याय है। जैसा कि कहते हैं-

'भाग्य को चमकाने को पुरुषार्थ चाहिये।
भावों को दर्शाने को शब्दार्थ चाहिये।
आत्मा के निकट पहुंचने के लिए,
जीवन में स्वाध्याय का समावेश चाहिये।'

स्वाध्याय अज्ञानन्धकार को दूर करता है, प्रकाश फैलाता है शान्ति प्रदान करता है, क्रोध को विनष्ट करता है, धर्म को विस्तृत करता है और पाप को धुनता है। जिस प्रकार एक धनुर्धारी बिना बाण के लक्ष्य वेध नहीं सकता ठीक उसी प्रकार मानव भी बिना स्वाध्याय के मोक्ष रूपी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

अब प्रश्न उठता है कि जब हमारा जीवन इतना सरल और सुगम है तो स्वाध्याय की बंदिश लगाने की क्या आवश्यकता है ? तो इसका उत्तर यह दिया जा सकता है कि जैसे नदी के प्रवाह को मर्यादित रखने के लिए दो किनारों की जरूरत होती है वैसे ही स्वयं के वास्तविक स्वरूप को जानकर सच्चे आनंद की प्राप्ति करने के लिए ही स्वाध्याय की आवश्यकता अनुभव होती है। जैसे सूर्य के उदय होते ही अंधकार लुप्त हो जाता है उसी प्रकार स्वाध्याय रूपी सूर्य के महाप्रकाश में राग-द्वेष-कषाय रूपी अन्धकार टिक ही नहीं सकता।

स्वाध्याय तो जीवन का अमृत है। स्वाध्याय करने से अनेक ज्ञान की बातें हमारी दृष्टि में आती हैं, कर्म-मल का लेप दूर होता है, मन को शांति की अनुभूति होती है। अहम, दंभ, ममत्व, स्वार्थपरक भाव मिट जाते हैं और स्वाध्याय करने वाला साधक अंत में अजर अमर पद को प्राप्त करता है।

आचारांग सूत्र में कहा गया है-

''जो अपने को नहीं जानता,
वह दूसरों को क्या जानेगा ?''

अब प्रश्न उठता है कि स्वाध्याय किसका करें? तो हमें ऐसा साहित्य पढ़ना चाहिये जिससे आत्मोत्थान की प्रेरणा मिले। जिससे हमारा चित्त, वाणी, विचार सभी शुद्ध हों। जिस प्रकार मूल के बिना वृक्ष नहीं होता, नींव के बिना मकान नहीं बनता और एक अंक के बिना शून्य का कोई मूल्य नहीं होता उसी प्रकार स्वाध्याय के बिना अन्य धार्मिक क्रियाओं का कोई महत्व नहीं होता।

स्वाध्याय :
स्व को जानने का सशक्त माध्यम

-कु. शानु जैन

जिस प्रकार -

वृक्षों की शोभा फल-फूलों से होती है
सरिता की शोभा प्रवाह से होती है
चिंतन के साथ सोचो भाग्यवानों,
जीवन की शोभा स्वाध्याय से होती है।

स्वाध्याय दो शब्दों के मेल से बना है- स्व + अध्याय। स्व अर्थात् स्वयं का और अध्याय अर्थात् चिंतन, मनन करना। तात्पर्य यह है कि किसी अन्य साधना के बिना अपने आप ही अपना अध्ययन करना स्वाध्याय है। वास्तव में 'मैं कौन हूँ' ये समझना ही स्वाध्याय है। जैसा कि कहते हैं-

'भाग्य को चमकाने को पुरुषार्थ चाहिये।
भावों को दर्शाने को शब्दार्थ चाहिये।
आत्मा के निकट पहुंचने के लिए,
जीवन में स्वाध्याय का समावेश चाहिये।'

स्वाध्याय अज्ञानन्धकार को दूर करता है, प्रकाश फैलाता है शान्ति प्रदान करता है, क्रोध को विनष्ट करता है, धर्म को विस्तृत करता है और पाप को धुनता है। जिस प्रकार एक धनुर्धारी बिना बाण के लक्ष्य वेध नहीं सकता ठीक उसी प्रकार मानव भी बिना स्वाध्याय के मोक्ष रूपी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

अब प्रश्न उठता है कि जब हमारा जीवन इतना सरल और सुगम है तो स्वाध्याय की बंदिश लगाने की क्या आवश्यकता है? तो इसका उत्तर यह दिया जा सकता है कि जैसे नदी के प्रवाह को मर्यादित रखने के लिए दो किनारों की जरूरत होती है वैसे ही स्वयं के वास्तविक स्वरूप को जानकर सच्चे आनंद की प्राप्ति करने के लिए ही स्वाध्याय की आवश्यकता अनुभव होती है। जैसे सूर्य के उदय होते ही अंधकार लुप्त हो जाता है उसी प्रकार स्वाध्याय रूपी सूर्य के महाप्रकाश में राग-द्वेष-कषाय रूपी अन्धकार टिक ही नहीं सकता।

स्वाध्याय तो जीवन का अमृत है। स्वाध्याय करने से अनेक ज्ञान की बातें हमारी दृष्टि में आती हैं, कर्म-मल का लेप दूर होता है, मन को शांति की अनुभूति होती है। अहम, दंभ, ममत्व, स्वार्थपरक भाव मिट जाते हैं और स्वाध्याय करने वाला साधक अंत में अजर अमर पद को प्राप्त करता है।

आचारांग सूत्र में कहा गया है-

"जो अपने को नहीं जानता,
वह दूसरों को क्या जानेगा?"

अब प्रश्न उठता है कि स्वाध्याय किसका करें? तो हमें ऐसा साहित्य पढ़ना चाहिये जिससे आत्मोत्थान की प्रेरणा मिले। जिससे हमारा चित्त, वाणी, विचार सभी शुद्ध हों। जिस प्रकार मूल के बिना वृक्ष नहीं होता, नींव के बिना मकान नहीं बनता और एक अंक के बिना शून्य का कोई मूल्य नहीं होता उसी प्रकार स्वाध्याय के बिना अन्य धार्मिक क्रियाओं का कोई महत्व नहीं होता।

जैन धर्म में तीर्थंकर-मान्यता

-श्रीमती प्रमिला देवी भाडियां

जैन परम्परा में सर्वोपरि उपासनीय देवाधि देव अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु नामक पंच परमेष्ठी माने गये हैं। अर्हन्त आत्मसाधना द्वारा ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, मोहनीय और अन्तराय इन चार कर्मो जो घातिया कर्म कहलाते हैं-के क्षय से बनते हैं। इन कर्मो के क्षय से उनकी आत्मा के अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन अनन्त सुख और अनन्त वीर्य गुण प्रगट हो जाते हैं। अर्हन्त, अरहन्त, अरि-अरिहन्त ये शब्द समानर्थक है। इन सबका एक ही अर्थ है अरि अर्थात शत्रु हन्त अर्थात नाश करने वाला। आत्मा के शत्रु कर्म हें। उनका नाश करने वाला अर्हन्त कहलाता है। सिद्ध वह आत्म कहलाती है जिसने सम्पूर्ण कर्मो का क्षय करके शुद्ध आत्मा स्वरुप की प्राप्ति कर ली है तथा जो संसार में सदा काल के लिये जन्म मरण की परम्परा से मुक्त हो चुका है। अर्हन्त और सिद्ध दोनों ही परमात्मा कहलाते है। अन्तर इतना ही है कि अर्हन्त सशरीरी परमात्मा हैं और सिद्ध अशरीरी परमात्मा है। आयु कर्म शेष रहने के कारण अर्हन्त के चार कर्म जो अघातिया कर्म कहलाते हैं अभी शेष हैं जब उनके वे चारों अघातिया कर्म नष्ट हो जाते हैं तब वे अशरीरी परमात्मा बन जाते हैं वे ही सिद्ध कहलाते हैं।

शेष तीन परमेष्ठी-आचार्य उपाध्याय और साधु साधक दशा में है और उनका लक्ष्य आत्म साधना द्वारा आत्म सिद्धि प्राप्त कर क्रमशः अर्हन्त और सिद्ध बनना है। साधु समस्त आरम्भ और परिग्रह का त्याग करके ध्यानाध्ययन द्वारा आत्म साधना करते हैं और साधुओं में विशिष्ट ज्ञानी साधु अन्य साधुओं को अध्ययन कराते हैं। उन साधुओं में से विशिष्ट ज्ञानवान आचार सम्पन्न, शासन-अनुशासन में सक्षम व्यवहार कुशल साधु को साधु साध्वी श्रावक और श्राविका यह चतुर्विध संघ अपना धर्म नायक स्वीकार करके उन्हें आचार्य पद प्रदान करता है। वह आचार्य कहलाते है। इस प्रकार साधु उपाध्याय और आचार्य ये तीन और परमेष्ठी होते हैं। ये ही पंच परमेष्ठी कहलाते हैं।

जैन परम्परा में मान्य महामंत्र णमोकार में इन्हीं पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है। किसी व्यक्ति विशेष का नामोल्लेख न करके एतद गुणों से विभूषित आत्माओं को ही परमेष्ठी माना गया है। इससे

जैन धर्म में तीर्थंकर-मान्यता

-श्रीमती प्रमिला देवी भाडियां

जैन परम्परा में सर्वोपरि उपासनीय देवाधि देव अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु नामक पंच परमेष्ठी माने गये हैं। अर्हन्त आत्मसाधना द्वारा ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, मोहनीय और अन्तराय इन चार कर्मो जो घातिया कर्म कहलाते हैं-के क्षय से बनते हैं। इन कर्मो के क्षय से उनकी आत्मा के अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन अनन्त सुख और अनन्त वीर्य गुण प्रगट हो जाते हैं। अर्हन्त, अरहन्त, अरि-अरिहन्त ये शब्द समानर्थक है। इन सबका एक ही अर्थ है अरि अर्थात शत्रु हन्त अर्थात नाश करने वाला। आत्मा के शत्रु कर्म हैं। उनका नाश करने वाला अर्हन्त कहलाता है। सिद्ध वह आत्म कहलाती है जिसने सम्पूर्ण कर्मो का क्षय करके शुद्ध आत्मा स्वरूप की प्राप्ति कर ली है तथा जो संसार में सदा काल के लिये जन्म मरण की परम्परा से मुक्त हो चुका है। अर्हन्त और सिद्ध दोनों ही परमात्मा कहलाते है। अन्तर इतना ही है कि अर्हन्त सशरीरी परमात्मा है और सिद्ध अशरीरी परमात्मा है। आयु कर्म शेष रहने के कारण अर्हन्त के चार कर्म जो अघातिया कर्म कहलाते हैं अभी शेष हैं जब उनके वे चारों अघातिया कर्म नष्ट हो जाते हैं तब वे अशरीरी परमात्मा बन जाते हैं वे ही सिद्ध कहलाते हैं।

शेष तीन परमेष्ठी-आचार्य उपाध्याय और साधु साधक दशा में है और उनका लक्ष्य आत्म साधना द्वारा आत्म सिद्धि प्राप्त कर क्रमशः अर्हन्त और सिद्ध बनना है। साधु समस्त आरम्भ और परिग्रह का त्याग करके ध्यानाध्ययन द्वारा आत्म साधना करते हैं और साधुओं में विशिष्ट ज्ञानी साधु अन्य साधुओं को अध्ययन कराते हैं। उन साधुओं में से विशिष्ट ज्ञानवान आचार सम्पन्न, शासन-अनुशासन में सक्षम व्यवहार कुशल साधु को साधु साध्वी श्रावक और श्राविका यह चतुर्विध संघ अपना धर्म नायक स्वीकार करके उन्हें आचार्य पद प्रदान करता है। वह आचार्य कहलाते है। इस प्रकार साधु उपाध्याय और आचार्य ये तीन और परमेष्ठी होते हैं। ये ही पंच परमेष्ठी कहलाते हैं।

जैन परम्परा में मान्य महामंत्र णमोकार में इन्हीं पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है। किसी व्यक्ति विशेष का नामोल्लेख न करके एतद गुणों से विभूषित आत्माओं को ही परमेष्ठी माना गया है। इससे

श्री महावीर जी तीर्थ

राजस्थान में बम्बई-दिल्ली मार्ग पर स्थित श्री महावीर जी रेल्वे स्टेशन से चार किलोमीटर दूरी पर श्री महावीर जी का प्राचीन प्रसिद्ध जैन तीर्थ है। इस मंदिर के मूलनायक भगवान श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त मल्यागिरी रंग की अति भव्य, मनमोहक एवं चमत्कारी है।

यह प्रतिमा श्वेताम्बर है जिस पर कन्दोरा लंगोट के स्पष्ट चिह्न है एवं नेत्र खुले हुए है। यह भी ऐतिहासिक तथ्य है कि इस मंदिर एवं मंदिर के चारों ओर स्थित कटला (धर्मशाला) का निर्माण श्वेताम्बर आमनाय के श्री जोधराज जी पल्लीवाल, भरतपुर राज्य के तत्कालीन दीवान ने करवाया था। इस मंदिर की प्रतिष्ठा भी संवत् 1826 में श्वेताम्बर मान्यता के विजयगच्छीय महानन्द सागरा सूरि जी द्वारा करवाई गई।

इस मंदिर का प्रबन्ध एवं अधिकार दीर्घकाल तक इसी क्षेत्र के श्वेताम्बर धर्मावलंबियों की पंचायत द्वारा होता रहा किन्तु कालान्तर में समीपवर्ती जयपुर रियासत के दिगम्बर बन्धुओं के राज्य में विभिन्न पदों पर उच्चासीन होने से उन्होंने अपने पद व अधिकार का लाभ उठाकर इस तीर्थ व इसकी व्यवस्था पर अनाधिकृत कब्जा कर लिया।

इस अनाधिकृत कब्जे के विरोध में उस क्षेत्र की जागरूक श्वेताम्बर जैन पल्लीवाल पंचायत ने स्व. श्री नारायण लाल जी पल्लीवाल के नेतृत्व में संगठित होकर इस तीर्थ को दिगम्बर समाज के कब्जे से मुक्त कराने को प्रयासरत होकर न्यायालय में वाद प्रस्तुत किया। वर्ष 1973 में सम्पूर्ण श्वेताम्बर समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में श्री जैन श्वेताम्बर (मूर्तिपूजक) श्री महावीर जी तीर्थ रक्षा समिति के नाम से संस्था का रजिस्ट्रेशन कराया गया। यह संस्था इसी महती ध्येय में सतत् प्रयत्नशील है। निरन्तर विभिन्न न्यायालयों में वाद-प्रतिवाद चलते रहने के परिणामतः श्वेताम्बर समाज की ओर से अब इस विवाद के सम्बन्ध में राजस्थान उच्च न्यायालय में दिनांक 2.2.95 को अपील प्रस्तुत कर न्याय चाहा गया है। दिगम्बर समाज द्वारा अपने प्रभुत्व का सदपुयोग कर विभिन्न बाधाएं खड़ी करने पर भी श्वेताम्बर समाज ने न्यायालय में उक्त तीर्थ श्वेताम्बर होने के प्रमाण में अपने 18 गवाह करवाकर अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत कर दिये हैं।

इस समिति की ओर से इस वाद में

श्री महावीर जी तीर्थ

राजस्थान में बम्बई-दिल्ली मार्ग पर स्थित श्री महावीर जी रेल्वे स्टेशन से चार किलोमीटर दूरी पर श्री महावीर जी का प्राचीन प्रसिद्ध जैन तीर्थ है । इस मंदिर के मूलनायक भगवान श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त मल्यागिरी रंग की अति भव्य, मनमोहक एवं चमत्कारी है ।

यह प्रतिमा श्वेताम्बर है जिस पर कन्दोरा लंगोट के स्पष्ट चिह्न है एवं नेत्र खुले हुए है । यह भी ऐतिहासिक तथ्य है कि इस मंदिर एवं मंदिर के चारों ओर स्थित कटला (धर्मशाला) का निर्माण श्वेताम्बर आमनाय के श्री जोधराज जी पल्लीवाल, भरतपुर राज्य के तत्कालीन दीवान ने करवाया था । इस मंदिर की प्रतिष्ठा भी संवत् 1826 में श्वेताम्बर मान्यता के विजयगच्छीय महानन्द सागरा सूरि जी द्वारा करवाई गई ।

इस मंदिर का प्रबन्ध एवं अधिकार दीर्घकाल तक इसी क्षेत्र के श्वेताम्बर धर्मावलंबियों की पंचायत द्वारा होता रहा किन्तु कालान्तर में समीपवर्ती जयपुर रियासत के दिगम्बर बन्धुओं के राज्य में विभिन्न पदों पर उच्चासीन होने से उन्होंने अपने पद व अधिकार का लाभ उठाकर इस तीर्थ व इसकी व्यवस्था पर अनाधिकृत कब्जा कर लिया ।

इस अनाधिकृत कब्जे के विरोध में उस क्षेत्र की जागरूक श्वेताम्बर जैन पल्लीवाल पंचायत ने स्व. श्री नारायण लाल जी पल्लीवाल के नेतृत्व में संगठित होकर इस तीर्थ को दिगम्बर समाज के कब्जे से मुक्त कराने को प्रयासरत होकर न्यायालय में वाद प्रस्तुत किया । वर्ष 1973 में सम्पूर्ण श्वेताम्बर समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में श्री जैन श्वेताम्वर (मूर्तिपूजक) श्री महावीर जी तीर्थ रक्षा समिति के नाम से संस्था का रजिस्ट्रेशन कराया गया । यह संस्था इसी महती ध्येय में सतत् प्रयत्नशील है । निरन्तर विभिन्न न्यायालयों में वाद-प्रतिवाद चलते रहने के परिणामतः श्वेताम्वर समाज की ओर से अब इस विवाद के सम्बन्ध में राजस्थान उच्च न्यायालय में दिनांक 2.2.95 को अपील प्रस्तुत कर न्याय चाहा गया है । दिगम्बर समाज द्वारा अपने प्रभुत्व का सदपुयोग कर विभिन्न बाधाएं खड़ी करने पर भी श्वेताम्बर समाज ने न्यायालय में उक्त तीर्थ श्वेताम्बर होने के प्रमाण में अपने 18 गवाह करवाकर अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत कर दिये हैं ।

इस समिति की ओर से इस वाद में

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल, जयपुर

-श्री ललित दुग्गड, ¡०

मुझे मंडल का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये अत्यन्त प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव हो रहा है । मंडल परिवार के समस्त कार्यकर्ता हमारे संघ तथा अन्य संघों द्वारा आयोजित विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पूर्ण मनोयोग एवं तन्मयता से भाग लेते हैं ।

विगत चातुर्मास में यहां विराजित सा. श्री स्वर्णप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में हुयी चातुर्मासिक गतिविधियों में मंडल परिवार ने उल्लासपूर्वक भाग लेकर जिन शासन की शोभा में अभिवृद्धि की । पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के आठों दिन भव्य स्नात्र पूजा एवं भव्यातिभव्य अंग रचना में मंडल के कार्यकर्ताओं ने अपना योगदान दिया।

पर्वाधिराज पर्युषण की पूर्णाहुति पर मंडल परिवार द्वारा कई वर्षो बाद जयपुर के आस-पास के मंदिरों के दर्शनार्थ एक दिवसीय यात्रा (चैत्य परिपाटी) का आयोजन किया गया । इसमें संघपति के रूप में श्रीमान् मोतीलाल जी कटारिया, श्री शैलेश भाई शाह, श्री प्रकाश भाई डी.शाह, श्री कुमारपाल जी दुग्गड एवं श्रीमती लाड बाई सा सिंघी परिवार ने लाभ लिया एवं इस यात्रा की पूर्णाहुति शाम की नवकारसी का लाभ [illegible] कुशलजी भंसाली परिवार ने लिया ।

मंडल परिवार इन सभी महानुभावों [illegible] हार्दिक आभार व्यक्त करता है । एक दि[illegible] यात्रा जहां-जहां दर्शनार्थ गयी वहां के संघ [illegible] प्रतिनिधियों ने यात्रा का गर्मजोशी से [illegible] किया । मंडल परिवार उन सभी संघों [illegible] उनके पदाधिकारियों का हार्दिक आभार व्य[illegible] करता है । इस यात्रा में हमारे [illegible] कार्यकर्ताओं तथा हमारे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं [illegible] बहुत सहयोग रहा, मैं सभी का हार्दिक आ[illegible] व्यक्त करता हूँ । इस शुभ अवसर पर [illegible] परिवार द्वारा सभी संघपतियों, श्री [illegible] कुशलजी भंसाली एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं [illegible] बहुमान भी किया गया।

मंडल परिवार, संघ द्वारा आ[illegible] सुमतिनाथ जिनालय, बरखेडा तीर्थ, जनत कॉलोनी, चंदलाई मंदिरों के वार्षिकोत्सव [illegible] अन्य कार्यक्रमों में तथा वर्ष भर के [illegible] यहां पधारने वाले आचार्य भगवंतों तथ[illegible] साधु-साध्वियों के प्रवेश तथा वर्तमान [illegible] चातुर्मासार्थ विराजित प.पू. सा. दिनमणी श्री जी म.सा. आदि ठाणा के मंगल प्रवेश इत्यादि

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल, जयपुर

-श्री ललित दुग्गड, ।०

मुझे मंडल का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये अत्यन्त प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। मंडल परिवार के समस्त कार्यकर्ता हमारे संघ तथा अन्य संघों द्वारा आयोजित विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पूर्ण मनोयोग एवं तन्मयता से भाग लेते हैं।

विगत चातुर्मास में यहां विराजित सा. श्री स्वर्णप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में हुयी चातुर्मासिक गतिविधियों में मंडल परिवार ने उल्लासपूर्वक भाग लेकर जिन शासन की शोभा में अभिवृद्धि की। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के आठों दिन भव्य स्नात्र पूजा एवं भव्यातिभव्य अंग रचना में मंडल के कार्यकर्ताओं ने अपना योगदान दिया।

पर्वाधिराज पर्युषण की पूर्णाहुति पर मंडल परिवार द्वारा कई वर्षो बाद जयपुर के आस-पास के मंदिरों के दर्शनार्थ एक दिवसीय यात्रा (चैत्य परिपाटी) का आयोजन किया गया। इसमें संघपति के रूप में श्रीमान् मोतीलाल जी कटारिया, श्री शैलेश भाई शाह, श्री प्रकाश भाई डी.शाह, श्री कुमारपाल जी दुग्गड एवं श्रीमती लाड बाई सा सिंघी परिवार ने लाभ लिया एवं इस यात्रा की पूर्णाहुति शाम की नवकारसी का लाभ ... कुशलजी भंसाली परिवार ने लिया।

मंडल परिवार इन सभी महानुभावों ... हार्दिक आभार व्यक्त करता है। एक दि... यात्रा जहां-जहां दर्शनार्थ गयी वहां के संघ ... प्रतिनिधियों ने यात्रा का गर्मजोशी से ... किया। मंडल परिवार उन सभी संघों ... उनके पदाधिकारियों का हार्दिक आभार व्य... करता है। इस यात्रा में हमारे ... कार्यकर्ताओं तथा हमारे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं क... बहुत सहयोग रहा, मैं सभी का हार्दिक आ... व्यक्त करता हूँ। इस शुभ अवसर पर ... परिवार द्वारा सभी संघपतियों, श्री ... कुशलजी भंसाली एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं ... बहुमान भी किया गया।

मंडल परिवार, संघ द्वारा आ... सुमतिनाथ जिनालय, बरखेडा तीर्थ, जनत... कॉलोनी, चंदलाई मंदिरों के वार्षिकोत्सव ... अन्य कार्यक्रमों में तथा वर्ष भर के ... यहां पधारने वाले आचार्य भगवंतों तथ... साधु-साध्वियों के प्रवेश तथा वर्तमान ... चातुर्मासार्थ विराजित प.पू. सा. दिनमणी श्री जी म.सा. आदि ठाणा के मंगल प्रवेश इत्यादि

श्री सुमति जिन श्राविका संघ

-श्रीमती मीना कटारिया, *महामंत्री*

मानव की सर्वोत्कृष्ट निधि है पूजा व भक्ति । भक्ति जब संगीत के संग प्रस्फुटित होती है तो अमृत छाया प्रवाहित होती हुई तन-मन को स्वस्थ बनाती है । भक्ति भावों का गुंजन है । भाव शब्दों को संगीत अलंकार पहनाकर सार्थकता प्रदान करते हैं । संगीत के माध्यम से पूजा भक्ति करने से वीतराग प्रभु के दर्शन के साथ व्यक्तित्व को आत्मानुभूति की ओर मोडकर सहज मुक्ति की दृढ आकांक्षा प्रदान करते हैं । ध्यान-तप-योग आदि भी मुक्ति के मार्ग हैं किन्तु सभी कठिन, सामान्य व्यक्ति की पहुंच से परे हैं । इसीलिये महापुरुषों ने अनेक पद-स्तुति-स्तवनों व पूजाओं की रचना की है । महाकवियों ने भगवान के साथ पूजा करते हुए भक्ति करते हुए बातें भी की हे । इन्हीं परम्पराओं को कायम रखने के लिये कई संस्थाओं, मंडलों का गठन किया जाता है ।

श्री संघ के परम पुण्योदय से प.पू. आचार्य श्री वल्लभसूरीश्वर जी म.सा. की समुदायवर्तिनी सा. श्री राजेन्द्र श्री जी म.सा. की शिष्या सा. श्री देवेन्द्र श्री जी म.सा. की प्रेरणा से 1-10-93 को श्री सुमति जिन श्राविका संघ का गठन हुआ था । मंडल का उद्देश्य परमात्मा की भक्ति-पूजा भावना है और धार्मिक सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेना है । स्थापना के कुछ ही महीनों में मंडल उन्नति के पथ पर चल पड़ा । मंडल का भविष्य प्रकाशमान है । प.पू. [illegible] श्री जी म.सा. के आशीर्वाद व श्री जैन श्वे. [illegible] संघ, जयपुर एवं श्री [illegible] नागौरी के सहयोग से श्री जिन सुमति श्राविका संघ आज जयपुर में नये आयाम कायम कर रहा है । मंडल की संरक्षिका श्रीमती सुशीला जी छजलानी का सहयोग भी हमेशा रहता है । पूजा पढाना हमारी नियमित दिनचर्या का हिस्सा सा हो गया है । अंतरायकर्म निवारण पूजा हो या वास्तुक पूजा हो, बरखेडा में पूजा हो या जनता कॉलोनी मंदिर में सत्तरह भेदी पूजा हो मंडल सदैव अपनी सेवाएं देता आ रहा है । पूजाओं में संघ की तरफ से एवं व्यक्तिगत आधार पर मंडल को जो भेंट दी जाती है उसके लिये हम बहिनें सभी का धन्यवाद ज्ञापित करती हैं । प्राप्त राशि में से सामाजिक व धार्मिक कार्यो में अपना योगदान देते हैं व मंडल की सदस्याओं को गणवेश या प्रतीक चिह्न आदि भेंट स्वरूप देते हैं ।

श्री जिन सुमति श्राविका संघ द्वारा प्रत्येक माह की पहली तारीख को सामूहिक सामायिक की जाती हे व 15 ता. को स्नात्र पूजा पढाई जाती हे जिसका लाभ भी मंडल की बहनों द्वारा ही लिया जाता है ।

समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते है । इसी श्रृंखला में हर वर्ष की भांति गत वर्ष भी पर्यूषण पर्व पर प.पू. महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा. की सुशिष्याएं प.पू. सा. स्वर्णप्रभा श्री जी म.सा., सा. अमृतप्रभा श्री जी म.सा. [illegible] श्री जी म.सा. की निश्रा में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया था । जिसमें सम्मानित मंडल,

श्री सुमति जिन श्राविका संघ

-श्रीमती मीना कटारिया, *महामंत्री*

मानव की सर्वोत्कृष्ट निधि है पूजा व भक्ति। भक्ति जब संगीत के संग प्रस्फुटित होती है तो अमृत छाया प्रवाहित होती हुई तन-मन को स्वस्थ बनाती है। भक्ति भावों का गुंजन है। भाव शब्दों को संगीत अलंकार पहनाकर सार्थकता प्रदान करते हैं। संगीत के माध्यम से पूजा भक्ति करने से वीतराग प्रभु के दर्शन के साथ व्यक्तित्व को आत्मानुभूति की ओर मोडकर सहज मुक्ति की दृढ आकांक्षा प्रदान करते हैं। ध्यान-तप-योग आदि भी मुक्ति के मार्ग हैं किन्तु सभी कठिन, सामान्य व्यक्ति की पहुंच से परे हैं। इसीलिये महापुरुषों ने अनेक पद-स्तुति-स्तवनों व पूजाओं की रचना की है। महाकवियों ने भगवान के साथ पूजा करते हुए भक्ति करते हुए बातें भी की हे। इन्हीं परम्पराओं को कायम रखने के लिये कई संस्थाओं, मंडलों का गठन किया जाता है।

श्री संघ के परम पुण्योदय से प.पू. आचार्य श्री वल्लभसूरीश्वर जी म.सा. की समुदायवर्तिनी सा. श्री राजेन्द्र श्री जी म.सा. की शिष्या सा. श्री देवेन्द्र श्री जी म.सा. की प्रेरणा से 1-10-93 को श्री सुमति जिन श्राविका संघ का गठन हुआ था। मंडल का उद्देश्य परमात्मा की भक्ति-पूजा भावना है और धार्मिक सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेना है। स्थापना के कुछ ही महीनों में मंडल उन्नति के पथ पर चल पड़ा। मंडल का भविष्य प्रकाशमान है। प.पू. [illegible] श्री जी म.सा. के आशीर्वाद व श्री जैन श्वे. [illegible] संघ, जयपुर एवं श्री [illegible] नागौरी के सहयोग से श्री जिन सुमति श्राविका संघ आज जयपुर में नये आयाम कायम कर रहा है। मंडल की संरक्षिका श्रीमती सुशीला जी छजलानी का सहयोग भी हमेशा रहता है। पूजा पढाना हमारी नियमित दिनचर्या का हिस्सा सा हो गया है। अंतरायकर्म निवारण पूजा हो या वास्तुक पूजा हो, बरखेडा में पूजा हो या जनता कॉलोनी मंदिर में सत्तरह भेदी पूजा हो मंडल सदैव अपनी सेवाएं देता आ रहा है। पूजाओं में संघ की तरफ से एवं व्यक्तिगत आधार पर मंडल को जो भेंट दी जाती है उसके लिये हम बहिनें सभी का धन्यवाद ज्ञापित करती हैं। प्राप्त राशि में से सामाजिक व धार्मिक कार्यो में अपना योगदान देते हैं व मंडल की सदस्याओं को गणवेश या प्रतीक चिह्न आदि भेंट स्वरूप देते हैं।

श्री जिन सुमति श्राविका संघ द्वारा प्रत्येक माह की पहली तारीख को सामूहिक सामायिक की जाती हे व 15 ता. को स्नात्र पूजा पढाई जाती हे जिसका लाभ भी मंडल की बहनों द्वारा ही लिया जाता है।

समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हे। इसी श्रृंखला में हर वर्ष की भांति गत वर्ष भी पर्युषण पर्व पर प.पू. महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा. की सुशिष्याएं प.पू. सा. स्वर्णप्रभा श्री जी म.सा., सा. अमृतप्रभा श्री जी म.सा. श्री [illegible] श्री जी म.सा. की निश्रा में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया था। [illegible]

स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर

-सुश्री सरोज कोचर, *शिविर संयोजिका*

आज से लगभग 15 वर्ष पूर्व भारत गौरव, कलिकाल चिन्तामणि, परमार क्षत्रियोद्धारक, परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री विजयइन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म.सा. की सद्प्रेरणा से आपके पावन सान्निध्य में विजय इन्द्रदिन्न साधर्मिक सेवा कोष की स्थापना की गई थी। साधर्मी भाई बहिनों के सहायतार्थ इस कोष के माध्यम से शिक्षा स्वास्थ्य, स्वावलम्बन के क्षेत्र में विविध कार्य किये जा रहे हैं। इसी श्रृंखला में गत वर्षों की भांति इस वर्ष कोंकण दीपक वर्तमान गच्छाधिपति श्रीमद्विजय रत्नाकर सूरीश्वर जी म.सा. के शुभाशीर्वाद से दिनांक 30 मई से 30 जून तक स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन विजयानन्द विहार में किया गया। श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ द्वारा निर्मित बहुद्देशीय श्री विजयानन्द विहार में आयोजित इस शिविर में भवन के नाम के अनुरूप आनन्द की लहर रही। सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं से युक्त इस भवन में 32 प्रशिक्षकों से 1828 शिविरार्थियों ने विभिन्न प्रशिक्षण प्राप्त किये।

प्रभु सुमतिनाथ के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन, प्रार्थना के साथ शिविर का शुभारम्भ 30 मई को किया गया शिविर में निम्नलिखित प्रशिक्षकों ने अपनी कर्मठता से निःशुल्क सेवाएं दी जिसके लिए श्री संघ की ओर से इनका अभिनन्दन किया गया।

1828 शिविरार्थियों को शिविर में पुष्प निर्माण, गिफ्ट पैकिंग, पाककला, बान्दरवार, पर्स बैग, क्रोशिया, विशिष्ट मेहन्दी, साधारण मेहन्दी, लैण्ड स्केप पैंटिंग, मौली पैंटिंग, क्ले पैंटिंग, डाइज पैंटिंग, स्टेंसिल पेंटिंग, मधुवनी पैंटिंग, ग्लास पैंटिंग, मखमली, कशीदा, सॉफ्ट टॉयज, मिनी सॉफ्ट टॉयज, टाई एण्ड डाई, ऊन के आसन, ऊन के खिलौने, कढाई, जरदौजी, मोती के आभूषण, जूट का सामान, सिलाई, कार्ड मैकिंग, काटन टॉयज, पेपर बैग, नृत्य, कैलीग्राफी, अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण, संस्कृत सम्भाषण का प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण के पश्चात् प्रत्येक कक्षा में परीक्षा आयोजित की गई जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। शिविर में जरूरतमंद 22 शिविरार्थियों को प्रशिक्षण सामग्री निःशुल्क दी गई। जिससे वे सीखकर स्वावलम्बी बन सकें।

इस सम्पूर्ण प्रशिक्षण में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री वीर बालिका

स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर

-सुश्री सरोज कोचर, *शिविर संयोजिका*

आज से लगभग 15 वर्ष पूर्व भारत गौरव, कलिकाल चिन्तामणि, परमार क्षत्रियोद्धारक, परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री विजयइन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म.सा. की सद्प्रेरणा से आपके पावन सान्निध्य में विजय इन्द्रदिन्न साधर्मिक सेवा कोष की स्थापना की गई थी । साधर्मी भाई बहिनों के सहायतार्थ इस कोष के माध्यम से शिक्षा स्वास्थ्य, स्वावलम्बन के क्षेत्र में विविध कार्य किये जा रहे हैं । इसी श्रृंखला में गत वर्षो की भांति इस वर्ष कोंकण दीपक वर्तमान गच्छाधिपति श्रीमद्‌विजय रत्नाकर सूरीश्वर जी म.सा. के शुभाशीर्वाद से दिनांक 30 मई से 30 जून तक स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन विजयानन्द विहार में किया गया । श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ द्वारा निर्मित वहुद्देशीय श्री विजयानन्द विहार में आयोजित इस शिविर में भवन के नाम के अनुरुप आनन्द की लहर रही । सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं से युवत इस भवन में 32 प्रशिक्षकों रो 1828 शिविरार्थियों ने विभिन्न प्रशिक्षण प्राप्त किये ।

प्रभु सुमतिनाथ के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन, प्रार्थना के साथ शिविर का शुभारम्भ 30 मई को किया गया शिविर में निम्नलिखित प्रशिक्षकों ने अपनी कर्मठता से निःशुल्क सेवाएं दी जिसके लिए श्री संघ की ओर से इनका अभिनन्दन किया गया ।

1828 शिविरार्थियों को शिविर में पुष्प निर्माण, गिफ्ट पैकिंग, पाककला, बान्दरवार, पर्स बैग, क्रोशिया, विशिष्ट मेहन्दी, साधारण मेहन्दी, लैण्ड स्केप पैंटिंग, मौली पैंटिंग, क्ले पैंटिंग, डाइज पैंटिंग, स्टेंसिल पेंटिंग, मधुवनी पैंटिंग, ग्लास पैंटिंग, मखमली, कशीदा, सॉफ्ट टॉयज, मिनी सॉफ्ट टॉयज, टाई एण्ड डाई, ऊन के आसन, ऊन के खिलौने, कढाई, जरदौजी, मोती के आभूपण, जूट का सामान, सिलाई, कार्ड मैकिंग, काटन टॉयज, पेपर बैग, नृत्य, कैलीग्राफी, अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षण, संस्कृत सम्भाषण का प्रशिक्षण दिया गया ।

प्रशिक्षण के पश्चात् प्रत्येक कक्षा में परीक्षा आयोजित की गई जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया गया । शिविर में जरूरतमंद 22 शिविरार्थियों को प्रशिक्षण सामग्री निःशुल्क दी गई । जिससे वे सीखकर स्वावलम्बी बन सकें ।

इस सम्पूर्ण प्रशिक्षण में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री वीर बालिका

उसका सदुपयोग करना चाहिए ।

समारोह के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, युवा अधिकारी श्री एस.पी. भटनागर, डा. एस.पी. सक्सैना ने सभी प्रशिक्षकों को सम्मानित किया साथ ही सभी कक्षाओं में आयोजित परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली सभी शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया । शिविर संयोजिका सुश्री सरोज कोचर ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि विजयानन्द विहार में शिविर आयोजित होने के कारण हमें सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हुई । परिणामस्वरूप जयपुर में विभिन्न स्थलों पर शिविर के सम्पन्न हो जाने पर भी उच्च कोटि के प्रशिक्षण एवं भवन में सुव्यवस्थित व्यवस्था के कारण शिविरार्थियों की संख्या एवं भागीदारी अच्छी रही है । हमने रोजगार देने का कार्य भी किया है । यहां से लडकियां प्रशिक्षण प्राप्त करके श्री कुशल विचक्षण शिल्प शाला से रोजगार प्राप्त कर सकेगी । जो शिविरार्थी आगे सेवा के कार्य, प्रशिक्षण रोजगार के क्षेत्र में जुडना चाहती है वे श्री वीर बालिका महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना प्रथम इकाई से जुडकर अपना विकास कर सकती है ।

अन्त में संघ के शिक्षा मंत्री श्री गुणवन्तमल जी सांड ने धन्यवाद देते हुए सभी प्रशिक्षणकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

कु. श्वेता कावरा ने मंच संचालन करते हुए अपने अनुभव सुनाए ।

निम्नांकित बहनों ने शिविर में अपनी सेवाएं निःशुल्क प्रदान कीं :-

(1) कु. अर्जिता कोचर - सह संयोजिका
(2) कु. कल्पना पटेल - सह संयोजिका
(3) कु. विनिता जैन - विशिष्ट मेंहदी एवं नृत्य
(4) कु. प्रिया सोनी - साधारण मेंहदी एवं कढाई
(5) कु. बरखा जैन - गिफ्ट पैकिंग एवं फ्लावर मेकिंग
(6) श्रीमती नीति जैन - पाक कला, मिनी साफ्ट टॉयज एवं लैण्ड स्केप
(7) कु. दीपिका जैन - नृत्य
(8) कु. सुधा जायसवाल - सॉफ्ट टॉयज
(9) श्रीमती अभिलाषा जैन - सिलाई
(10) श्रीमती रोचना जैन - सिलाई
(11) श्रीमती धर्मवती जैन - क्रोशिया
(12) कु. सरोज गुप्ता - गोली पेंटिंग
(13) कु. गोनिता जैन - कैलीग्राफी

उसका सदुपयोग करना चाहिए ।

समारोह के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, युवा अधिकारी श्री एस.पी. भटनागर, डा. एस.पी. सक्सैना ने सभी प्रशिक्षकों को सम्मानित किया साथ ही सभी कक्षाओं में आयोजित परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली सभी शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया । शिविर संयोजिका सुश्री सरोज कोचर ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि विजयानन्द विहार में शिविर आयोजित होने के कारण हमें सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हुई । परिणामस्वरूप जयपुर में विभिन्न स्थलों पर शिविर के सम्पन्न हो जाने पर भी उच्च कोटि के प्रशिक्षण एवं भवन में सुव्यवस्थित व्यवस्था के कारण शिविरार्थियों की संख्या एवं भागीदारी अच्छी रही है । हमने रोजगार देने का कार्य भी किया है । यहां से लडकियां प्रशिक्षण प्राप्त करके श्री कुशल विचक्षण शिल्प शाला से रोजगार प्राप्त कर सकेगी । जो शिविरार्थी आगे सेवा के कार्य, प्रशिक्षण रोजगार के क्षेत्र में जुडना चाहती है वे श्री वीर बालिका महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना प्रथम इकाई से जुडकर अपना विकास कर सकती है ।

अन्त में संघ के शिक्षा मंत्री श्री गुणवन्तमल जी सांड ने धन्यवाद देते हुए सभी प्रशिक्षणकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

कु. श्वेता कावरा ने मंच संचालन करते हुए अपने अनुभव सुनाए ।

निम्नांकित बहनों ने शिविर में अपनी सेवाएं निःशुल्क प्रदान कीं :-

(1) कु. अर्जिता कोचर - सह संयोजिका
(2) कु. कल्पना पटेल - सह संयोजिका
(3) कु. विनिता जैन - विशिष्ट मेंहदी एवं नृत्य
(4) कु. प्रिया सोनी - साधारण मेंहदी एवं कढाई
(5) कु. वरखा जैन - गिफ्ट पैकिंग एवं फ्लावर मेकिंग
(6) श्रीमती नीति जैन - पाक कला, मिनी साफ्ट टॉयज एवं लैण्ड स्केप
(7) कु. दीपिका जैन - नृत्य
(8) कु. सुधा जायसवाल - सॉफ्ट टॉयज
(9) श्रीमती अभिलाषा जैन - सिलाई
(10) श्रीमती रोचना जैन - सिलाई
(11) श्रीमती धर्मवती जैन - क्रोशिया
(12) कु. सरोज गुप्ता - गौली पेंटिंग
(13) कु. योगिता जैन - कैलीग्राफी

आ. श्री. रत्नाकरसूरीश्वर जी म.सा. का जयपुर में शुभागमन

आ. श्री. रत्नाकरसूरीश्वर जी म.सा. का जयपुर में शुभागमन

चातुर्मास प्रवेश की सभा में विराजित सा. दिनमणि श्री जी म. एवं ख. सा. श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.

चातुर्मासिक प्रवेश में पधारते हुए साध्वीवृंद

चातुर्मास प्रवेश की सभा में विराजित सा. दिनमणि श्री जी म. एवं ख. सा. श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.

चातुर्मासिक प्रवेश में पधारते हुए साध्वीवृंद

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2001-2002

(महासमिति द्वारा अनुमोदित)

-श्री मोतीलाल भडकतिया, *संघमंत्री*

कच्छ बागड देशोद्धारक प.पू. अध्यात्मयोगी, परमात्मभक्ति रसिक आ. दे. श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के समुदाय के विराजित वर्तमान गच्छनायक मधुरभाषी आचार्यदेव श्रीमद् विजय कलाप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. साध्वी जी श्री दिनकर श्री जी म.सा. की सुशिष्या **परम विदुषी साध्वी श्री दिनमणि श्री जी म.सा., सा. श्री दिव्यरेखा श्री जी म.सा., सा. दिव्यरत्नाश्री जी म.सा., सा. श्री दिव्यप्रतिमा श्री जी म.सा. एवं सा. श्री दिव्यचेतना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5**

एवं उपस्थित साधर्मिक भाई बहिनों सहित समस्त श्री संघ की सेवा में

कार्यरत महासमिति वर्ष 2000-02 की ओर से यह तीसरा विवरण विगत वर्ष में सम्पन्न हुए कार्यकलापों एवं अंकेक्षित आय-व्यय विवरण तथा चिट्ठा वर्ष 2001-2002 आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

विगत चातुर्मास

यह तो आपको विदित ही है विगत वर्ष यहां पर बरखेडा तीर्थोद्धारिका महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा. की सुशिष्याएं साध्वी श्री स्वर्णप्रभा श्री जी म., सा. श्री अमृतप्रभा श्री जी म. एवं सा. श्री वैराग्यपूर्णा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का चातुर्मास सम्पन्न हुआ था। पर्यूषण पर्व से पूर्व उनकी पावन निश्रा में सम्पन्न हुए कार्यकलापों का विवरण पिछले अंक में प्रस्तुत किया गया था। तदनन्तर भादवा बद 11 बुधवार, दि. 15-8-01 से पर्युषण पर्व का शुभारम्भ हुआ। प्रथम दिवस को श्री राजकुमारजी ललितकुमार जी दुगड परिवार द्वारा, द्वितीय दिवस को श्री भंवरलालजी मूथा परिवार द्वारा तथा तृतीय दिवस को श्री सुभाषचन्दजी छाजेड परिवार द्वारा पूजाएं पढाई गई तथा अष्टाह्निका का प्रवचन हुआ। श्री कल्पसूत्रजी वोहराने का लाभ चढावे से श्रीमती उमरावबाई पुत्र श्री कुशलकुमार जी लुनावत द्वारा लिया गया।

भगवान महावीर का जन्मोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया। स्वप्न अवतरण, तपस्वियों का बहुमान, संघ की स्मारिका माणिभद्र के 43वें अंक का विमोचन श्री कुशलकुमारजी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुजी लुनावत के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। मास क्षमण सहित विशिष्ट तपस्वी बहिनों का बहुमान श्रीमती अरुणाजी जैन के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर को

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ (पंजी.), जयपुर

वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2001-2002

(महासमिति द्वारा अनुमोदित)

-श्री मोतीलाल भडकतिया, *संघमंत्री*

कच्छ बागड देशोद्धारक प.पू. अध्यात्मयोगी, परमात्मभक्ति रसिक आ. दे. श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के समुदाय के विराजित वर्तमान गच्छनायक मधुरभाषी आचार्यदेव श्रीमद् विजय कलाप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प.पू. साध्वी जी श्री दिनकर श्री जी म.सा. की सुशिष्या **परम विदुषी साध्वी श्री दिनमणि श्री जी म.सा., सा. श्री दिव्यरेखा श्री जी म.सा., सा. दिव्यरत्नाश्री जी म.सा., सा. श्री दिव्यप्रतिमा श्री जी म.सा. एवं सा. श्री दिव्यचेतना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5**

एवं उपस्थित साधर्मिक भाई बहिनों सहित समस्त श्री संघ की सेवा में

कार्यरत महासमिति वर्ष 2000-02 की ओर से यह तीसरा विवरण विगत वर्ष में सम्पन्न हुए कार्यकलापों एवं अंकेक्षित आय-व्यय विवरण तथा चिट्ठा वर्ष 2001-2002 आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूं।

विगत चातुर्मास

यह तो आपको विदित ही है विगत वर्ष यहां पर नरखेड़ा तीर्थोद्धारिका महत्तरा सा. श्री सुमंगला श्री जी म.सा. की सुशिष्याएं साध्वी श्री स्वर्णप्रभा श्री जी म., सा. श्री अमृतप्रभा श्री जी म. एवं सा. श्री वैराग्यपूर्णा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का चातुर्मास सम्पन्न हुआ था। पर्यूषण पर्व से पूर्व उनकी पावन निश्रा में सम्पन्न हुए कार्यकलापों का विवरण पिछले अंक में प्रस्तुत किया गया था। तदनन्तर भादवा बद 11 बुधवार, दि. 15-8-01 से पर्युषण पर्व का शुभारम्भ हुआ। प्रथम दिवस को श्री राजकुमारजी ललितकुमार जी दुगड परिवार द्वारा, द्वितीय दिवस को श्री भंवरलालजी मूथा परिवार द्वारा तथा तृतीय दिवस को श्री सुभाषचन्दजी छाजेड परिवार द्वारा पूजाएं पढाई गई तथा अष्टाह्निका का प्रवचन हुआ। श्री कल्पसूत्रजी वोहराने का लाभ चढावे से श्रीमती उमराववाई पुत्र श्री कुशलकुमार जी लुनावत द्वारा लिया गया।

भगवान महावीर का जन्मोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया। स्वप्न अवतरण, तपस्वियों का बहुमान, संघ की स्मारिका माणिभद्र के 43वें अंक का विमोचन श्री कुशलकुमारजी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुजी लुनावत के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। मास क्षमण सहित विशिष्ट तपस्वी बहिनों का बहुमान श्रीमती अरुणाजी जैन के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर की

आदि विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हुए जब जोधपुर पधारीं तो संघ की ओर से उपाश्रय मंत्री श्री अभयकुमार जी चौरडिया एवं श्री हीराचन्द जी कोठारी आपकी सेवा में उपस्थित हुए तथा अजमेर पहुंचने पर संघ के उपाध्यक्ष श्री नवीनचन्दजी शाह, संघ मंत्री श्री मोतीलाल भडकतिया, संयुक्त संघमंत्री श्री राकेश कुमार जी मोहनोत एवं भोजनशाला-आयम्बिलशाला मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार जी लुनावत आपकी सेवा में उपस्थित हुए तथा विहार आदि की व्यवस्था की। अजमेर से जयपुर मार्ग पर निरन्तर आपके सम्पर्क में रहे तथा दि. 19-6 को आप सोडाला पधार गई। दि. 22-6 को सोडाला रत्नापुरी में स्थित श्री आदीनाथ स्वामी के जिनालय की वर्षगांठ पर आयोजित पूजा आदि कार्यक्रम में अपनी निश्रा प्रदान की।

इसके पश्चात् आप जयपुर की विभिन्न कॉलोनियों में विचरण करके धर्म देशना प्रदान करती रहीं। श्री बरखेडा तीर्थ, मालवीया नगर, जवाहर नगर, देराऊर आदि तीर्थों की यात्रा की तथा दि. 11-7-02 को खरतरगच्छ आमनाय की साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा. के मोती डूंगरी रोड पर स्थित दादावाडी में चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर भी आप वहां पधारीं तथा महामांगलिक आदि विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित हुई।

नगर प्रवेश

आषाढ शुक्ला 6 सोमवार, दि. 15 जुलाई, 2002 को आपके नगर प्रवेश का कार्यक्रम रखा गया। सांगानेर गेट पर अगवानी के पश्चात् आप भव्य जुलूस के साथ जिसमें हाथी घोडा, बैंड आदि के साथ श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन पधारीं। आपके साथ साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा. एवं जयपुर गौरव साध्वी डा. श्री सुरेखा श्री जी म.सा. आदि ठाणा भी पधारीं। इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा में तीनों को ही संघ की ओर से कामली बोहरा कर अभिनन्दन किया गया। सभा में पूज्य साध्वी जी म.सा. के मंगलाचरण के पश्चात् श्री सुमति जिन श्राविका संघ द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। संघ मंत्री द्वारा आप सभी के जीवन परिचय प्रस्तुत किए गए। संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने संघ की ओर से आपके जयपुर पधारने पर हार्दिक अभिनन्दन एवं आभार व्यक्त किया। तीनों ही साध्वीवृन्द के मंगल प्रवचन हुए।

संयोग से इसी दिन साध्वी दिव्य चेतना श्री जी म.सा. की 59वीं ओली जी पूरी होकर 60वीं ओली प्रारम्भ हो रही थी। इसी धर्म सभा में पारणा कराने का लाभ हेतु चढावा बुलाया गया जिसका लाभ श्री सुरेन्द्र कुमार जी छजलानी परिवार द्वारा लिया गया। इस अवसर पर संघ पूजा का लाभ श्री हीराभाई मंगलचन्दजी चोधरी (एम.जी.) परिवार तथा श्री जितेन्द्रकुमार जी मेहमवाल परिवार द्वारा लिया गया। सामूहिक आयम्बिल कराने का लाभ श्री राजेन्द्र कुमार जी लुनावत परिवार द्वारा लिया गया तथा श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा पढाने का लाभ श्री सुमति जिन श्राविका संघ द्वारा लिया गया।

दि. 19-7 की धर्मसभा में चातुर्मास काल के चारों ही महीनों में सांवत्सरी अट्ठम एवं

आदि विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हुए जब जोधपुर पधारीं तो संघ की ओर से उपाश्रय मंत्री श्री अभयकुमार जी चौरडिया एवं श्री हीराचन्द जी कोठारी आपकी सेवा में उपस्थित हुए तथा अजमेर पहुंचने पर संघ के उपाध्यक्ष श्री नवीनचन्दजी शाह, संघ मंत्री श्री मोतीलाल भडकतिया, संयुक्त संघमंत्री श्री राकेश कुमार जी मोहनोत एवं भोजनशाला-आयम्बिलशाला मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार जी लुनावत आपकी सेवा में उपस्थित हुए तथा विहार आदि की व्यवस्था की। अजमेर से जयपुर मार्ग पर निरन्तर आपके सम्पर्क में रहे तथा दि. 19-6 को आप सोडाला पधार गई। दि. 22-6 को सोडाला रत्नापुरी में स्थित श्री आदीनाथ स्वामी के जिनालय की वर्षगांठ पर आयोजित पूजा आदि कार्यक्रम में अपनी निश्रा प्रदान की।

इसके पश्चात् आप जयपुर की विभिन्न कॉलोनियों में विचरण करके धर्म देशना प्रदान करती रहीं। श्री बरखेडा तीर्थ, मालवीया नगर, जवाहर नगर, देराऊर आदि तीर्थों की यात्रा की तथा दि. 11-7-02 को खरतरगच्छ आमनाय की साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा. के मोती डूंगरी रोड पर स्थित दादावाडी में चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर भी आप वहां पधारीं तथा महामांगलिक आदि विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित हुई।

नगर प्रवेश

आषाढ शुक्ला 6 सोमवार, दि. 15 जुलाई, 2002 को आपके नगर प्रवेश का कार्यक्रम रखा गया। सांगानेर गेट पर अगवानी के पश्चात् आप भव्य जुलूस के साथ जिसमें हाथी घोडा, बैंड आदि के साथ श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन पधारीं। आपके साथ साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा. एवं जयपुर गौरव साध्वी डा. श्री सुरेखा श्री जी म.सा. आदि ठाणा भी पधारीं। इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा में तीनों को ही संघ की ओर से कामली बोहरा कर अभिनन्दन किया गया। सभा में पूज्य साध्वी जी म.सा. के मंगलाचरण के पश्चात् श्री सुमति जिन श्राविका संघ द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। संघ मंत्री द्वारा आप सभी के जीवन परिचय प्रस्तुत किए गए। संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने संघ की ओर से आपके जयपुर पधारने पर हार्दिक अभिनन्दन एवं आभार व्यक्त किया। तीनों ही साध्वीवृन्द के मंगल प्रवचन हुए।

संयोग से इसी दिन साध्वी दिव्य चेतना श्री जी म.सा. की 59वीं ओली जी पूरी होकर 60वीं ओली प्रारम्भ हो रही थी। इसी धर्म सभा में पारणा कराने का लाभ हेतु चढावा बुलाया गया जिसका लाभ श्री सुरेन्द्र कुमार जी छजलानी परिवार द्वारा लिया गया। इस अवसर पर संघ पूजा का लाभ श्री हीराभाई मंगलचन्दजी चोधरी (एम.जी.) परिवार तथा श्री जितेन्द्रकुमार जी मेहमवाल परिवार द्वारा लिया गया। सामूहिक आयम्बिल कराने का लाभ श्री राजेन्द्र कुमार जी लुनावत परिवार द्वारा लिया गया तथा श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजा पढाने का लाभ श्री सुमति जिन श्राविका संघ द्वारा लिया गया।

दि. 19-7 की धर्मसभा में चातुर्मास काल के चारों ही महीनों में सांकली अट्ठम एवं

नेमीनाथ स्वामी का जन्मोत्सव मनाया गया जिसमें श्रीमती सुशीला देवी एवं सुभाष चंद जी छजलानी माता पिता के रूप में उपस्थित हुए। श्री सुमति जिन श्राविका संघ के तत्वावधान में भगवान के जीवन पर नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत की गई।

दिन में श्री नेमीनाथ पंच कल्याणक पूजा पढाई गई जिसका लाभ श्री सुभाषचन्दजी छजलानी परिवार द्वारा लिया गया।

प्रभु भक्ति के साथ तपस्या भी हुई। श्री अजितनाथ भगवान के काल में विचरते 170 जिनेश्वर भगवान की आराधना निमित्त 170 उपवास की तपस्या कराई गई जिसमें 115 उपवास हुए जिनका बहुमान किया गया।

कच्छ बागड देशोद्धारक दादा गुरु श्रीमद् विजय कनकसूरीश्वर जी म.सा. की 39वीं पुण्य तिथि के निमित्त दि. 27-8-02 को गुणानुवाद सभा तथा सामूहिक आयंबिल का आयोजन हुआ। आयंबिल कराने का लाभ श्री बाबूलाल जी मेहता परिवार द्वारा लिया गया। इसी दिन गणधर तप की तपस्या करने वाली बहनों की तरफ से श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा पढाई गई।

भादवा वदी 11 मंगलवार दि. 3.9.02 से अब आपकी ही पावन निश्रा में पर्यूषण पर्व की आराधनाएं सम्पन्न होने जा रही हैं।

साधु-साध्वीवृन्द का शुभागमन

यह वर्ष भी जयपुर श्री संघ के लिए अत्यन्त सौभाग्य का रहा जिसमें गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त, मुनिवर्य, साध्वी श्री म.सा. का शुभागमन हुआ जिनका विवरण निम्नानुसार है-

गच्छाधिपति आचार्य श्री रत्नाकरसूरीश्वर जी म.सा.

शनिवार, दि. 26 जनवरी, 02 को गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय रत्नाकर-सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा-3 का जयपुर में शुभागमन हुआ। प्रातः 9.30 बजे सांगानेरी गेट पर अगवानी के पश्चात् बैंड-बाजे, हाथी, घोडे एवं श्री संघ के साथ भव्य जुलूस में श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन पधारे। इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा के मुख्य अतिथि डा. के.एल. जैन, अध्यक्ष राजस्थान चैम्बर थे। श्री सुमति जिन श्राविका संघ द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। डा. के एल. जैन, श्री ललित दूगड, सुश्री सरोज कोचर, श्रीमती वीना जैन आदि वक्ताओं ने आपके प्रति भाव भीनी अभिव्यक्तियां व्यक्त कीं। संघ मंत्री ने स्वागत भाषण के साथ-साथ आपकी पाट परम्परा पर बिराजित पूर्व आचार्य भगवन्तों के आगमन आदि का विवरण देते हुए आपसे भी इसी प्रकार जयपुर श्रीसंघ पर कृपा बनाए रखते हुए जयपुर में चातुर्मास करने तथा समय-समय पर पुनः पधारने की विनती की। संघ की ओर से कामली वोहराकर आपका अभिनन्दन किया गया। आचार्य भगवन्त ने भी धर्म देशना प्रदान करते हुए समयानुसार पुनः जयपुर आगमन का आश्वासन दिया। तत्पश्चात् स्वल्पाहार का आयोजन रखा गया जिसका लाभ संघ अध्यक्ष श्री हीराभाई मंगलचंद जी चौधरी (एम.जी.) परिवार द्वारा लिया गया।

नेमीनाथ स्वामी का जन्मोत्सव मनाया गया जिसमें श्रीमती सुशीला देवी एवं सुभाष चंद जी छजलानी माता पिता के रूप में उपस्थित हुए। श्री सुमति जिन श्राविका संघ के तत्वावधान में भगवान के जीवन पर नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत की गई।

दिन में श्री नेमीनाथ पंच कल्याणक पूजा पढाई गई जिसका लाभ श्री सुभाषचन्दजी छजलानी परिवार द्वारा लिया गया।

प्रभु भक्ति के साथ तपस्या भी हुई। श्री अजितनाथ भगवान के काल में विचरते 170 जिनेश्वर भगवान की आराधना निमित्त 170 उपवास की तपस्या कराई गई जिसमें 115 उपवास हुए जिनका बहुमान किया गया।

कच्छ बागड देशोद्धारक दादा गुरु श्रीमद् विजय कनकसूरीश्वर जी म.सा. की 39वीं पुण्य तिथि के निमित्त दि. 27-8-02 को गुणानुवाद सभा तथा सामूहिक आयंबिल का आयोजन हुआ। आयंबिल कराने का लाभ श्री बाबूलाल जी मेहता परिवार द्वारा लिया गया। इसी दिन गणधर तप की तपस्या करने वाली बहनों की तरफ से श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा पढाई गई।

भादवा वदी 11 मंगलवार दि. 3.9.02 से अब आपकी ही पावन निश्रा में पर्यूषण पर्व की आराधनाएं सम्पन्न होने जा रही हैं।

साधु-साध्वीवृन्द का शुभागमन

यह वर्ष भी जयपुर श्री संघ के लिए अत्यन्त सौभाग्य का रहा जिसमें गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त, मुनिवर्य, साध्वी श्री म.सा. का शुभागमन हुआ जिनका विवरण निम्नानुसार है-

गच्छाधिपति आचार्य श्री रत्नाकरसूरीश्वर जी म.सा.

शनिवार, दि. 26 जनवरी, 02 को गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद्विजय रत्नाकर-सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा-3 का जयपुर में शुभागमन हुआ। प्रातः 9.30 बजे सांगानेरी गेट पर अगवानी के पश्चात् बैंड-बाजे, हाथी, घोडे एवं श्री संघ के साथ भव्य जुलूस में श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन पधारे। इस अवसर पर आयोजित धर्म सभा के मुख्य अतिथि डा. के.एल. जैन, अध्यक्ष राजस्थान चैम्बर थे। श्री सुमति जिन श्राविका संघ द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। डा. के एल. जैन, श्री ललित दूगड, सुश्री सरोज कोचर, श्रीमती वीना जैन आदि वक्ताओं ने आपके प्रति भाव भीनी अभिव्यक्तियां व्यक्त कीं। संघ मंत्री ने स्वागत भाषण के साथ-साथ आपकी पाट परम्परा पर बिराजित पूर्व आचार्य भगवन्तों के आगमन आदि का विवरण देते हुए आपसे भी इसी प्रकार जयपुर श्रीसंघ पर कृपा बनाए रखते हुए जयपुर में चातुर्मास करने तथा समय-समय पर पुनः पधारने की विनती की। संघ की ओर से कामली बोहराकर आपका अभिनन्दन किया गया। आचार्य भगवन्त ने भी धर्म देशना प्रदान करते हुए समयानुसार पुनः जयपुर आगमन का आश्वासन दिया। तत्पश्चात् स्वल्पाहार का आयोजन रखा गया जिसका लाभ संघ अध्यक्ष श्री हीराभाई मंगलचंद जी चौधरी (एम.जी.) परिवार द्वारा लिया गया।

(3) सा. श्री सुलसा श्री जी म.सा. ठाणा-6
(4) सा. नितिगुणाश्री जी म.सा. ठाणा-2

विभिन्न अवसरों पर संघ की उपस्थिति

आ. श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के फलौदी चातुर्मास के अवसर पर जयपुर से एक बस संघ के तत्वावधान में लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुए।

चातुर्मास पूर्ण होने पर कलकत्ता में आ. श्रीमद्विजय नित्यानन्दसूरी जी म.सा. एवं दिल्ली में बिराजित गच्छाधिपति आ. श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म., महत्तरा साध्वी श्री सुमंगला श्री जी म.सा. आदि की सेवा में संघ के प्रतिनिधि मंडल उपस्थित हुए।

गच्छाधिपति आ. श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा. के स्वर्गारोहण पर दि. 4-1-02 को संघ का प्रतिनिधि मंडल अम्बाला गया तथा संघ की ओर से कामली एवं चन्दन प्रस्तुत किया गया।

दि. 16-2-02 को आ. श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के कालधर्म को प्राप्त होने पर संघ का प्रतिनिधिमंडल केसवणा गया तथा कामली एवं चंदन प्रस्तुत किया।

गुणानुवाद सभाएं

आ. श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म.सा. एवं आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के काल धर्म होने पर विराजित साध्वी श्री सुवर्ण प्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में क्रमशः दि. 8-1-02 एवं 17-02-02 को गुणानुवाद सभाओं का आयोजन किया गया। देववन्दन किए गए तथा दोनों ही महान आचार्य भगवन्तों के जयपुर संघ पर किए गए उपकारों का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शोक संदेश भी प्रेषित किए गए।

साधारण सभा की बैठक

विधान के प्रावधान की अनुपालना में संघ की साधारण सभा की बैठक रविवार, दि. 25 नवम्बर, 01 को प्रातः 11.00 बजे श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन में बुलाई गई जिसमें विगत बैठक के कार्यवाही वृतान्त का अनुमोदन के साथ-साथ धारा-6 में निर्दिष्ट प्रावधानों पर विचार कर निर्णय लिए गए।

उपस्थित सदस्यों की ओर से कई सुझाव प्रस्तुत हुए जिन पर महासमिति द्वारा विचार कर समुचित निर्णय लिए गए।

स्थायी गतिविधियां

विगत वर्ष में हुए विशेष उल्लेखनीय कार्यकलापों का विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् अब मैं संघ की स्थायी गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय, जयपुर

275 वर्षीय इस प्राचीन जिनालय की व्यवस्था सुचारू रूप से सम्पादित होती रही है। पूर्ववत इस वर्ष भी ज्येष्ठ सुदी 10, गुरुवार दि. 20 जून, 02 को वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। ध्वजा चढाने का लाभ श्री भंवरलाल जी मूथा परिवार द्वारा लिया गया।

इस जिनालय के अन्तर्गत विभिन्न श्रोतों से रु. 4,89,663.76 की आय तथा रु. 75,617.25 का व्यय हुआ है। शेष बची हुई राशि का उपयोग वरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार में किया गया है।

(3) सा. श्री सुलसा श्री जी म.सा. ठाणा-6
(4) सा. नितिगुणाश्री जी म.सा. ठाणा-2

विभिन्न अवसरों पर संघ की उपस्थिति

आ. श्रीमद् विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के फलौदी चातुर्मास के अवसर पर जयपुर से एक बस संघ के तत्वावधान में लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुए।

चातुर्मास पूर्ण होने पर कलकत्ता में आ. श्रीमद्विजय नित्यानन्दसूरी जी म.सा. एवं दिल्ली में बिराजित गच्छाधिपति आ. श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म., महत्तरा साध्वी श्री सुमंगला श्री जी म.सा. आदि की सेवा में संघ के प्रतिनिधि मंडल उपस्थित हुए।

गच्छाधिपति आ. श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर जी म.सा. के स्वर्गारोहण पर दि. 4-1-02 को संघ का प्रतिनिधि मंडल अम्बाला गया तथा संघ की ओर से कामली एवं चन्दन प्रस्तुत किया गया।

दि. 16-2-02 को आ. श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के कालधर्म को प्राप्त होने पर संघ का प्रतिनिधिमंडल केसवणा गया तथा कामली एवं चंदन प्रस्तुत किया।

गुणानुवाद सभाएं

आ. श्रीमद्विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म.सा. एवं आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वर जी म.सा. के काल धर्म होने पर विराजित साध्वी श्री सुवर्ण प्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में क्रमशः दि. 8-1-02 एवं 17-02-02 को गुणानुवाद सभाओं का आयोजन किया गया। देववन्दन किए गए तथा दोनों ही महान आचार्य भगवन्तों के जयपुर संघ पर किए गए उपकारों का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शोक संदेश भी प्रेषित किए गए।

साधारण सभा की बैठक

विधान के प्रावधान की अनुपालना में संघ की साधारण सभा की बैठक रविवार, दि. 25 नवम्बर, 01 को प्रातः 11.00 बजे श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन में बुलाई गई जिसमें विगत बैठक के कार्यवाही वृतान्त का अनुमोदन के साथ-साथ धारा-6 में निर्दिष्ट प्रावधानों पर विचार कर निर्णय लिए गए।

उपस्थित सदस्यों की ओर से कई सुझाव प्रस्तुत हुए जिन पर महासमिति द्वारा विचार कर समुचित निर्णय लिए गए।

स्थायी गतिविधियां

विगत वर्ष में हुए विशेष उल्लेखनीय कार्यकलापों का विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् अब मैं संघ की स्थायी गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय, जयपुर

275 वर्षीय इस प्राचीन जिनालय की व्यवस्था सुचारू रूप से सम्पादित होती रही है। पूर्ववत इस वर्ष भी ज्येष्ठ सुदी 10, गुरुवार दि. 20 जून, 02 को वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। ध्वजा चढाने का लाभ श्री भंवरलाल जी मूथा परिवार द्वारा लिया गया।

इस जिनालय के अन्तर्गत विभिन्न श्रोतों से रु. 4,89,663.76 की आय तथा रु. 75,617.25 का व्यय हुआ है। शेष बची हुई राशि का उपयोग वरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार में किया गया है।

अखंड जोत श्री महावीर चंद जी मेहता (जालौर वालों) की ओर से जारी है।

श्री फूलचंद जी पोरवाल एवं श्रीमती चन्द्रा धर्म पत्नी मोहनलाल जी की तरफ से भगवान श्री चन्द प्रभु स्वामी की चांदी की आंगी प्राप्त हुई है।

जीर्णोद्धार में एक ईट के रूप में, एक मुश्त धनराशि का योगदान तथा संस्थाओं से प्राप्त धनराशि का विवरण शिलालेखों पर अंकित कर दिया गया है। इसी तरह से भोजनशाला में 5100/- रु. की राशि से फोटो योजना में प्राप्त फोटुएं लगवाना शुरू कर दिया गया है। जिनकी फोटुएं उपलब्ध नहीं हैं उन्हें प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

भोजनशाला में एक समय की कायमी मिति का नकरा 2100/- रु. निर्धारित है भेंटकर्ताओं के नाम बोर्ड पर अंकित किये जाते हैं।

श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय, जनता कॉलोनी, जयपुर

जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से संचालित होती रही है। जिनालय का वार्षिकोत्सव प्रतिष्ठा तिथि मिगसर वदी 12 दि. 11 दिसम्बर, 2001 को मंगलवार को धूमधाम से मनाया गया। ध्वजा चढाने का लाभ कायमी डा. भागचन्द जी छाजेड परिवार द्वारा लिया गया।

वर्ष भर तक अखण्ड जोत का लाभ कायमी श्री कुशलराज जी सिंघवी परिवार द्वारा लिया गया है। इस जिनालय के अन्तर्गत रु.30,169.50 की आय तथा रु.64,908/- का व्यय हुआ है।

जिनालय में रंगरोगन आदि का कार्य कराया गया है जिसके कारण अधिक टूट रही है।

श्री शांतिनाथ स्वामी का जिनालय, चन्दलाई

इस जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है। जिनालय का वार्षिकोत्सव रविवार, दि. 9 दिसम्बर, 02 को धूमधाम से मनाया गया। ध्वजा चढाने का लाभ श्री बद्रीप्रसाद जी आशीष कुमार जी जैन परिवार द्वारा लिया गया।

इस जिनालय के अर्न्गत कुल रु. 7,014/- की आय एवं 10,834/- का व्यय हुआ है।

विजयानन्द विहार, जयपुर

विजयानन्द विहार का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो रहा है। न्यायालयिक विवाद के कारण फिलहाल पांचवीं मंजिल चढाने की योजना को स्थगित कर दिया गया है।

निर्माण कार्य पर इस वर्ष रु. 3,98,298.25 का व्यय हुआ है तथा रु. 1,75,051 प्राप्त हुए हैं।

स्थानीय परिवारों के अतिरिक्त बाहर से आने वाले यात्रियों के लिए शहर के मध्य एवं जिनालयों के पास इस भवन में बने आठ कमरे एवं तीन हॉल सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ ठहरने के लिए उपलब्ध हैं। समय-समय पर पधारने वाले साधु-साध्वीवृंद की स्थिरता के लिए आवास एवं प्रवचन आदि बडे आयोजनों के लिए विशाल हॉल मेंजाइन सहित उपलब्ध है।

अखंड जोत श्री महावीर चंद जी मेहता (जालौर वालों) की ओर से जारी है ।

श्री फूलचंद जी पोरवाल एवं श्रीमती चन्द्रा धर्म पत्नी मोहनलाल जी की तरफ से भगवान श्री चन्द प्रभु स्वामी की चांदी की आंगी प्राप्त हुई है ।

जीर्णोद्धार में एक ईट के रूप में, एक मुश्त धनराशि का योगदान तथा संस्थाओं से प्राप्त धनराशि का विवरण शिलालेखों पर अंकित कर दिया गया है । इसी तरह से भोजनशाला में 5100/- रु. की राशि से फोटो योजना में प्राप्त फोटुएं लगवाना शुरू कर दिया गया है । जिनकी फोटुएं उपलब्ध नहीं हैं उन्हें प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है ।

भोजनशाला में एक समय की कायमी मिति का नकरा 2100/- रु. निर्धारित है भेंटकर्ताओं के नाम बोर्ड पर अंकित किये जाते हैं ।

श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय, जनता कॉलोनी, जयपुर

जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से संचालित होती रही है । जिनालय का वार्षिकोत्सव प्रतिष्ठा तिथि मिगसर वदी 12 दि. 11 दिसम्बर, 2001 को मंगलवार को धूमधाम से मनाया गया । ध्वजा चढाने का लाभ कायमी डा. भागचन्द जी छाजेड परिवार द्वारा लिया गया ।

वर्ष भर तक अखण्ड जोत का लाभ कायमी श्री कुशलराज जी सिंघवी परिवार द्वारा लिया गया है । इस जिनालय के अन्तर्गत रु.30,169.50 की आय तथा रु.64,908/- का व्यय हुआ है ।

जिनालय में रंगरोगन आदि का कार्य कराया गया है जिसके कारण अधिक टूट रही है ।

श्री शांतिनाथ स्वामी का जिनालय, चन्दलाई

इस जिनालय की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है । जिनालय का वार्षिकोत्सव रविवार, दि. 9 दिसम्बर, 02 को धूमधाम से मनाया गया । ध्वजा चढाने का लाभ श्री बद्रीप्रसाद जी आशीष कुमार जी जैन परिवार द्वारा लिया गया ।

इस जिनालय के अर्न्गत कुल रु. 7,014/- की आय एवं 10,834/- का व्यय हुआ है ।

विजयानन्द विहार, जयपुर

विजयानन्द विहार का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो रहा है । न्यायालयिक विवाद के कारण फिलहाल पांचवीं मंजिल चढाने की योजना को स्थगित कर दिया गया है ।

निर्माण कार्य पर इस वर्ष रु. 3,98,298.25 का व्यय हुआ है तथा रु. 1,75,051 प्राप्त हुए हैं ।

स्थानीय परिवारों के अतिरिक्त वाहर से आने वाले यात्रियों के लिए शहर के मध्य एवं जिनालयों के पास इस भवन में वने आठ कमरे एवं तीन हॉल सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ ठहरने के लिए उपलब्ध हैं । समय-समय पर पधारने वाले साधु-साध्वीवृंद की स्थिरता के लिए आवास एवं प्रवचन आदि वडे आयोजनों के लिए विशाल हॉल मेंजाइन सहित उपलब्ध है ।

श्री एस.पी. भटनागर एवं पार्षद श्रीमती शीला डोडिया विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। शिविर में दिए गए प्रशिक्षण, प्रशिक्षण देने वाली महिलाओं, पुरस्कार वितरण आदि का विस्तृत विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

इस वर्ष का शिविर संघ के नव-निर्मित भवन श्री विजयानन्द विहार में लगाया गया। विशाल हाल एवं अलग-अलग कमरों में क्लासेज लगाने से एक तरह से विद्यालय का स्वरूप ही बन गया। प्रशिक्षण देने एवं लेने वाली सभी को बहुत सुविधा रही, इसी का परिणाम था कि इस वर्ष लगभग 1800 छात्राओं ने प्रशिक्षण लिया। फार्म शुल्क के रूप में 15/-रु. की अत्याल्प राशि से भी रु. 26,310/- की प्राप्ति तथा रु. 26,566/- का कुल व्यय हुआ है।

शिविर के आयोजन, प्रशिक्षण एवं संचालन में पूर्ववत् सुश्री सरोज कोचर, व्याख्याता श्री वीर बालिका महाविद्यालय का सफल योगदान तो रहा ही साथ ही सुश्री अर्जिता कोचर सुपुत्री श्री नरेन्द्र कुमार जी कोचर की सेवाएं भी विशेष उल्लेखनीय रही हैं।

श्री माणिभद्र स्मारिका

संघ की वार्षिक स्मारिका 'माणिभद्र' का प्रकाशन पूर्ववत् निश्चित तिथि को होता आ रहा है और इसी के अन्तर्गत 43वें अंक का प्रकाशन भी हुआ जिसका विमोचन श्री कुशलकुमार जी लुनावत के कर कमलों से भगवान महावीर जन्म वांचना दिवस को हुआ।

विज्ञापन की अत्यल्प राशि के उपरान्त भी रु. 75,350/- की आय तथा प्रकाशन पर रु. 59,327/- का व्यय हुआ है। इस वर्ष भी विज्ञापन की दरें पूर्ववत् ही रखी गई हैं।

श्री साधारण खाता

सबसे अधिक व्यय साध्य इस सीगे के अन्तर्गत इस वर्ष रु. 4,28,195.58 की आय तथा रु. 3,79,117.50 का व्यय हुआ है। माणिभद्र जी के भंडार, मणिभद्र प्रकाशन, वार्षिकोत्सव की आय व्यय का विवरण पृथक से दे दिया गया है।

ज्ञान खाता

इस खाते के अन्तर्गत रु. 94,484.87 की आय एवं खर्च रु. 1,267.25 हुआ है।

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

मण्डल की गतिविधियां पूर्व पदाधिकारियों के अन्तर्गत वर्ष भर सुचारू रूप से संचालित हो रही है। संघ की विभिन्न गतिविधियां वार्षिकोत्सवों एवं अन्यान्य आयोजनों में पूर्ववत् भरपूर सहयोग प्राप्त होता रहा है।

मण्डल की वर्ष भर की गतिविधियों का विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री सुमति जिन श्राविका संघ

श्री सुमति जिन श्राविका संघ की गतिविधियां भी वर्ष भर सुचारू रूप से संचालित होती रही हैं। इस जिनालय में सम्पन्न होने वाली पूजाएं ही नहीं, अन्य संघों एवं परिवारों में भी पूजा पढ़ाने के लिए संघ की सेवाएं सदैव उपलब्ध रहती हैं।

श्री एस.पी. भटनागर एवं पार्षद श्रीमती शीला डोडिया विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। शिविर में दिए गए प्रशिक्षण, प्रशिक्षण देने वाली महिलाओं, पुरस्कार वितरण आदि का विस्तृत विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

इस वर्ष का शिविर संघ के नव-निर्मित भवन श्री विजयानन्द विहार में लगाया गया। विशाल हाल एवं अलग-अलग कमरों में क्लासेज लगाने से एक तरह से विद्यालय का स्वरूप ही बन गया। प्रशिक्षण देने एवं लेने वाली सभी को बहुत सुविधा रही, इसी का परिणाम था कि इस वर्ष लगभग 1800 छात्राओं ने प्रशिक्षण लिया। फार्म शुल्क के रूप में 15/-रु. की अत्याल्प राशि से भी रु. 26,310/- की प्राप्ति तथा रु. 26,566/- का कुल व्यय हुआ है।

शिविर के आयोजन, प्रशिक्षण एवं संचालन में पूर्ववत् सुश्री सरोज कोचर, व्याख्याता श्री वीर बालिका महाविद्यालय का सफल योगदान तो रहा ही साथ ही सुश्री अर्जिता कोचर सुपुत्री श्री नरेन्द्र कुमार जी कोचर की सेवाएं भी विशेष उल्लेखनीय रही हैं।

श्री माणिभद्र स्मारिका

संघ की वार्षिक स्मारिका 'माणिभद्र' का प्रकाशन पूर्ववत् निश्चित तिथि को होता आ रहा है और इसी के अन्तर्गत 43वें अंक का प्रकाशन भी हुआ जिसका विमोचन श्री कुशलकुमार जी लुनावत के कर कमलों से भगवान महावीर जन्म वांचना दिवस को हुआ। विज्ञापन की अत्यल्प राशि के उपरान्त भी रु. 75,350/- की आय तथा प्रकाशन पर रु. 59,327/- का व्यय हुआ है। इस वर्ष भी विज्ञापन की दरें पूर्ववत् ही रखी गई हैं।

श्री साधारण खाता

सबसे अधिक व्यय साध्य इस सीगे के अन्तर्गत इस वर्ष रु. 4,28,195.58 की आय तथा रु. 3,79,117.50 का व्यय हुआ है। माणिभद्र जी के भंडार, मणिभद्र प्रकाशन, वार्षिकोत्सव की आय व्यय का विवरण पृथक से दे दिया गया है।

ज्ञान खाता

इस खाते के अन्तर्गत रु. 94,484.87 की आय एवं खर्च रु. 1,267.25 हुआ है।

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

मण्डल की गतिविधियां पूर्व पदाधिकारियों के अन्तर्गत वर्ष भर सुचारू रूप से संचालित हो रही है। संघ की विभिन्न गतिविधियां वार्षिकोत्सवों एवं अन्यान्य आयोजनों में पूर्ववत् भरपूर सहयोग प्राप्त होता रहा है।

मण्डल की वर्ष भर की गतिविधियों का विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री सुमति जिन श्राविका संघ

श्री सुमति जिन श्राविका संघ की गतिविधियां भी वर्ष भर सुचारू रूप से संचालित होती रही हैं। इस जिनालय में सम्पन्न होने वाली पूजाएं ही नहीं, अन्य संघों एवं परिवारों में भी पूजा पढाने के लिए संघ की सेवाएं सदैव उपलब्ध रहती हैं।

का समय मार्च, 2003 में पूरा हो जायेगा। आगामी चुनाव में भाग लेने हेतु सदस्यता शुल्क जमा करा कर सदस्यता का नवीनीकरण कराना आवश्यक है। शुल्क प्राप्ति पर ही सदस्यता सूची में नाम अंकित हो सकेंगे। अतः सभी सदस्यों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर अपनी एवं अपने परिवार के वैध सदस्यों की सदस्यता राशि समय पर जमा कराने की कृपा करें।

धन्यवाद ज्ञापन

महासमिति ने अपने कार्यकाल में अपनी समझ-बूझ के अनुसार संघ की समस्त गतिविधियों को संचालित करने का भरपूर प्रयास किया है तथा जो महत्त्वाकांक्षी योजना 'बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार' एवं 'विजयानन्द विहार' निर्माण कार्य हाथ में लिया था वह लगभग पूर्णता की ओर हैं। सभी तरह की सावधानी रखने पर भी भूल होना स्वाभाविक है जिसके लिए महासमिति क्षमा प्रार्थी है।

प्रतिवेदन में प्रसंगवश आए हुए कतिपय नामों का ही उल्लेख हो सका है वैसे भक्तिकर्त्ताओं, योगदानकर्त्ताओं, सहयोगियों की श्रृंखला विस्तृत है और उन्हीं के सहयोग, विश्वास एवं प्रोत्साहन से सभी गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित होती रही हैं जिसके लिए महासमिति सभी के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करती है।

अंकेक्षक

प्रति वर्ष वर्ष पूरा होते ही संघ की आय-व्यय का अंकेक्षण पूरा होकर अंकेक्षित आय-व्यय विवरण एवं चिट्ठा प्रकाशित हो जाना संघ के लिए आत्म संतोष का विषय है लेकिन यह तभी सम्भव हो रहा है जब श्री राजेन्द्रकुमार जी चतर, उनके सुपुत्र श्री विवेक कुमार जी चतर एवं उनके सहयोगी अपनी व्यस्थता के उपरान्त भी संघ के अंकेक्षण कार्य को प्राथमिकता देकर समय पर पूरा करते हैं। महासमिति उनके प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करती है।

समापन

इस प्रकार महासमिति द्वारा अनुमोदित यह वार्षिक विवरण एवं अंकेक्षित आय-व्यय विवरण एवं चिट्ठा वर्ष 2001-2002 संघ की सेवा में प्रस्तुत करते हुए अपनी बात पूर्ण कर रहा हूँ।

विशेष निवेदन

उपरोक्त विवरण एवं आय-व्यय विवरण तथा चिट्ठे का अनुमोदन आगामी साधारण सभा की बैठक में भी किया जाना है अतः निवेदन है कि इस प्रति को सुरक्षित रखकर इसका उपयोग करने की कृपा करें।

जय वीरम्

का समय मार्च, 2003 में पूरा हो जायेगा। आगामी चुनाव में भाग लेने हेतु सदस्यता शुल्क जमा करा कर सदस्यता का नवीनीकरण कराना आवश्यक है। शुल्क प्राप्ति पर ही सदस्यता सूची में नाम अंकित हो सकेंगे। अतः सभी सदस्यों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर अपनी एवं अपने परिवार के वैध सदस्यों की सदस्यता राशि समय पर जमा कराने की कृपा करें।

धन्यवाद ज्ञापन

महासमिति ने अपने कार्यकाल में अपनी समझ-बूझ के अनुसार संघ की समस्त गतिविधियों को संचालित करने का भरपूर प्रयास किया है तथा जो महत्त्वाकांक्षी योजना 'बरखेडा तीर्थ जीर्णोद्धार' एवं 'विजयानन्द विहार' निर्माण कार्य हाथ में लिया था वह लगभग पूर्णता की ओर हैं। सभी तरह की सावधानी रखने पर भी भूल होना स्वाभाविक है जिसके लिए महासमिति क्षमा प्रार्थी है।

प्रतिवेदन में प्रसंगवश आए हुए कतिपय नामों का ही उल्लेख हो सका है वैसे भक्तिकर्त्ताओं, योगदानकर्त्ताओं, सहयोगियों की श्रृंखला विस्तृत है और उन्हीं के सहयोग, विश्वास एवं प्रोत्साहन से सभी गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित होती रही हैं जिसके लिए महासमिति सभी के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करती है।

अंकेक्षक

प्रति वर्ष वर्ष पूरा होते ही संघ की आय-व्यय का अंकेक्षण पूरा होकर अंकेक्षित आय-व्यय विवरण एवं चिट्ठा प्रकाशित हो जाना संघ के लिए आत्म संतोष का विषय है लेकिन यह तभी सम्भव हो रहा है जब श्री राजेन्द्रकुमार जी चतर, उनके सुपुत्र श्री विवेक कुमार जी चतर एवं उनके सहयोगी अपनी व्यस्थता के उपरान्त भी संघ के अंकेक्षण कार्य को प्राथमिकता देकर समय पर पूरा करते हैं। महासमिति उनके प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करती है।

समापन

इस प्रकार महासमिति द्वारा अनुमोदित यह वार्षिक विवरण एवं अंकेक्षित आय-व्यय विवरण एवं चिट्ठा वर्ष 2001-2002 संघ की सेवा में प्रस्तुत करते हुए अपनी बात पूर्ण कर रहा हूँ।

विशेष निवेदन

उपरोक्त विवरण एवं आय-व्यय विवरण तथा चिट्ठे का अनुमोदन आगामी साधारण सभा की बैठक में भी किया जाना है अतः निवेदन है कि इस प्रति को सुरक्षित रखकर इसका उपयोग करने की कृपा करें।

जय वीरम्

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

कर निर्धारण वर्ष 2001-2002

गत वर्ष की रकम	आय		इस वर्ष की रकम
6,81,892.88	**श्री मंदिर जी खाते**		4,89,663.76
	भंडार भेंट व गोलख	4,59,020.80	
	पूजन खाता	27,607.00	
	जोत खाता	1,182.00	
	ब्याज खाता	753.96	
	जीर्णोद्धार खाता	1,100.00	
1,20,184.75	**श्री मणीभद्र भंडार खाता**		1,47,707.60
34,06,595.90	श्री बरखेड़ा मंदिर खाता		21,98,164.30
	भेंट व गोलख खाता	13,54,622.35	
	पूजन खाता	12,494.25	
	जोत खाता	101.00	
	जीर्णोद्धार खाता	4,11,922.00	
	साधारण खाता	1,15,100.79	
	आयम्बिल शाला	12,223.00	
	भोजनशाला खाता	69,220.00	
	भोजनशाला फोटो	15,300.00	
	भोजनशाला ब्याज	1,13,609.51	
	चातुर्मास	15,902.00	
	जीवदया	22,871.00	
	वेय्यावच्च	151.00	
	अन्यान्य/ज्ञान	885.00	
	श्री मणीभद्र जी भंडार खाता	51,987.10	
	श्री शासन देवी जी	1,191.20	
	श्री गुरुदेव जी	584.10	
22,097.85	श्री जनता कॉलोनी मंदिर जी		30,169.50
	भंडार भेंट व गोलख खाता	21,983.25	
	श्री मणीभद्र भंडार	3,947.10	
	श्री पद्मावती माताजी भंडार	2,850.15	
	साधारण भेंट	1,389.00	
1,848.85	श्री चन्दलाई मंदिर जी		7,014.00
	भेंट गोलख	6,712.00	
	साधारण	302.00	

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

कर निर्धारण वर्ष 2001-2002

गत वर्ष की रकम	आय		इस वर्ष की रकम
6,81,892.88	**श्री मंदिर जी खाते**		4,89,663.76
	भंडार भेंट व गोलख	4,59,020.80	
	पूजन खाता	27,607.00	
	जोत खाता	1,182.00	
	ब्याज खाता	753.96	
	जीर्णोद्धार खाता	1,100.00	
1,20,184.75	**श्री मणीभद्र भंडार खाता**		1,47,707.60
34,06,595.90	श्री बरखेड़ा मंदिर खाता		21,98,164.30
	भेंट व गोलख खाता	13,54,622.35	
	पूजन खाता	12,494.25	
	जोत खाता	101.00	
	जीर्णोद्धार खाता	4,11,922.00	
	साधारण खाता	1,15,100.79	
	आयम्बिल शाला	12,223.00	
	भोजनशाला खाता	69,220.00	
	भोजनशाला फोटो	15,300.00	
	भोजनशाला ब्याज	1,13,609.51	
	चातुर्मास	15,902.00	
	जीवदया	22,871.00	
	वेय्यावच्च	151.00	
	अन्यान्य/ज्ञान	885.00	
	श्री मणीभद्र जी भंडार खाता	51,987.10	
	श्री शासन देवी जी	1,191.20	
	श्री गुरुदेव जी	584.10	
22,097.85	श्री जनता कॉलोनी मंदिर जी		30,169.50
	भंडार भेंट व गोलख खाता	21,983.25	
	श्री मणीभद्र भंडार	3,947.10	
	श्री पद्मावती माताजी भंडार	2,850.15	
	साधारण भेंट	1,389.00	
1,848.85	श्री चन्दलाई मंदिर जी		7,014.00
	भेंट गोलख	6,712.00	
	साधारण	302.00	

गत वर्ष की रकम	आय		इस वर्ष की रकम
4,21,132.96	**श्री साधारण खाता**		5,03,545.58
	साधारण भेंट	2,79,126.25	
	साधर्मिक वात्सल्य	94,936.00	
	माणिभद्र प्रकाशन	75,350.00	
	ब्याज	28,423.33	
	किराया	25,500.00	
	आवेदन शुल्क	105.00	
	सदस्यता शुल्क	105.00	
5,929.00	**श्री वैय्यावच्च खाता**		5,376.25
29,680.05	**श्री साधर्मी सेवा कोष खाता**		18,950.00
72,114.55	**श्री जीवदया खाता**		33,612.00
1,94,157.00	**श्री भोजनशाला खाता**		1,95,738.75
36,880.92	**श्री आयम्बिल शाला खाता**		25,241.65
	भेंट खाता	1,506.00	
	ब्याज खाता	23,735.65	
	दुकान बिक्री खाता		5,00,000.00
1,29,945.64	**श्री ज्ञान खाता**		94,484.87
	भेंट खाता	67,322.25	
	ब्याज खाता	27,162.62	
8,43,538.00	**श्री विजयानंद विहार खाता**		1,75,051.00
7,358.40	**श्री गुरुदेव खाता**		1,690.35
1,125.15	**श्री सात क्षेत्र खाता**		51.00
17,505.35	श्री शासनदेवी खाता		6,358.90
8,24,600.14	शुद्ध हानि सामान्य कोष से स्थानान्तरित		-
68,16,587.39	योग :		44,32,819.51

(दानसिंह करनावट)
[illegible]

मान्य : [illegible], चार्टर्ड [illegible]
आर.के. [illegible]
पार्टनर

गत वर्ष की रकम	आय		इस वर्ष की रकम
4,21,132.96	**श्री साधारण खाता**		5,03,545.58
	साधारण भेंट	2,79,126.25	
	साधर्मिक वात्सल्य	94,936.00	
	माणिभद्र प्रकाशन	75,350.00	
	ब्याज	28,423.33	
	किराया	25,500.00	
	आवेदन शुल्क	105.00	
	सदस्यता शुल्क	105.00	
5,929.00	**श्री वैय्यावच्च खाता**		5,376.25
29,680.05	**श्री साधर्मी सेवा कोष खाता**		18,950.00
72,114.55	**श्री जीवदया खाता**		33,612.00
1,94,157.00	**श्री भोजनशाला खाता**		1,95,738.75
36,880.92	**श्री आयम्बिल शाला खाता**		25,241.65
	भेंट खाता	1,506.00	
	ब्याज खाता	23,735.65	
	दुकान बिक्री खाता		5,00,000.00
1,29,945.64	**श्री ज्ञान खाता**		94,484.87
	भेंट खाता	67,322.25	
	व्याज खाता	27,162.62	
8,43,538.00	**श्री विजयानंद विहार खाता**		1,75,051.00
7,358.40	**श्री गुरुदेव खाता**		1,690.35
1,125.15	**श्री सात क्षेत्र खाता**		51.00
17,505.35	श्री शासनदेवी खाता		6,358.90
8,24,600.14	शुद्ध हानि सामान्य कोष से स्थानान्तरित		-
68,16,587.39	योग :		44,32,819.51

(दानसिंह करनावट)

आर.के. सतर

पार्टनर

विज्ञापन दाताओं के प्रति हार्दिक आभार

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ (रजि.), जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

फोन : 563260/569494

विज्ञापन दाताओं के प्रति हार्दिक आभार

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ (रजि.), जयपुर

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

फोन : 563260/569494

Rajesh Motors Group

Dealer of Maruti Udyog Ltd.

• Shworoom - Tel. No. 365881, 365772

• Sudarshanpura, Workshop - 216234, 216229

• Transport Nagar - Sales & Workshop
Tel. No. 642352, 640197, 640198

✦

Dealer of Ashok Leyland & EJCB

• Sales - Transport Nagar, Tel. 641078, 640767

Workshop - Goner Road - Agra Road, Jaipur

Tel. : 680724, 680256, 680338

Branches & Phones

• Kota - Tel. : 360758, 451325 Alwar- Tel. : 363139, 372655

Udaipur - 440609, 440263 Jodhpur - 625124, 642148

Jhunjhunu - 38477, Ajmer - 441950

✦

Stone crushing plant

Gotan Minerals Pvt. Ltd.

Behind Kukas Industrial Area, Tel. : 951426-47311/2, 640767, 641079

Coach Buildingnit

Rajesh Coach Builders

Paladi Meena, Main Agra Road, Jaipur, Tel. No. : 680510

✦

Road & Bridge Constructions Co.

Sharvik Constructions Pvt. Ltd.

Transport Nagar, Agra Road, Jaipur Ph. : 642350, 642511

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

पण्डित लल्लू प्रसाद शर्मा [पृथ्वीपुरा वाले]

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त

जैन वैष्णव मूर्ति शिल्पकार

ऑफिस/निवास : गिरजा सदन, चौथा चौराहा, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर

शोरुम : पालडी हाऊस, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर

फोन : (ऑ/नि) 317585, (शोरूम) 321441

जाने को सब ही जाते हैं, रुकता कोई कभी नहीं
पर गुरुवर अर्ज यही थी, अभी नहीं बस अभी नहीं

वीर शासन में सदा जयवन्त तपागच्छ के तपस्वी, तेजस्वी, यशस्वी आचार्यों की गौरवशाली परम्परा में इस वर्ष स्वर्गस्थ हुए गच्छाधिपति आचार्य भगवन्तः

चारित्र चूड़ामणि श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरीश्वर महाराजा
जिनाज्ञानिष्ठ श्रीमद् विजय महोदय सूरीश्वर महाराजा
अध्यात्म योगी श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वर महाराजा

सूरित्रय को कोटिशः वन्दनाञ्जलि।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

आर.एस. शर्मा

गोपी दूध भंडार

179, घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

जयपुर का सुप्रसिद्ध मिश्री मावा, कलाकन्द, रसगुल्ला, मलाई की बर्फी, गलेप पेठा, रबडी वगैरह हर समय ताजा व तैयार मिलते हैं।

निवास :
प्लाट नं. 217, दादू मार्ग,
हरियाणा कॉलोनी,
टोंक फाटक, जयपुर

फोन :
(ऑ.) 560629
(नि.) 590512

नोट : गुलाबजामुन रबडी मालपुआ बिदाम की कतली व पिस्ता लॉज आर्डर से तैयार की जाती है
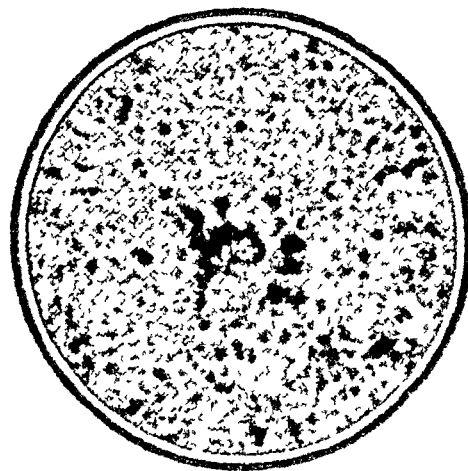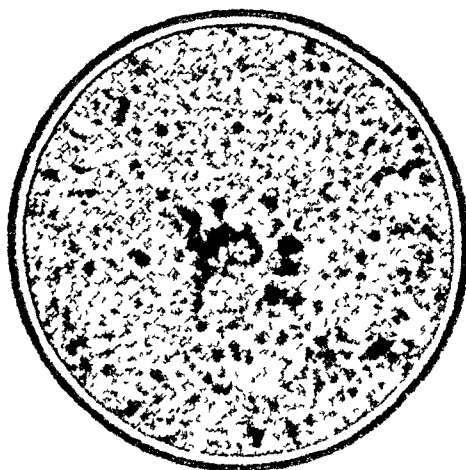
With Best Compliments From :
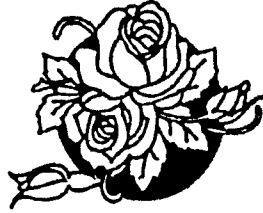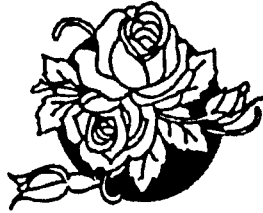
Siddharth Pareek

Shreejee

(A house of wooden furniture)

299, Khuteton Ka Rasta, Kishanpole Bazar, Jaipur-1

Manufacturers and order suppliers of quality wooden furniture such as :

- ✤ Designer Tharesholds (Chaukats)
- ✤ Designers Doors/Windows
- ✤ Office Furniture
- ✤ School Furniture
- ✤ Home Furniture

We also undertake all types of repairing jobs such as sofa, dining, beds door clousers fittings etc.